



स्मारिका

राजत जयंती विशेषांक

स्मारिका
2025-26

भातखण्डे ललितकला शिक्षा समिति द्वारा संचालित

गुरुकुल महिला महाविद्यालय

कालीबाड़ी रोड, रायपुर (छ.ग.) फोन : 0771-4053443

Email: info@gurukulraipur.com

Website : www.gmm.ac.in



स्व. डॉ. अरूण कुमार सेन

संस्थापक अध्यक्ष

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, भारतीय संगीत के प्रति पूर्ण समर्पित, तपस्वी साधक एवं अंचल के उज्ज्वल नक्षत्र स्व. डॉ. अरूण कुमार सेन अपनी अद्भुत बुद्धिमता, अथक परिश्रम, अविचल कर्तव्यनिष्ठा एवं स्वभावगत मधुरता के लिए एक अनुकरणीय आदर्श थे। उनके कृतित्व की स्मृति अद्यपर्यन्त चिरस्थायी है। वे एक महान संगीतज्ञ, ख्यातिलब्ध शिक्षाविद, समाजसेवी, नारी शिक्षा के प्रति सदैव समर्पित तथा नाट्य, नृत्य एवं अन्य ललितकलाओं के विकास के लिए सदैव तत्पर रहे। 'कर्म ही पूजा है' सह सूक्ति आजीवन उनकी युक्ति बनी रही।

प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मानसिक संतुलन न खोना, व्यवहार में सामान्यता बनाये रखना उनकी चारित्रिक विशेषता रही। भारतीय संस्कृति, साहित्य, कला को समृद्ध करने तथा सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के उदान्त भावों का विन्यास करने में छत्तीसगढ़ का अवदान ऐतिहासिक और विशिष्ट ही नहीं वरन् उनके लिए मूल्यवान रहा। संगीत और साहित्य में प्रतिभा संपन्न होने के साथ ही, विभिन्न लोकविधाओं में आपकी प्रतिभा मुखर हुई हैं। यही सुजन आपकी अप्रतिम विद्वता, चिंताशीलन और सौन्दर्यवेदित्व की सशक्त अभिव्यंजना बनी। सुगंध, चंदन का स्वाभाविक गुण है। यत्र-तत्र रखने पर भी वह न केवल स्वयं महकता है, वरन् संपूर्ण वातावरण में भी अपनी सुगंध बिखरा देता है। चंदन सा महकता व्यक्तित्व पाया था, डॉ अरूण कुमार सेन ने आज भी खुशबू अपने यशस्वी भाव से आपके होने का एहसास निरंतर कर रहा है।



विष्णु देव साय

मुख्यमंत्री

Vishnu Deo Sai
CHIEF MINISTER



मंत्रालय, महानदी भवन, नवा रायपुर
अटल नगर, रायपुर, 492002, छत्तीसगढ़
फोन: +91 (771) 2221000, 2221001

Mantralaya, Mahanadi Bhawan,
New Raipur Atal Nagar,
Raipur, 492002, Chhattisgarh
Ph.: +91 (771) 2221000, 2221001

Do. No. 2541 Date 16-11-2025

संदेश



मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि भातखण्डे ललित कला शिक्षा समिति द्वारा संचालित गुरुकुल महिला महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका "अरुणिता" का प्रकाशन सत्र 2025-26 के लिए किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल छात्राओं की रचनात्मकता और बौद्धिक क्षमता को अभिव्यक्त करने का माध्यम है, बल्कि यह संस्थान के सांस्कृतिक, शैक्षणिक और सामाजिक वातावरण का सजीव दस्तावेज भी है।

महिला शिक्षा समाज की प्रगति का सबसे सशक्त आधार है। जब युवा छात्राएँ अपने विचारों को सृजनात्मक रूप में व्यक्त करती हैं, तब वे केवल ज्ञान का प्रसार नहीं करतीं, बल्कि एक नए युग की चेतना को आकार देती हैं। 'अरुणिता' जैसी पत्रिकाएँ इस चेतना की वाहक बनकर छात्राओं में आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति और नेतृत्व की भावना का संचार करती हैं।

मुझे विश्वास है कि 'अरुणिता' महाविद्यालय की प्रतिभाशाली छात्राओं के विचारों और कल्पनाओं को समाज के सामने प्रस्तुत करने में सेतु का कार्य करेगी। मैं इस अवसर पर सम्पादक मण्डल, संकाय सदस्यों एवं सभी छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ कि यह अंक नारी शक्ति की उज्ज्वल प्रतिभा का प्रतीक बने और अपने उद्देश्य में पूर्णतः सफल हो।

(विष्णु देव साय)



टंक राम वर्मा
TANK RAM VERMA



मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
राजस्व एवं आपदा प्रबंधन,
पुनर्वास, उच्च शिक्षा विभाग
Minister of
Revenue and Disaster Management,
Rehabilitation, Higher Education Department
Govt. of Chhattisgarh

अद्वैशास. पत्र क्र.२५८...../२०२५

दिनांक.....२६/११/२५



:- शुभकामना संदेश :-

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि गुरुकुल महिला महाविद्यालय, रायपुर जिला—रायपुर (छ.ग.) की वार्षिक पत्रिका “अरूणिता” का प्रकाशन किया जा रहा है। निरन्तर पत्रिकाओं का प्रकाशन विद्यार्थियों में लेखन एवं पठन—पाठन के प्रति रुचि को बढ़ाता है।

यह पत्रिका छात्र/छात्राओं की सांस्कृतिक, साहित्य रुचियों की अभिव्यक्ति के लिए एक सशक्त माध्यम के रूप में विकसित होगा। विद्यालय में पत्रिका का प्रकाशन स्वागत योग्य कदम है।

“अरूणिता” के प्रकाशन से विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता में वृद्धि होगी एवं इसके माध्यम से ज्ञान—अर्जन, साहित्य रुचि एवं सकारात्मक विचारों से छात्र/छात्राएँ लाभान्वित होंगे।

वार्षिक पत्रिका “अरूणिता” के प्रकाशन की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ।

मंगलकामनाएँ ...


(टंक राम वर्मा)



पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर (छत्तीसगढ़) - 492010 भारत



NAAC Grade A+

Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur (Chhattisgarh) - 492010 - INDIA
Office : +91 771-2262857, +91 771-2263439
E-mail : vc_raipur@prsu.ac.in
Website : www.prssu.ac.in

रायपुर, दिनांक 17 नवंबर, 2025

शुभकामना



हार्दिक प्रसन्नता का विषय है कि गुरुकुल महिला महाविद्यालय, रायपुर द्वारा महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका 'अर्लणिता' सत्र 2025-26 का प्रकाशन किया जा रहा है।

उच्च शिक्षण संस्थान छात्र-छात्राओं को उत्कृष्ट एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ बौद्धिक एवं व्यक्तित्व विकास के सक्षम केन्द्र होते हैं। तकनीकी प्रयोग के साथ युवाओं की रचनात्मक ऊर्जा के विकास, सृजन-क्षमता के प्रदर्शन एवं उनकी अभिरुचि की अभिव्यक्ति के लिए महाविद्यालय सतत क्रियाशील रहे और उत्कृष्ट मानव संसाधन के विकास की भूमिका में महाविद्यालयीन पत्रिका अपनी सार्थकता को सिद्ध कर सके, ऐसी मेरी कामना है।

महाविद्यालयीन पत्रिका 'अर्लणिता' महाविद्यालय के शैक्षिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधियों के दर्पण के रूप में शिक्षकों एवं छात्रों को प्रेरित करने के अपने उद्देश्य में सफल सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित।

(प्रो. सचिवदानन्द शुक्ल)

कुलपति

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर



गुरुकुल महिला महाविद्यालय

छत्तीसगढ़ शासन तथा पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) से संबंधित

गुरुकुल परिसर, कालीबाड़ी रोड, रायपुर (छ.ग.)

फोन 0771 - 4053443, ईमेल info@gurukulraipur.com वेबसाईट www.gmm.ac.in



संचालित भातखण्डे ललितकला शिक्षा समिति, गांधी चौक, रायपुर (छ.ग.) पंजीयन क्र. 16 / 51-52

क्रमांक : 4544/25

दिनांक : 18.11.2015



अध्यक्षीय उद्बोधन

बच्चों को सिखाया जाना चाहिए कि कैसे सोचना है, ना कि क्या सोचना है। ..
मार्गरेट मीड

महाविद्यालयीन पत्रिका का प्रकाशन उक्त कथन को चरितार्थ करने के प्रयास में
एक दिशा है। अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि छात्राओं की साहित्यिक, सांस्कृतिक
कौशल, समग्र व्यक्तित्व विकास के सृजनशीलता के माध्यम के रूप में 'अरुणिता' का
प्रकाशन किया जा रहा है।

इस सराहनीय कार्य के लिए बहुत शुभकामनाओं सहित!


मेरल मोदी
अध्यक्ष, शासी निकाय



गुरुकुल महिला महाविद्यालय

छत्तीसगढ़ शासन तथा पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) से संबंधित

गुरुकुल परिसर, कालीबाड़ी रोड, रायपुर (छ.ग.)

फोन 0771 - 4053443, ईमेल info@gurukulraipur.com वेबसाईट www.gmm.ac.in

संचालित भातखण्डे ललितकला शिक्षा समिति, गांधी चौक, रायपुर (छ.ग.) पंजीयन क्र. 16 / 51-52

क्रमांक: ५४६/२५

दिनांक: 18.11.2025

अध्यक्षीय उद्बोधन



गुरुकुल महिला महाविद्यालय के रजत जयंती वर्ष 2025-26 में "अरुणिता" का प्रकाशन विशेष महत्व रखता है क्योंकि छात्राओं की बौद्धिक, रचनात्मक गतिविधियों तथा साहित्यिक अभिरुचियों को प्रदर्शित करने के सशक्त माध्यम के रूप में महाविद्यालयीन पत्रिका आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

शिक्षा का एक महत्वपूर्ण मापदंड छात्राओं में व्यक्तिगत कौशल का विकास एवं और रचनात्मकता, वैज्ञानिक सोच, आत्मविश्वास, समय प्रबंधन आदि का समावेश है। "अरुणिता" छात्राओं के संचार कौशल को तराशने के साथ-साथ उन्हें अपने लेखन और अभिव्यक्ति के प्रति जिम्मेदारी का अहसास दिलाने का माध्यम है।

महाविद्यालय को समृद्ध बनाने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रयास हेतु सभी संबंधितों को शुभकामना सहित!


अजय तिवारी
अध्यक्ष, शासी निकाय



(पंजीयन क्रमांक : 16/1951-52)



भारतखण्डे ललितकला शिक्षा समिति

गांधी चौक, रायपुर (छ.ग.) भारत
गुरुकुल परिसर, कालीबाड़ी चौक, रायपुर (छ.ग.) भारत
ईमेल : blssr1950@gmail.com

तरल मोदी

अध्यक्ष

मो. 9425206801

अचय तिवारी

उपाध्यक्ष

मो. 8770983152

श्रीमती शोभा खण्डेलवाल

सचिव

मो. 9827406385

क्रमांक : BLSSR/594/25

दिनांक : 21/11/25

सदस्यगण

श्री शेखर सेन
मो. 98200 73573

श्री उत्तमचंद जैन
मो. 94255 08010

श्री देवशीर राय
मो. 94252 08081

श्री आर. के. गुप्ता
मो. 94252 05248

श्री नरेशचन्द्र गुप्ता
मो. 94252 03002

श्रीमती श्वेता सेन
मो. 98205 67567

श्री शांतिलाल बरडिया
मो. 98271 27111

श्री एस.एन. भट्टाचार्य
मो. 91250 11605

डॉ. गोपाल जनस्वामी
मो. 94252 07715

श्री डी.के. घोष
मो. 98240 73757

श्रीमती पूजा दानी
मो. 94242 28979

श्रीमती मेघा मोदी
मो. 94252 06801

श्रीमती मंजू बरडिया

श्री अमित खेमका
मो. 97525 43700

सचिव की कलम से

महाविद्यालय स्थापना के 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर 'अरुणिता' का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। स्थापना काल से ही 'अरुणिता' का प्रकाशन छात्राओं की सृजनात्मकता एवं रचनात्मकता की अभिव्यक्ति को अवसर प्रदान करने का सतत सराहनीय प्रयास है।

स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि अधिकतर युवा सफल और अर्थपूर्ण जीवन जीना चाहते हैं लेकिन अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं होते हैं क्योंकि वो अपनी सकारात्मक ऊर्जा को सही दिशा में प्रयोग नहीं करते हैं। उनका कहना था कि शक्ति तुम्हारे अंदर है। कभी मत सोचों कि तुम कमज़ोर हो, उठो! जागो और तब तक प्रयास करों जब तक लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती। विवेकानन्द जी के इस कथन को आत्मसात कराने के उद्देश्य के साथ 'अरुणिता' के प्रकाशन के लिए महाविद्यालय परिवार को बधाई एवं शुभकामनाओं सहित !

शोभा खण्डेलवाल
सचिव

संचालित संस्थायें/प्रतिष्ठान

- कमला देवी संगीत महाविद्यालय, रायपुर
- गुरुकुल महिला महाविद्यालय, रायपुर
- गुरुकुल परिसर, कालीबाड़ी रोड, रायपुर
- डॉ. अरुण कुमार सेन स्मृति संगीत महाविद्यालय, रायपुर
- लक्ष्मीनारायण कन्या उ.मा. शाला, रायपुर
- भारतखण्डे संगीत संस्थान, मुम्बई व रायपुर
- अरुणोदय कन्या प्राथमिक शाला, रायपुर
- रंगमंदिर प्रेक्षागृह, गांधी चौक, रायपुर
- संगीतिका 'म्यूजिक सर्कल' रायपुर
- गुरुकुल प्रेक्षागृह, कालीबाड़ी रोड, रायपुर
- अरुण मंच, गुरुकुल परिसर, रायपुर



गुरुकुल महिला महाविद्यालय

छत्तीसगढ़ शासन तथा पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) से संबंधित

गुरुकुल परिसर, कालीबाड़ी रोड, रायपुर (छ.ग.)

फोन 0771 - 4053443, ईमेल info@gurukulraipur.com वेबसाईट www.gmm.ac.in



संचालित भातखण्डे ललितकला शिक्षा समिति, गांधी चौक, रायपुर (छ.ग.) पंजीयन क्र. 16 / 51-52

क्रमांक: ५५४५।२५

संदेश

दिनांक: १८. ११. २०२५



महाविद्यालय के रजत जयंती वर्ष में "अरुणिता" का प्रकाशन विगत 25 वर्षों से छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु कृत संकलिप्त महाविद्यालय के प्रयासों का प्रतिबिम्ब है। स्वच्छ भारत अभियान, ग्रीन कैम्पस-क्लीन कैम्पस, वृक्षारोपण, मतदाता जागरूकता, नो रैंगिंग, रक्तदान, स्वास्थ्य शिविर, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, शैक्षणिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगिता, एन.एस.एस., एन.सी.सी., प्लेसमेंट कैम्प आदि कार्यक्रमों का आयोजन जीवन को सफल बनाने के लिए आवश्यक गुणों को नैतिक मूल्यों के साथ समाहित कर छात्राओं में मनोगत करना है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को अच्छा मनुष्य के साथ-साथ विभिन्न कौशलों से परिपूर्ण सभ्य नागरिक बनाना है।

इन प्रयासों के साथ पत्रिका प्रकाशन के लिए शुभकामनाओं सहित!


नरेश गुप्ता
प्रबंधन समिति सदस्य
शासी निकाय



गुरुकुल महिला महाविद्यालय

छत्तीसगढ़ शासन तथा पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) से संबंध

गुरुकुल परिसर, कालीबाड़ी रोड, रायपुर (छ.ग.)

फोन 0771 - 4053443, ईमेल info@gurukulraipur.com वेबसाईट www.gmm.ac.in

संचालित भातखण्डे ललितकला शिक्षा समिति, गांधी चौक, रायपुर (छ.ग.) पंजीयन क्र. 16 / 51-52

क्रमांक : 4548/25

दिनांक : 18.11.2025

प्राचार्य की कलम से



महाविद्यालय के रजत जयंती वर्ष की पत्रिका "अरुणिता" का यह अंक हमारी विविधता, प्रतिभा और उत्साह का प्रतिबिंब है। दूसरे शब्दों में महाविद्यालय के सभी प्रयासों का एक छोटा सा दस्तावेज है।

वर्तमान समय में शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं रह गया है, अपितु यह एक ऐसा मंच बन गया है जहाँ विचारों का आदान-प्रदान, नवाचार और सामाजिक उत्तरदायित्वों को पोषित किया जाता है। महाविद्यालय एक ऐसा मंच है जिसका उपयोग छात्रायें नया कौशल सीखनें और भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार होने के लिए कर सकते हैं।

महाविद्यालय परिवार के अथक सहयोग के बिना कोई भी कार्य संभव नहीं होता है। उनका मार्गदर्शन और समर्पण निरंतर प्रगति की ओर ले जाता है। साथ ही अभिभावकों का भी आभार है जिनका विश्वास और समर्थन हमारी प्रत्येक सफलता की नींव है।

आँखों में सपने और हाथों में कड़ी मेहनत लेकर आगे बढ़ते रहिए। आशा है कि यह अंक आपके लिए प्रेरणास्त्रोत बनेगा और हम सब मिलकर उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर होंगे।

सपनों की राहों पर कदम बढ़ाते रहों
हर मोड़ पर मिलें खुशियों की रौशनी।
आँखों में चमके जो आशा का सूरज
वो ही हो तुम्हारा एक नया सफर।।

शुभकामनाओं सहित!

डॉ. संघा गुप्ता
प्राचार्य



FROM CLASSROOMS TO CORRIDORS OF POWER: A SILVER JUBILEE CELEBRATION

"The question isn't who is going to let me; it's who is going to stop me." - Ayn Rand

Twenty-five years ago, Gurukul Mahila Mahavidyalaya opened its doors with a singular vision : to nurture girls who would not just succeed in life, but reshape the world around them. Today as we celebrate this remarkable silver jubilee, we stand witness to what that vision has become. It is not just a college. It is a sanctuary where girls have learned that their voices matter, their dreams are valid and their potential is limitless.

Walking through the corridors of Gurukul Mahila Mahavidyalaya, one gets to see the legacy of a quarter century etched in the achievement of every alumna. These girls are scattered across diverse fields and geographies, each carving out their own path. What truly unites them is not where they work or what title they hold, but the conviction they carry : that education is their birthright and excellence is their responsibility. But the true measure of Gurukul Mahila Mahavidyalaya's success goes beyond career achievements. They are proving that a woman's worth is not defined by others' expectations, but by her own aspirations and actions.

What makes these 25 years special is not just what this college has given to the world, but what it has given to itself: a family of girls, now responsible women who refuse to be ordinary. Women who understand that their education is a gift meant to be shared and their success is a platform meant to uplift others. The journey of Gurukul Mahila Mahavidyalaya is far from over. If the last 25 Years has taught us anything, it is this : when you give girls the space to dream and the tools to achieve, there is no limit to what they can become.

I am deeply grateful to our esteemed Principal, Dr. Sandhya Gupta, and the Management of Gurukul Mahila Mahavidyalaya for entrusting me with this opportunity to share my reflections and contribute to our institution's momentous celebration of the Silver Jubilee year. It is indeed my honor to be a part of this significant milestone in our college's journey.

"A woman is the full circle. Within her is the power to create, nature, transform and heal. A woman is not seeking to be equal to men; she is seeking to be equal to herself." - Diane Wolkstein

Dr. Simrann Rajesh Vermaa
Assistant Professor - English



गौरवशाली पच्चीश वर्ष और भविष्य की ओर एक ड्राइ...

प्रिय पाठकों,

हमारे महाविद्यालय की गौरवमयी 25 वर्षीय यात्रा आज रजत जयंती के रूप में हमारे सामने खड़ी है- अनुभवों, उपलब्धियों और अनगिनत यादों से सजी एक प्रेरणादायी दास्तान। इस अवसर पर प्रस्तुत यह विशेषांक न केवल संस्थान की प्रगति का दस्तावेज है, बल्कि उन सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों, कर्मचारियों और सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता का विनम्र अभिव्यक्त भी है, जिन्होंने इसे नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में अपना योगदान दिया।

पिछले ढाई दशकों में हमारा महाविद्यालय ज्ञान, शोध, नवाचार और सामाजिक सरोकारों का केंद्र बनकर उभरा है। शिक्षण की गुणवत्ता, अनुशासन, सांस्कृतिक सक्रियता और विभिन्न क्षेत्रों में विद्यार्थियों की उल्लेखनीय सफलताओं ने संस्थान की पहचान को सुदृढ़ बनाया है। इन वर्षों में हमने समय के साथ कदम मिलाकर नयी चुनौतियों को अवसरों में बदला है- चाहे वह शिक्षण पद्धतियों में नवाचार हो, तकनीकी सुविधाओं का विस्तार हो या फिर मूल्याधारित शिक्षा को नए सिरे से परिभाषित करने की प्रक्रिया।

यह विशेषांक महाविद्यालय की यात्रा के विभिन्न पड़ावों को समेटते हुए अतीत की समृतियों, वर्तमान की उपलब्धियों और भविष्य के सपनों को एक साथ प्रस्तुत करता है। इसमें संकलित लेख, कविताएँ, संस्मरण और रिपोर्टें न केवल रचनात्मकता का परिचय देती हैं, बल्कि यह भी बताती हैं कि हमारी संस्था किस प्रकार अनेक दृष्टिकोणों और अनुभवों का संगम है।

हम आशा करते हैं कि यह अंक पाठकों को प्रेरित करेगा, सोचने पर विवश करेगा और उन्हें संस्था की निरंतर बढ़ती संभावनाओं के प्रति आश्वस्त भी करेगा। रजत जयंती हमें यह याद दिलाती है कि सफलता की राह कभी अकेले तय नहीं होती- यह सामूहिम प्रयास, समर्पण और आदर्शों के प्रति अटूट विश्वास का परिणाम होती है।

हम आभार व्यक्त करते हैं प्राचार्य डॉ संध्या गुप्ता जी का जिनके मार्गदर्शन से यह प्रयास संभव हो सका, उन सभी लेखकों, संपादकों, विद्यार्थियों और सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हैं जिनके परिश्रम से यह विशेषांक प्रकाशित हो सका। आने वाले वर्षों में महाविद्यालय और भी ऊँचाइयाँ छुए, इन्हीं शुभकामना के साथ, प्रतीक्षा है आपके सुझावों का जिससे हम “अरुणिता” को और भी सँवार सकें।

डॉ. सीमा चंद्राकर
सहायक प्राध्यापक, (हिंदी)
गरुकुल महिला महाविद्यालय रायपुर छ.ग.

वाणिज्य विभाग



महाविद्यालय का वाणिज्य विभाग न केवल शैक्षणिक दृष्टिकोण से, बल्कि छात्राओं के व्यक्तित्व और कौशल विकास में भी अग्रणी भूमिका निभा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विभाग का प्रमुख ध्यान छात्राओं की शैक्षणिक गुणवत्ता में वृद्धि, व्यवहारिक ज्ञान का विस्तार और व्यावसायिक कौशल के विकास पर केन्द्रित है। नियमित कक्षाओं के साथ-साथ विभाग द्वारा व्यावहारिक कौशल आधारित शिक्षण, प्रायोगिक गतिविधियां और समसामयिक विषयों पर गोष्ठी, कार्यशाला आदि का आयोजन किया जाता है, जिसने छात्राओं को वाणिज्य क्षेत्र की बदलती परिस्थितियों और उद्यमिता की नई सम्भावनाओं को समझने का अवसर मिलता है।

शैक्षणिक परिणामों के स्तर पर विभाग का प्रदर्शन संतोषजनक रहा। महाविद्यालयीन छात्राओं ने विश्वविद्यालय परीक्षाओं में उत्कृष्ट अंक प्राप्त किये। संकाय प्राध्यापकों ने भी शिक्षण पद्धति में नवाचार अपनाते हुए तकनीक आधारित शिक्षण, ई-कॉन्टेंट और प्रस्तुतीकरण कौशल का उपयोग किया, जिससे छात्राओं की सीखने की प्रक्रिया और अधिक प्रभावी बनी।

प्रोजेक्ट कार्य, असाइनमेंट, आंतरिक मूल्यांकन, सेमेस्टर परीक्षायें और रेसिडियल क्लासेस एवं मेंटरिंग आदि के माध्यम से शैक्षणिक गुणवत्ता का मूल्यांकन किया जाता है। परिणामस्वरूप महाविद्यालय की छात्रायें विश्वविद्यालय के प्रावीण्यता सूची में अपना स्थान बनाते हैं।

विभाग न केवल शैक्षणिक परिणामों में सुधार के लिए प्रतिबद्ध है, बल्कि सह-शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से छात्राओं को व्यावसायिक दुनिया के लिए तैयार कर रहा है।

रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में अनेक सह-शैक्षणिक गतिविधियाँ जैसे व्यापार मेला, विविध कला मेला, बिजनेस मॉडल आदि के माध्यम से उद्यमिता कौशल को सिखाने का प्रयास किया गया। शैक्षणिक भ्रमण, कैरियर गाइडेस एवं प्लेसमेंट आदि विधाओं के द्वारा छात्राओं को सम-सामयिक वाणिज्यिक जानकारी दिया जाता है। छात्राओं के नेतृत्व कौशल के विकास के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है, जिससे उनमें टीम-भावना, निर्णय क्षमता और संचार कौशल का विकास हो सके। विभाग के सहयोगात्मक प्रेरणादायक और सकारात्मक वातावरण से छात्रायें विभिन्न क्षेत्रों जैसे खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम और प्रशिक्षण टेली/लेखांकन में भी उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हैं।

विभाग के प्राध्यापकों ने निरंतर शोध और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से शैक्षणिक उत्कृष्टता को बढ़ाया है, जो छात्राओं के लिए मार्गदर्शन और प्रेरणा का स्रोत रहे हैं।

स्थापना काल से वर्तमान तक का सफर उपलब्धियों और प्रगति का रहा। छात्राओं ने विकास के क्षेत्र में अपने लक्ष्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करते हुए नई ऊंचाइयों की ओर महत्वपूर्ण कदम बढ़ाए।

महाविद्यालय का वाणिज्य संकाय वर्ष 2025-26 में अपने रजत जयंती वर्ष में प्रवेश किया। निरंतर प्रगति, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शैक्षणिक वातावरण का प्रमाण है कि पिछले 25 वर्षों में वाणिज्य संकाय के छात्रायें सरकारी एवं निजी संस्थानों में अपनी सेवायें प्रदान कर रही हैं।

यह यात्रा न केवल वाणिज्य विभाग की सफलता की गाथा है, बल्कि एक नई सोच और उमंग के साथ, छात्राओं के भविष्य को संवारने का प्रतिबद्ध प्रयास है। रजत जयंती वर्ष महाविद्यालय की उस सतत यात्रा का प्रतीक है जिसमें अनुशासन गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नवाचार और सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश रहा है।

पच्चीस वर्षों का यह गौरवमय सफर संकल्प, समर्पण और श्रेष्ठता की मिसाल है।

गुरुकुल महिला महाविद्यालय का वाणिज्य संकाय आज भी छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य का आधार है।।

डॉ. राजेश अग्रवाल
संकायाध्यक्ष (वाणिज्य)

विज्ञान और विकास



गुरुकुल महिला महाविद्यालय में ज्ञान और नवाचार का केंद्र हमारा विज्ञान विभाग महाविद्यालय की स्थापना के साथ ही, वर्ष 2001 से, ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्विलित कर रहा है। उत्कृष्टता के अपने सफर में, यह विभाग निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। विज्ञान संकाय के अंतर्गत जीव विज्ञान, गणित एवं कम्प्यूटर विषयों में स्नातक स्तर तक की कक्षायें स्थापना काल से संचालित हैं। अत्यंत हर्ष का विषय है कि रजत जयंती वर्ष में माइक्रोबॉयलॉजी विषय की संबद्धता प्राप्ति के साथ इस विषय का अध्यापन भी महाविद्यालय में होगा।

उच्च शिक्षित शिक्षक एवं विज्ञान विषय हेतु आवश्यक सुविधायें विज्ञान संकाय के छात्राओं के गुणवत्ता एवं प्रायोगिक ज्ञान में लगातार वृद्धि हेतु प्रयासरत है।

छात्राओं को विज्ञान विषयों के व्यवहारिक ज्ञान हेतु सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक कक्षाओं के साथ-साथ अनेक व्यवहारिक गतिविधियाँ जैसे विज्ञान मेला, सेमीनार, कार्यशाला, संगोष्ठी, किंवज, पावरपांडिट प्रेजेंटेंशन, पोस्टर प्रेजेंटेंशन, शैक्षणिक भ्रमण आदि का आयोजन समय-समय पर किया जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप सतत आंतरिक मूल्यांकन असाइनमेंट, प्री-युनिवर्सिटी एक्जाम आदि द्वारा मूल्यांकन किया जाता है।

उद्यमिता कौशल विकास हेतु प्रतिवर्ष विज्ञान संकाय की छात्राओं हेतु पाठ्यक्रम के अनुसार कार्यशाला का आयोजन किया जाता है जिसमें छात्राओं को बहुत ही कम मूल्य पर रोजमर्रा की आवश्यक वस्तुयें बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

सन 2001 में 08 छात्राओं के साथ प्रारंभ किये गये विज्ञान संकाय में प्रतिवर्ष प्रवेश संख्या में वृद्धि उत्तरोत्तर विकास का परिचायक है।

उत्तम परीक्षा परिणाम प्राप्त्यापकों एवं कर्मचारियों के निष्ठा एवं लगन को परिलक्षित करते हुए यह विभाग सिद्धांत और प्रयोग के बीच समन्वय स्थापित करते हुए, अपने छात्रों को भविष्य के लिए सक्षम और नवाचारी वैज्ञानिक बनाने हेतु प्रतिबद्ध है।

डॉ. वंदना अग्रवाल
संकायाध्यक्ष (विज्ञान)

DEPARTMENT OF COMPUTER SCIENCE

Celebrating 25 Glorious Years of Excellence



As our esteemed institution commemorates **25 glorious years**, the **Department of Computer Science** proudly reflects on its journey of innovation, skill development, and commitment to excellence.

About the Department

The Department of Computer Science was established with the vision of delivering quality education in computer applications, digital technologies, and interdisciplinary computing. Over the years, the department has grown into a center of academic strength, offering a learner-friendly environment that blends theoretical foundation with practical exposure.

Faculty Excellence

The department is enriched with a team of highly qualified, dedicated, and experienced faculty members. Currently serving:

- **Dr. Amita Telang** – *Head of Department (HOD)*
- **Dr. Deepshikha Sharma**-Asst. Prof.
- **Mrs. Priyanka Tiwari**- Asst. Prof.
- **Miss Anshika Dubey**-Asst. Prof.
- **Mr. Vaibhav Singh Thakur** -Lab Technician

They not only impart theoretical knowledge but also mentor students through hands-on learning, research activities, career guidance, and project-based teaching. Their continuous involvement in academic development programs and ICT-based teaching methods strengthens the learning environment.

Academic Excellence and Results

The Department of Computer Science consistently maintains an excellent academic track record.

- Students have shown **outstanding performance in university examinations**, securing top positions at the college and University level.
- The overall department result has been **above 90% every year**, reflecting strong teaching standards and student discipline.
- Many students achieve **distinction and first division**, particularly in programming, operating systems, and database-related subjects.

Continuous internal assessments, practical exposure, and personalized academic support contribute to this consistent academic excellence.

Modern Laboratories & Infrastructure



The department is equipped with advanced computing facilities, including:

- State-of-the-art computer labs with **updated hardware and licensed software**
- High-speed internet and Wi Fi facility.
- Smart classrooms with LCD projectors
- Practical setups for programming, DBMS, networking, multimedia, and web development
- Hands-on exposure to **Linux, Windows, and various development environments**

Regular maintenance and timely upgradation ensure that our students always learn with the latest tools and technologies.

Seminars, Workshops, and Training Programs

To enhance learning beyond the classroom, the department organizes a wide range of academic and skill-building activities:

Technical Workshops

- Artificial Intelligence and Machine Learning
- Python Programming
- Cyber Security and Ethical Hacking
- MS Office Tools for professional efficiency
- Web Designing and App Development

Seminars & Guest Lectures

Renowned industry experts, university/College professors, and technology practitioners regularly interact with students on topics such as emerging technologies, digital safety, research trends, and career development.

Training & Certification Programs

- TALLY ERP
- Basic computer literacy programs
- Hardware Training Program.
- Employability and soft skills training.
- Online internships and virtual technical bootcamps

These programs build student confidence and industry readiness.

Student Activities and Department Initiatives

- Interclass and Intercollege competition participation.
- Youth festival Participation.



- Technical quiz competitions.
- PPT presentation contests.
- Cyber Awareness
- Job Placement Camp.

Students often win awards and recognition for their creativity, innovation, and teamwork.

Alumni Achievements

The alumni of the Computer Science Department have made remarkable progress in various fields. Many are successfully placed in:

- IT companies as software developers, web designers, database managers, and support engineers
- Government sectors in technical and administrative roles
- Banking and finance institutions as IT assistants and system operators
- Educational institutions as teachers and computer instructors

Several alumni have pursued **higher studies**, completing MCA, MBA, B.Ed., and other professional certifications.

Their achievements inspire current students and strengthen the department's legacy.

Looking Ahead

With a strong foundation and a vision for future growth, the Department of Computer Science remains committed to nurturing ethical, skilled, and innovative professionals. As we move forward, our commitment remains strong—to shape competent, confident, and compassionate professionals who contribute meaningfully to society.

Dr. Amita Telang
HOD, Computer

ज्ञानार्थन में महाविद्यालयीन पुस्तकालय और राष्ट्रीय शिक्षा नीति



महाविद्यालयीन पुस्तकालय को अक्सर उच्च शिक्षा की रीढ़ माना जाता है। यह सिर्फ किताबों को रखने की जगह नहीं है यह सीखने, अनुसंधान और आलोचनात्मक सोच का एक केंद्र है। कॉलेज में अकादमिक सफलता और व्यक्तिगत विकास के लिए इसके संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करना महत्वपूर्ण है। पुस्तकालय पाठ्यपुस्तकों, संदर्भ पुस्तकों, पत्रिकाओं और अन्य शैक्षिक सामग्रियों का एक विशाल भंडार प्रदान करता है जो कक्षा में पढ़ाई गई बातों को गहराई से समझने में मदद करता है। पुस्तकालय छात्रों को आवश्यक शोध कौशल विकसित करने में मदद करता है। यहां छात्र जानकारी का विश्लेषण करना, विश्वसनीय स्रोतों का मूल्यांकन करना और प्रभावी ढंग से डेटा संकलित करना सीखते हैं।

पुस्तकालय एक शांत और शांतिपूर्ण वातावरण प्रदान करता है, जो छात्रों को बेहतर ध्यान केंद्रित करने और स्वाध्याय (स्व-अध्ययन) की आदत विकसित करने में मदद करता है। यह नियमित पाठ्यक्रम से परे विभिन्न विषयों और क्षेत्रों के संसाधनों तक पहुंच प्रदान करके छात्रों के ज्ञान के क्षितिज को व्यापक बनाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में एक व्यापक परिवर्तन की परिकल्पना करती है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच प्रदान करना और भारत को एक जीवंत ज्ञान-आधारित समाज में बदलना है। इस परिवर्तन में पुस्तकालयों की भूमिका पारंपरिक किताबों के संग्रह से कहीं आगे बढ़कर ज्ञान, अनुसंधान और डिजिटल सीखने के सक्रिय केंद्र के रूप में बदल रही है। आधुनिक पुस्तकालय ई-बुक्स, ऑनलाइन डेटाबेस, इंटरनेट एक्सेस और अन्य डिजिटल संसाधनों तक पहुंच प्रदान करते हैं, जो आज के तकनीकी-संचालित दुनिया में महत्वपूर्ण हैं। यदि आपको कोई किताब या जानकारी खोजने में मदद चाहिए, तो पुस्तकालय कर्मचारी (लाइब्रेरियन) हमेशा सहायता के लिए उपलब्ध होते हैं। NEP 2020 शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग पर जोर देती है, केवल भौतिक पुस्तकों पर ध्यान केंद्रित न करें ऑनलाइन डेटाबेस, शोध पत्रों और ई-संसाधनों का भी उपयोग करें। पुस्तकालय सभी के उपयोग के लिए है। शांति बनाए रखें और नियमों का पालन करें ताकि सभी को अध्ययन के लिए उचित वातावरण मिल सके। कई पुस्तकालयों में समूह अध्ययन के लिए अलग से कमरे होते हैं, जिनका उपयोग आप अपने सहपाठियों के साथ चर्चा और परियोजनाओं पर काम करने के लिए कर सकते हैं। महाविद्यालयीन पुस्तकालय आपकी शैक्षणिक यात्रा में एक अमूल्य सहयोगी है। इसके संसाधनों का सक्रिय रूप से उपयोग करके, छात्र अपने सीखने के अनुभव को समृद्ध कर सकते हैं, महत्वपूर्ण कौशल हासिल कर सकते हैं और अकादमिक सफलता प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तकालय की सुविधाओं का लाभ उठाएँ और ज्ञान के इस पावरहाउस का पूरा उपयोग करें। NEP में बहु-विषयक और अंतःविषयक (Interdisciplinary) विषयों पर जोर दिया गया है। ग्रंथपाल विभिन्न विषयों के बीच ज्ञान के आदान-प्रदान को सुविधाजनक बनाने और अनुसंधान प्रयासों में सहयोग करने के लिए एक मंच प्रदान करेंगे।

गुरुकुल महिला महाविद्यालय द्वारा सन् 2001 में स्थापित डॉ अरुण कुमार स्मृति ग्रंथागार शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने एवं नवपरिवर्तनशील सुचना एवं सेवाओं को प्रदान करने के उद्देश्य से कार्यरत हैं। शिक्षा की

उज्जवलता हेतु यहा छात्राओं के लिए अधिकतम सेवायें दी जाती है। छात्राओं के बौद्धिक विकास के लिए एवं शिक्षकों की रचनात्मक एवं सृजनात्मक कार्यों को प्रेरित करने के लिए यहाँ विषयानुसार पाठ्य पुस्तकें, संन्दर्भ पुस्तकें, कहानी संग्रह, शब्दकोश, ज्ञानकोश आदि स्त्रोत छात्रों की आवश्यकता की पूर्ति एवं शिक्षकों के अनुभव के अनुसार चयनित कर उपलब्ध करायी जाती है। नवीनतम सूचनाओं एवं ज्ञान की जिज्ञासाओं को शांत करने तथा उपयोगकर्ताओं को अद्यतन रखने के लिए ग्रंथालय में समाचार पत्र, शोध पत्रिकायें, समसामयिकी पत्रिकायें उपलब्ध करायी जाती है। छात्राओं की परीक्षा की तैयारी के लिए पिछले वर्षों के प्रश्न पत्र, अनुभवी शिक्षकों के द्वारा बनायें गये प्रश्न बैंक, प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित पाठ्य सामग्री उपलब्ध करायी जाती है। ग्रंथालय में ज्ञान के भंडार में से पाठ्य सामग्री प्राप्त करने के लिए डाटाबेस के रूप में ओपेक (OPEC) की सुविधा है, जिसके द्वारा उपयोगकर्ता विषयानुसार, लेखक के अनुसार, ग्रंथ के शीर्षक के अनुसार, प्रकाशक के अनुसार मार्गदर्शन लेकर अपने उधेश्य को पूर्ण कर सकते हैं। उपयोगकर्ताओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए उचित एवं पर्याप्त रथान के साथ बैठक व्यवस्था, प्राकृतिक एवं कृत्रिम प्रकाश का प्रबंध, ग्रीष्म ऋतु हेतु अनुकूल पंखे, वातानुकूलित शांत वातावरण, पर्याप्त कुर्सी, मेज, सूचनाओं की जानकारी के लिए सूचना पटल, अलमारी पर विषयों के मार्गदर्शन के लिए फ्लैप आदि की व्यवस्था है। ग्रंथालय में लगायें गये कम्प्युटर से नेटवर्क द्वारा सुक्ष्म जानकारी विभिन्न प्रकार के सूचना स्त्रोतों से प्राप्त कर सकते हैं। ग्रंथालय की विभिन्न कार्यों को संचालित करने, अमूल्य धरोहर को सुरक्षित रखने पाठकों की उपयोगिता के अनुसार पठन सामग्री के व्यवस्थापन के लिए नियमावली तैयार कर अनुशासन व्यवस्था रखी जाती है। पुस्तकालय मुद्रित तथा ई-संसाधनों के माध्यम से शिक्षकों के रचनात्मक कार्यों एवं छात्राओं के बहुमुखी विकास में निरंतर प्रयासरत हैं।

डॉ. अदिति जोशी
ग्रंथपाल



महाविद्यालय के इन छात्र छात्राओं में महाविद्यालयीन क्रीड़ा गतिविधियों का इतिहास



गुरुकुल महिला महाविद्यालय की क्रीड़ा गतिविधि की अपनी एक अलग ही छवि है। हम जानते हैं कि 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क' का वास होता है। जीवन में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए उन्हें न केवल पुस्तकीय ज्ञान की आवश्यकता होती है बल्कि उन्हें समय-समय पर शारीरिक गतिविधियों में भी वैसे ही नियमितता की आवश्यकता होती है। हमारा महाविद्यालय इन सभी बातों पर पूरा जोर देता है ताकि छात्राओं को सही दिशा निर्देश मिल सके। हर वर्ष महाविद्यालय में विभिन्न खेल गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। क्रीड़ा विभाग के द्वारा समय-समय पर ऐसे आयोजनों को कराकर खेल के प्रति छात्रों में नवीन उर्जा का संचार किया जाता है। हर वर्ष रविशंकर विश्वविद्यालय एवं उच्च शिक्षा द्वारा आबंटित विभिन्न क्रीड़ा प्रतियोगिताओं का आयोजन महाविद्यालय सफलतापूर्वक करता रहा है। शारीरिक स्फूर्ति और खेलों के प्रति बढ़ते झुकाव का ही नतीजा है कि यहाँ की छात्राएं अलग अलग खेल विधा में न केवल महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व करती हैं अपितु राज्य स्तरीय और विश्वविद्यालय स्तर तक की प्रतियोगिताओं में सहभागिता देती हैं।

इस वर्ष महाविद्यालय द्वारा अन्तर महाविद्यालीन तैराकी महिला/पुरुष प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। लॉन टेनिस एवं बास्केटबॉल प्रतियोगिता के भी आयोजन की जिम्मेदारी उच्च शिक्षा से महाविद्यालय को आबंटित है।

इस वर्ष महाविद्यालय की छात्रा जितेश्वरी साहू बी.कॉम अंतिम वर्ष और पूर्णिमा परिकार बी.कॉम प्रथम वर्ष ने सॉफ्ट-टेनिस में ओपन नेशनल चैंपियनशीप में छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व कर कांस्य पदक जीत कर राज्य और महाविद्यालय का नाम रोशन किया। महाविद्यालय का गौरवशाली इतिहास रहा है कि खेल के अलग-अलग विधा में यहाँ की छात्राओं का प्रदर्शन हमेशा अन्य के लिए प्रेरणा का आधार रहे हैं। विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।

पात्रत्वात् धनमाप्नोती, धनात् धर्म ततः सुखं ।।

विगत वर्षों में महाविद्यालय की क्रीड़ा विधा की उपलब्धि

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में चयनित महाविद्यालयीन छात्रायें-

सत्र	छात्रा का नाम	खेलविधा
2015-16	रेणुका साहू	शतरंज
	लिलेश्वरी साहू	कबड्डी
	लिलेश्वरी साहू	खो-खो
2016-17	रेणुका साहू काजल सोनकर पूजा राय	शतरंज

सत्र	छात्रा का नाम	खेलविधा
2016-17	माही ठाकुर एकता भोई	बास्केटबॉल
	निधी साहू	हैण्डबॉल
2017-18	पुजा राय	शतरंज
	माही ठाकुर एकता भोई	बास्केटबॉल

सत्र	छात्रा का नाम	खेलविधा	सत्र	छात्रा का नाम	खेलविधा
2017-18	रुकमणी दीप	बास्केटबॉल	2018-19	रुकमणी दीप	बास्केटबॉल
	खेमिका चन्द्राकर	खो-खो		खेमिका चन्द्राकर	खो-खो
2018-19	श्वेता सिंह	शतरंज	2019-20	डॉली यादव	हैण्डबॉल
	सौम्यातोपखानेवाले			राधिका साहू	खो-खो
	रेणुका	टेबलटेनिस			

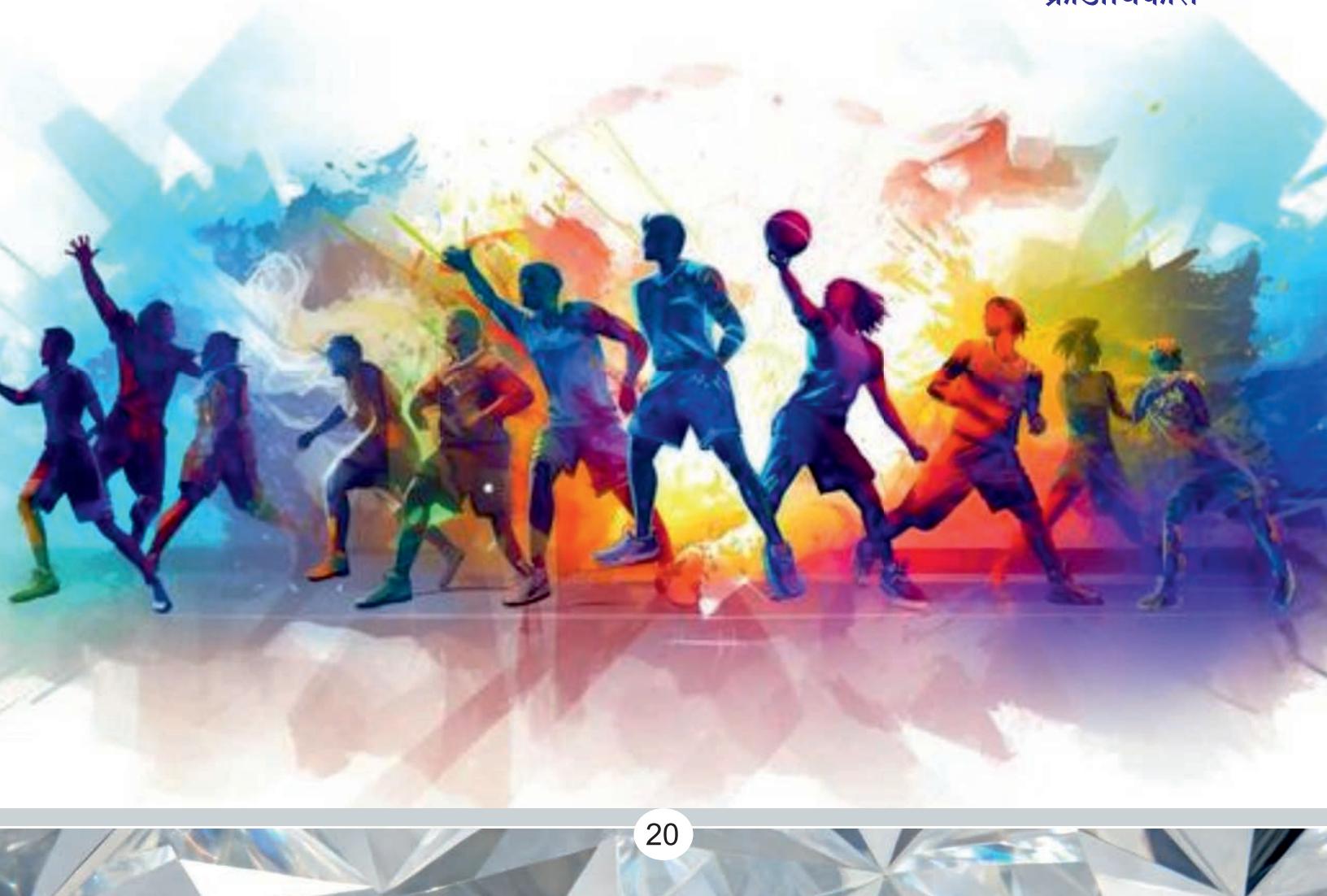
ऑल इंडिया प्रतियोगिता में चयनित महाविद्यालयीन छात्राएँ-

सत्र	छात्रा का नाम	खेलविधा	सत्र	छात्रा का नाम	खेलविधा
2015-16	पुजा चन्द्राकर	ताइकवाडो	2018-19	जयंती राय	जुडो
	ललिता जांगडे	हॉकी		जयंती राय	सॉफ्टबॉल
	मनीषा साहू गायत्री साहू	फुटबाल	2019-20	प्रिया विश्वकर्मा	स्वैश
2016-17	निधी साहू	हैण्डबाल	2021-22	रोमा यादव	बास्केटबॉल
2017-18	रेखा सार्वा	तैराकी	2022-23	त्रिवेणी सोनकर	तैराकी
2018-19	रेखा सार्वा	तैराकी		त्रिवेणी सोनकर	सॉफ्ट टेनिस
	रुकमणी दीप	बास्केटबॉल		त्रिवेणी सोनकर	लॉनटेनिस
	रुकमणी दीप रौशनी	स्वैश		अदिति शुक्ला	स्वैश
	शेख नजमा कीर्ति सिंह	कुश्ती		त्रिवेणी सोनकर	तैराकी
	सविता विश्वकर्मा	ताइकवाडो		त्रिवेणी सोनकर	सॉफ्ट टेनिस
	जयंती राय	जुडो		त्रिवेणी सोनकर	लॉन टेनिस
	जयंती राय	सॉफ्टबाल		अदिति शुक्ला	स्वैश
			2024-25	जीतेश्वरी साहू	लॉन टेनिस
				जीतेश्वरी साहू	स्वैश

पुरस्कार राशि

सत्र	छात्रा का नाम	खेलविधा
2015-16	ललिता जांगडे	कारक पदक एवं रु. 10 000 नगद अंतर विश्व विद्यालयीन हॉकी प्रतियोगिता में
	मनीषा साहू गायत्री साहू	रु. 8000 नगद अंतर विश्व विद्यालयीन फुटबॉल प्रतियोगिता में
2016-17	निधी साहू	स्वर्णपदक एवं रु. 15000 नगद अंतर विश्व विद्यालयीन हैण्डबॉल प्रतियोगिता में
2019-20	प्रिया विश्वकर्मा	रजत पदक एवं रु. 10000 नगद आल इंडिया स्कैवैश प्रतियोगिता में

डॉ. रिंकू पाण्डेय
क्रीडाधिकारी



सामाजिक सेवा - मेरा संकल्प मेरी पहचान

हम सबकी जिम्मेदारी: शिक्षा, पर्यावरण और समाज के प्रति संवेदनशीलता का विस्तार

- सहायक प्राध्यापक, गुरुकुल महिला महाविद्यालय, रायपुर
- रासेयो, कार्यक्रम अधिकारी,
- रेड रिबन क्लब नोडल अधिकारी
- स्वीप नोडल अधिकारी,
- फाउंडर अर्कवियत फाउंडेशन
- चेयरपर्सन ग्रीन आर्मी ऑफ रायपुर,
- वाइस प्रेसिडेंट मैनेजमेंट जैसी रायपुर संगवारी
- जिला सचिव रायपुर (छ.ग.) उपभोक्ता अधिकार संगठन



डॉ. रात्रि लहरी

गुरुकुल महिला महाविद्यालय, कालीबाड़ी, रायपुर आज अपने गौरवशाली 25 वर्षों के सफर का उत्सव मना रहा है 25 वर्षों में महाविद्यालय ने न केवल शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट पहचान बनाई है बल्कि 2006 से संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से समाज सेवा, पर्यावरण संरक्षण, जन-जागरूकता, राष्ट्रीय निर्माण, व्यक्तित्व विकास, बल्कि उन्हें संवेदनशील जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है

समाज का विकास केवल इमारतों, तकनीक और संसाधनों से नहीं होता, बल्कि जागरूक, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिकों से होता है। एक शिक्षिका के रूप में, मेरा सदैव यह विश्वास रहा है कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर मानवीय मूल्य, सामाजिक चेतना और पर्यावरणीय जिम्मेदारी का निर्माण करना है।

आज युवा शक्ति हमारे देश की सबसे बड़ी संपत्ति है। सही दिशा, सही मार्गदर्शन और सामाजिक दायित्वों का बोध यदि युवाओं को मिले, तो वे किसी भी समाज में सकारात्मक परिवर्तन का आधार बन सकते हैं। यही कारण है कि मैं वर्षों से राष्ट्रीय सेवा योजना, रेड रिबन क्लब, स्वीप कार्यक्रम, ग्रीन आर्मी ऑफ रायपुर तथा अर्क वियत फाउंडेशन के माध्यम से विभिन्न स्तरों पर जन-जागरूकता और सामाजिक विकास के लिए काम करती आ रही हूँ।

पर्यावरण संरक्षण: समय की सबसे बड़ी मांग

आज हमारे सामने जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जल संकट, प्लास्टिक कचरा और जैव विविधता के झास जैसी गंभीर चुनौतियाँ खड़ी हैं। इन स्थितियों में पर्यावरण संरक्षण केवल एक अभियान नहीं, बल्कि एक आवश्यक जीवनशैली है।

इसी सोच के साथ मैं वृक्षारोपण, प्लास्टिक मुक्त अभियान, स्वच्छता जागरूकता, जल संरक्षण कार्यशालाएँ, रैलियाँ एवं नुकड़नाटक, छात्राओं में ग्रीन माइंडसेट विकसित करने जैसी गतिविधियों में लगातार भाग लेती हूँ।

ग्रीन आर्मी ऑफ रायपुर के माध्यम से अनेक युवाओं और नागरिकों को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया गया है।

सामाजिक जागरूकता: समाज को समझना और उसे बेहतर बनाना

Index number:
Jul 20, 2024 12:07:52

हमारे समाज में आज स्वास्थ्य जागरूकता, महिला सुरक्षा, लैंगिक समानता, सड़क सुरक्षा, मतदाता जागरूकता और बाल अधिकार जैसे विषय अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। रासेयो और रेड रिबन वलब के माध्यम से हमने रक्तदान शिविर, एड़स जागरूकता कार्यक्रम, यूनिसेफ के साथ बाल अधिकारों पर कार्य, यू-रिपोर्ट से युवाओं को जोड़ना, मतदाता जागरूकता (स्वीप), सड़क सुरक्षा जागरूकता, जनसहभागिता आधारित स्वच्छता अभियान जैसी गतिविधियों के जरिए हजारों युवाओं को जोड़ा है।

रासेयो युवाओं को जिम्मेदार नागरिक बनाने की प्रयोगशाला

रासेयो का मूल मंत्र Not Me, But You (मैं नहीं, तुम) सिर्फ एक वाक्य नहीं, बल्कि जीवन जीने का तरीका है।

महाविद्यालय की मेरी रासेयो इकाई ने पिछले वर्षों में राष्ट्र सेवा, सामाजिक सद्भाव, पर्यावरणीय जागरूकता, नेतृत्व क्षमता, सामुदायिक जीवन, आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य किया है।

विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय जिला स्तरीय राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर में महाविद्यालय के स्वयंसेवकों की प्रतिभागिता रहती है।

2009 में दिल्ली में आयोजित गणतंत्र दिवस के परेड में कुमारी ऋचा शर्मा का चयन विश्वविद्यालय द्वारा गणतंत्र दिवस परेड शिविर हेतु हुआ।

2025 में हमारे महाविद्यालय की स्वयंसेवक कु प्रगति शर्मा को विश्वविद्यालय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवक पुरस्कार मिला, जो पूरी रासेयो इकाई के लिए गर्व का विषय है। प्रतिवर्ष पंजीकृत स्वयंसेवकों में से उत्कृष्ट प्रदर्शन एवं प्रतिभागिता के आधार पर सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवकों का पुरस्कार विशेष रूप से महाविद्यालय द्वारा दिया जाता है।

पुलिस प्रशासन, जिला प्रशासन, निर्वाचक आयोग और कई एन.जी.ओ. द्वारा हमारे स्वयंसेवकों को सम्मानित किया जाना इस बात का प्रमाण है कि युवा शक्ति सही दिशा में अग्रसर है।

मुझे गर्व है कि कार्यक्रम अधिकारी के दायित्व के निर्वहन करते हुए मुझे भारत निर्वाचन आयोग द्वारा मुझे 2023-24 और 2024-25 में “श्रेष्ठ नोडल अधिकारी”, शक्तिरूपा सम्मान (महिला सशक्तिकरण), पर्यावरण संरक्षण हेतु सम्मान, शिक्षा और सुरक्षा जागरूकता के लिए विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं से सम्मान मिला। लेकिन मैं इन सम्मानों को व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं मानती। यह समाज और युवाओं के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है।

मेरा मिशन “शिक्षा + पर्यावरण + सामाजिक संवेदना = परिवर्तन की शक्ति” को साकार करने के लिए आगे भी युवाओं को संवेदनशील, जागरूक, आत्मनिर्भर, पर्यावरण-प्रेमी, जिम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में कार्य करती रहूँगी। परिवर्तन एक दिन में नहीं होता लेकिन यदि हर व्यक्ति अपनी छोटी-सी भूमिका निभाए तो समाज में बड़े परिवर्तन अवश्य आते हैं। मैं सभी युवाओं, शिक्षकों, अभिभावकों और नागरिकों से आग्रह करती हूँ आइए, शिक्षा को केवल पुस्तकों तक सीमित न रखें। इसे समाज, प्रकृति और मानवता की सेवा से जोड़ें। इसी में हमारे भविष्य की सुरक्षा, प्रगति और शांति निहित है।

मेरे गुरुकुल के 25 साल : छात्रा रो सहायक प्राध्यापक तक का प्रेरणादायक सफर



किसी भी इंसान के जीवन में शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह उसके व्यक्तित्व और भविष्य को आकार देने वाली आधारशिला होती है। मेरे

लिए मेरा गुरुकुल-कंप्यूटर साईंस विभाग - सिर्फ एक संस्थान नहीं, बल्कि वह स्थान है जहाँ मैंने खुद को पहचाना, संवारा और अपने सपनों को दिशा दी। आज जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ तो महसूस होता है कि यह 25 साल का सफर कितना सुंदर, सीखों से भरा और प्रेरणादायक रहा है।

छात्रा के रूप में शुरूआत :

मेरी यात्रा यहीं से शुरू हुई थी - इसी गुरुकुल की एक साधारण-सी छात्रा के रूप में। कंप्यूटर साईंस की किताबें, लैब की चमकती स्क्रीनें, शिक्षकों का मार्गदर्शन और साथी विद्यार्थियों का साथ - सब मिलकर मेरी सीख का मजबूत आधार बने। यही मैंने मेहनत का मूल्य और ज्ञान की शक्ति को समझा।

पढ़ाई के साथ-साथ पढ़ाने की शुरूआत :

समय बीतता गया और मैंने अध्ययन के साथ-साथ शिक्षण के प्रति भी अपनी रुचि को पहचाना। धीरे-धीरे मैंने अपने ही गुरुकुल में पढ़ाना शुरू किया। छात्रों के सामने खड़े होकर उन्हें वही बातें सिखाना जिन्हें मैंने कभी जिज्ञासा से सीखा था-यह अनुभव मेरे लिए बेहद विशेष रहा।

यह सिर्फ नौकरी नहीं थी, यह एक जिम्मेदारी

थी... और एक सम्मान भी।

सहायक प्राध्यापक बनने का मुकाम

लगातार प्रयास, लगन और आत्मविश्वास के बल पर मैं असिस्टेंट प्रोफेसर के पद तक पहुँची। यह मेरे लिए सिर्फ एक उपलब्धि नहीं, बल्कि वर्षों की मेहनत का परिणाम हैं।

जब आपके अपने संस्थान में, आपके अपने गुरुकुल में, आपको एक पहचान मिलती है-तो मन गर्व से भर उठता है।

एक पहचान एक जिम्मेदारी

डिपार्टमेंट ऑफ कंप्यूटर साईंस में अपनी भूमिका निभाना मेरे लिए सिर्फ पेशेवर कर्तव्य नहीं, बल्कि भावनात्मक जुड़ाव भी है।

हर छात्र की जिज्ञासा मेरे लिए एक नई चुनौती होती है और हर उनका सवाल मेरे लिए सीखने का नया अवसर।

सफर जारी है...

25 साल का यह सफर अभी भी आगे बढ़ रहा है।

मैं आज भी वही सीखने की तृष्णा रखती हूँ जो एक छात्रा के रूप में थी और वही समर्पण जो एक शिक्षक के रूप में होना चाहिए। गुरुकुल ने मुझे शिक्षा भी दी और पहचान भी-और मैं इस कृतज्ञता को अपने हर कार्य, हर प्रयास में आगे बढ़ाती रहती हूँ।

अमूल्य निधि के रूप में संचित किया बहुत कुछ और मिले कुछ रिश्ते जो साथ रहे हमेशा मेरे, और शामिल रहे मेरे इस सफर में।

डॉ. दीपशिखा शर्मा

सहायक प्राध्यापक

Be happy now, Abhi khush ho jao



जीवन का हर इंसान खुशी की तलाश में है। बचपन में सोचते हैं अच्छे नंबर आएंगे तो खुश रहेंगे। बड़े होकर मानते हैं- नौकरी, शादी या बच्चों की सफलता के बाद खुशी मिलेगी। लेकिन

यह सिलसिला कभी रुकता ही नहीं।

सच्चाई यह है कि खुशी किसी आने वाले कल में नहीं, बल्कि इसी पल में है। खुश रहने के लिए हमें कोई बड़ी उपलब्धि या संपत्ति नहीं चाहिए, बल्कि एक सरल-सा निर्णय चाहिए-

“मैं अभी खुश हूँ।”

और स्वाभाविक रूप खुश से रहने का हर दिन संकल्प ले।

खुशी के तीन आयाम होते हैं।

समाज में खुशी-

दूसरों से अपेक्षा किए बिना अपनापन और सहयोग बढ़ाना। जब हम आसपास के लोगों के साथ सामंजस्य से रहते हैं, तो वातावरण हल्का और सुखद बन जाता है।

मन की खुशी-

अपने आप को स्वीकारना और कृतज्ञता का भाव रखना। शिकायतें कम हो और संतोष बढ़े तो भीतर शांति और आनंद अपने आप उमड़ता है।

आध्यात्मिक खुशी-

ध्यान, प्रार्थना और आत्मचिंतन से जीवन के गहरे सत्य से जुड़ना। यह वह स्तर है जहाँ आनंद स्थायी हो जाता है और मन हमेशा प्रसन्न राहता है।

निष्कर्ष-

ये तीनों आयाम आपस में जुड़े हुए हैं। जब आपका मन ईश्वर के साथ गहन जुड़ाव महसूस करता है तब आप सेवा से नहीं चूकते क्योंकि हर कोई आपको ईश्वर का अंश दिखाई पड़ता है। आप हर समय अपने बारे में नहीं सोचते। तब मन भी प्रसन्न और तनाव मुक्त महसूस करता है।

खुशी बाहर नहीं, भीतर है-

यह किसी उपलब्धि का पुरस्कार नहीं, बल्कि जीने का चुनाव है। अगर हम “अभी” खुश रहना सीख जाएँ तो समाज, मन और आत्मा तीनों ही प्रकाशमान हो जाते हैं।

तो आइए, आज और अभी मुस्कान के साथ कहें-

“मैं खुश हूँ, अभी और यहीं!”

आज के समय में ऐसा क्या है, जिसके बिना मन उदास हो जाता है?

सोचो सोचो वह क्या है-

यह है मोबाइल।

खोए है मोबाइल में बच्चे, बड़े और जवान।

फेसबुक, इंस्टा और रील में सबका ध्यान, पारिवारिक दूरियों बढ़ा रहा है ये शैतान।

पता नहीं कब होश में आएगा इंसान।

कठिन परिश्रम करने, ऊँचे सपने देखने में असमर्थ हो रहा आज का युवा नादाना

मोबाइल की वजह से नहीं लग रहा किसी काम में मन।

माता-पिता मना करें तो बन जाते हैं बच्चों के दुश्मन।

बहुत देर न हो जाए, ये हम पर हावी न हो जाए- इसका रखो भान,

पता है कि आदत बदलना इतना नहीं आसान।

जब खुद पर नियंत्रण न होगा
तो बच्चों पर नियंत्रण कैसे कर पाएंगे?
जो अपने जीवन में अनुशासन नहीं लगाए
तो आपकी कही बातें आने वाली पीड़ी पर
कैसे असर डाल पाएंगे?
एक सलाह मेरी मानो-
कम से कम हफ्ते में एक दिन, रविवार को
No Mobile Day (परिवार दिवस) बनाएँ।

सब एक साथ रहें, खेलें, कुछ नया सीखें और सिखाएँ,
परिवार के साथ आनंद मनाएँ
और गुणवत्तापूर्ण समय बिताएँ।



डॉ. अनुराधा गुप्ता
सहायक प्रोफेसर भौतिकी

Millennials and the Rise of Digital Culture



The millennial generation, born between 1983 and 1996, has grown up during one of the fastest technological transformations in human history. As the first generation to experience the shift from analog to fully digital life, millennials have played a major role in shaping today's digital culture. Their childhoods introduced them to early computers and the internet, while their teenage and young adult years aligned with the rise of smartphones, social media, and instant connectivity. Digital culture for millennials is not limited to technology; it influences communication styles, education, entertainment, work habits, shopping behavior, and even relationships. Platforms like Facebook, Instagram, YouTube, and later TikTok grew rapidly because

millennials embraced online communities, user-generated content, and digital self-expression. Their preference for convenience and connectivity accelerated the growth of online learning, e-commerce, remote work, and digital entertainment such as streaming services and mobile apps. At the same time, this digital shift has created challenges such as reduced attention spans, dependency on technology, online comparison culture, and mental health issues linked to social media. Still, millennials continue to drive innovation and creativity in the digital space, making them key contributors to today's global digital economy.

How Millennials Have Shaped and Been Shaped by Digital Culture

- **Integrated digital lives:** Unlike previous generations, millennials are the first to have their daily lives — including dating,

socializing, entertainment, and shopping —heavily supported by digital technology and online platforms

- **Digital native workers:**

Millennials are comfortable with technology and have pushed for more flexible, remote, and collaborative work environments. This has driven demand for tools like Slack, Zoom, and cloud-based platforms.

- **Drivers of innovation:** Their comfort with new technologies like AI, block chain, and augmented reality has pushed innovation in the tech industry and led to new business models that leverage digital tools for marketing, sales, and management.

- **Focus on convenience:** For millennials, technology is synonymous with convenience. They expect seamless, user-

friendly digital experiences from brands and service providers and are more likely to choose digital options, such as online banking, over traditional methods.

- **Value for transparency:** Their digital upbringing has fostered a desire for transparency in their professional lives. They value open communication and want to be involved in decision-making, which has led to flatter organizational structures and a greater emphasis on trust and flexibility from employers.

Digital technology is not merely a tool for this generation—it is an inseparable part of their identity and a powerful catalyst for ongoing societal evolution.

Anshika Dubey

Assistant Professor
(Computer Science)

Gurukul Mahila Mahavidyalaya



Sajawat



Education has been the guiding force of my life. My academic journey began at The Radiant Way School, Raipur (C.G.), where I completed my secondary education, followed by higher secondary education at Pragati School, Kota (Rajasthan). With a growing passion for science, I pursued my Graduation from Gurukul Mahila Mahavidyalaya, Raipur, and later completed my post. Graduation from the school of Studies in Chemistry. Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur.

To strengthen my teaching foundation, I earned my B.Ed. from Vikas Shiksha Mahavidyalaya, Dumartarai, Raipur and further enhanced my professional skill set through PGDCA and GST + Tally.

Today, I am honored to return to the same institution where my academic dreams took shape-now as an Assistant Professor of Chemistry, walking these familiar

corridors as a faculty member is not just a professional achievement but a deeply personal milestone.

My entrepreneurial journey began right here as well. A professor once offered me a platform during event and that single opportunity transformed my path. The appreciation I received encouraged me to channel my creativity into something meaningful leading to the birth of my brand

SAJAWAT BY JYOTI

A venture dedicated to handmade gifting, personalized decor, and craftsmanship.

Balancing academic and entrepreneurship has taught me that a disciplined mind can carry creativity as its companion and success blooms where passion meets perseverance. Where I stand today both as a former student and at present as a faculty member, I wish to express my heartfelt appreciation for the professors who made this transformation possible.

Dr. Sandhya Gupta (Principal Ma'am) - "Your Discipline sets the

rhythm of our day, Even silence stands in respect along your way."

Dr. Vandana Agrawal (HOD, Chemistry) - "Beyond equations, you taught us to steer, Balancing life with wisdom and cheer."

Dr. Megha Agrawal (Botany) - "With roots of courage and calm insight, You taught us to stand tall for what is right."

Dr. Razia Sultan (Zoology) - "Your lessons remind us that true success is earned, When we rise and uplift others in return."

Dr. Devshree Verma - "Your warmth makes every class feel bright, Where students become family in natural light."

Dr. Simrann R. Vermaa (English) - "Your graceful words refined thought and voice, Making clarity of speech our confident choice."

Dr. Seema Chandrakar (Hindi) - "In your expression, courage and beauty unite Turning language into strength and light"

Dr. Teenu Dubey (Mathematics) - "Numbers seem friendlier when you walk by Even algebra feels warm and spry."

Dr. Anuradha Gupta (Physics) - "Your calm continuity lights the way, Where physics flows smooth throughout the day."

Ms. Priya Dubey (Physics) - "With you, memories return in a gentle sway, And I feel like a student again."

Working beside the very teachers who shaped my academic, personal, and creative journey is an honour I deeply cherish. Their mentor ship strengthened my resolve-to teach with dedication and create with purpose.

As an educator and entrepreneur, I hope to inspire students to embrace knowledge with discipline and creativity with confidence.

Jyoti Agrawal
Asst. Prof. (Chemistry) Entrepreneur
(Founder : Sajawat by Jyoti)
B.Sc. (Bio) Batch 2018

विकास का सफर – मेरा अनुभव

भातखण्डे ललित कला शिक्षा समिति द्वारा सन 2001 में स्थापित गुरुकुल महिला महाविद्यालय में मैं सन 2002 से ‘निम्न श्रेणी लिपिक’ के पद पर कार्यरत हूँ।

मेरी नियुक्ति के समय महाविद्यालय में बी.एस-सी., बी.कॉम. एवं पी.जी.डी.सी.ए. कक्षाओं में कुल 50 छात्राएँ अध्ययनरत थीं। निरंतर प्रगति के परिणामस्वरूप आज महाविद्यालय में लगभग 1000 छात्राएँ अध्ययनरत हैं, जो संस्थान के विकास, शैक्षणिक गुणवत्ता और जन-विश्वास का स्पष्ट प्रमाण है।



सन 2002 में कार्यालयीय कार्य केवल मेरे द्वारा संचालित थे, जबकि वर्तमान में कार्यालय का संचालन 05 सदस्यीय टीम के साथ दक्षतापूर्वक किया जा रहा है।

आरंभिक दिनों से ही मुझे महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. श्रीमती संध्या गुप्ता, समिति के सचिव श्री सी.एन. जी. राय एवं संस्थान के संचालक श्री बी. डी. द्विवेदी से निरंतर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इनके सहयोग से मैंने कार्यक्षेत्र की बारीकियों को समझा तथा प्रशासनिक दक्षता को विकसित किया। इसके लिए मैं महाविद्यालय एवं प्रबंधन समिति की आभारी हूँ।

सेवा काल के दौरान मेरी शैक्षणिक योग्यता वृद्धि में भी पूर्ण सहयोग मिला, जिसके परिणामस्वरूप मैंने पी. जी.डी.सी.ए. की डिग्री प्राप्त की और आज कार्यालय का ‘डिजिटल एवं पेपर-लेस संचालन’ सफलता पूर्वक कर रही हूँ।

समय के साथ महाविद्यालय की आंतरिक एवं बाह्य संरचना में उल्लेखनीय विकास हुआ है। वर्तमान में आवश्यक ‘भौतिक एवं डिजिटल सुविधाएँ’ उपलब्ध हैं, जिससे कार्य-प्रणाली अधिक सुगम एवं कुशल हो गई है।

परिनियम 28 के अंतर्गत नियमित नियुक्ति के उपरांत शासन द्वारा वेतन एवं भत्तों के अनुदान का पात्र होना भी मेरे लिए गर्व का विषय है।

सेवा-काल में अर्जित विशेषज्ञताएँ एवं अनुभव

1. संस्थागत ज्ञान – लगभग दो दशक की निरंतर सेवा के उपरांत संस्थान की नीतियों, कार्यप्रणाली, प्रबंधन शैली, प्रमुख कर्मियों एवं संस्था की संस्कृति का गहन एवं ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त हुआ।



2. प्रशासनिक दक्षता - रिकॉर्ड संधारण, समय-सारिणी निर्माण, कार्यक्रम समन्वय, बजट प्रबंधन, पत्रचार, डेटा संकलन तथा नियमों के अनुपालन सहित सभी कार्यालयीन कार्यों का दक्षतापूर्वक संचालन करने का व्यापक अनुभव प्राप्त हुआ।
3. छात्र सेवाएँ एवं परामर्श - छात्राओं के पंजीकरण, शैक्षणिक विषयों, वित्तीय प्रक्रियाओं व परिसर जीवन से संबंधित प्रश्नों में मार्गदर्शन प्रदान करते हुए उत्कृष्ट पारस्परिक संवाद क्षमता एवं समस्या-समाधान कौशल विकसित हुए।
4. प्रशिक्षण एवं नेतृत्व समर्थन - नए कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देने तथा कार्यालयीय प्रक्रियाओं में उनका मार्गदर्शन करने का दायित्व निर्वहन करते हुए एक विश्वसनीय संसाधन व्यक्ति के रूप में पहचान बनी।
5. तकनीकी अनुकूलन क्षमता - कागज आधारित कार्यप्रणाली से आधुनिक 'डिजिटल सूचना प्रणाली, छात्र सूचना पोर्टल, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म तथा पेपर-लेस प्रोसेस' की ओर संक्रमण के दौरान अपने तकनीकी कौशलों को अद्यतन एवं विकसित किया।
6. समस्या-समाधान कौशल - नियमित कार्यों से लेकर आकस्मिक परिस्थितियों तक, विविध स्थितियों का प्रभावी प्रबंधन करते हुए समस्याओं को त्वरित, शांत एवं व्यवस्थित तरीके से हल करने की क्षमता प्राप्त की।
7. मानवीय संबंधों का महत्व - सहकर्मियों, प्राध्यापकों, उच्च अधिकारियों एवं छात्राओं के साथ मजबूत कार्य-संबंध विकसित करना कार्य-संतुष्टि एवं संस्थागत सुदृढ़ता का महत्वपूर्ण आधार रहा है।
8. निरंतर सीखने की प्रवृत्ति - उच्च शिक्षा क्षेत्र में समय-समय पर होने वाले परिवर्तनों, नई तकनीकों, प्रक्रियाओं एवं नियमों से अद्यतन रहने हेतु निरंतर व्यावसायिक विकास अपनाया।
9. व्यावसायिक नैतिकता - शैक्षणिक वातावरण में गोपनीयता, निष्पक्षता, सत्यनिष्ठा एवं उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता बनाए रखते हुए कार्य किया।
10. कड़ी मेहनत और स्मार्ट वर्क का संतुलन - कार्यक्षमता बढ़ाने हेतु आधुनिक साधनों का उपयोग (स्मार्ट वर्क) करते हुए अनुशासन और परिश्रम (हार्ड वर्क) के बीच संतुलन बनाए रखा।
11. संस्था के प्रति निष्ठा - महाविद्यालय के मिशन, मूल्यों एवं छात्राओं की शैक्षणिक उन्नति की यात्रा में योगदान देना अपने आप में गर्व और प्रेरणा का विषय रहा है।

श्रीमती रेनू गिडियन

कार्यालय प्रमुख

गुरुकुल महिला महाविद्यालय



जड़े

जड़ें जीवन में बहुत ही जरूरी हैं।

चाहे वह पेड़ की हो या परिवार की

जड़ें जीवन का आधार होती हैं।

ये दिखती नहीं फिर भी सम्हालती है पूरा जीवन

ये हैं तो वृक्ष है, पत्तियां हैं, फूल हैं, फल हैं,

ये हैं तो शुद्ध वातावरण है, ये हैं तो स्वस्थ जीवन है

इन्हीं से ही आने वाला कल है।

इसी तरह बुजुर्ग भी हमारे जीवन एवं परिवार की जड़ होते हैं।

बुजुर्ग अनुभव, त्याग और प्रेम की मिसाल होते हैं।

उनके बिना जीवन की मज़बूत बुनियाद संभव नहीं है।

भुल न जाना इन जड़ों को जो सशक्त है, इन्हीं से रिश्तों

की नींव गहरी व संस्कारों की जड़ें मजबूत होती हैं।

इसलिए जड़ों की कटाई व बुजुर्गों की छाँटाई कभी न करें।

इनका सम्मान करें यही हमारा आधार है, इन्हीं से हमारी पहचान है।

प्रशांत पांडे

नि.श्रे.लि

2030 का ए आई : भविष्य की नई दिशा



ते जी से बदलती तकनीकी दुनिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एक ऐसी शक्ति बनकर उभर रही है, जो आने वाले वर्षों में मानव जीवन के हर क्षेत्र को नई परिभाषा देने वाली है। वर्ष 2030 को विशेषज्ञ "AI Transformation Era" कह रहे हैं एक ऐसा दौर, जहाँ मशीनें केवल आदेश नहीं मानेंगी, बल्कि हमारी जरूरतों को सोच-समझकर निर्णय भी लेंगी।

1. रोजमर्रा की जिंदगी बनेगी स्मार्ट

- घर खुद ही रोशनी, तापमान और सुरक्षा का ध्यान रखेंगे।
- एआई असिस्टेंट हमारी दिनचर्या ऐसे संभालेंगे जैसे कोई निजी सचिव।
- मनोरंजन, खबरें, शिक्षा सब कुछ पूरी तरह व्यक्तिगत होगा।
- जीवनतेज, सरल और सहज होगा।

2. स्वास्थ्य सेवाओं में क्रांति

- भविष्य का अस्पताल और डॉक्टर, एआई की मदद से और अधिक सक्षम होंगे।
- बीमारियों का शुरुआती स्तर पर पता
- रोबोटिक सर्जरी में लगभग शून्य त्रुटि
- दूरदराज क्षेत्रों में वर्चुअल डॉक्टर
- प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग उपचार योजना

- 2030 की स्वास्थ्य व्यवस्था इलाज नहीं, बल्कि "रोकथाम" को प्राथमिकता देगी।

3. शिक्षा होगी बिल्कुल व्यक्तिगत

- कक्षाएँ बदल जाएँगी शिक्षण नहीं, सीखने का तरीका बदलेगा।
- एआई ट्यूटर हर छात्र की क्षमता और गति के अनुसार पढ़ाएंगे
- वर्चुअल लैब से प्रयोग घर पर ही
- स्वचालित रिपोर्ट और निरंतर मार्गदर्शन
- हर छात्र के पास होगा एक 24×7 उपलब्ध स्मार्ट शिक्षक।

4. नौकरियाँ समाप्त नहीं रूपांतरित होंगी

- कई पुराने काम ऑटोमेट होंगे, लेकिन नई नौकरियाँ और अवसर भी बढ़ेंगे:
- एआई ट्रेनर
- प्रॉम्प्ट इंजीनियर
- एआई सुरक्षा विशेषज्ञ
- रोबोटिक्स मेंटेनेंस
- डेटा इंटरप्रेटर
- जो लोग एआई का उपयोग करेंगे, वही आगे बढ़ेंगे।

5. यात्र होगी सुरक्षित और बुद्धिमान

- 2030 की सड़कें, वाहन और ट्रैफिक सिस्टम पूरी तरह एआई संचालित होंगे:
- स्वचालित कारें और बसें

- ड्रोन डिलीवरी
- स्मार्ट ट्रैफिक प्रबंधन
- वास्तविक समय में सुरक्षा निगरानी
- यात्रा तेज और दुर्घटनाएँ कम।

6. व्यापार और अर्थव्यवस्था का एआई युग

- छोटे दुकानदार से लेकर बड़ी कंपनियाँ हर कोई एआई का उपयोग करेगा।
- स्मार्ट मार्केटिंग
- स्वचालित फैक्ट्रियाँ
- इन्वेंटरी और सप्लाई चेन का एआई प्रबंधन
- वैशिक स्तर पर समान अवसर
- व्यवसाय तेज और बुद्धिमान होंगे।

7. रचनात्मकता को नई ऊंचाइयाँ

- एआई मनुष्य का प्रतिस्पर्धी नहीं सहयोगी बनेगा।
- कला, संगीत, लेखन, डिजाइन, फिल्म हर जगह एआई सह-निर्माता

- मानव कल्पना + एआई की गति = अनंत रचनात्मकता

8. अधिक मजबूत नियम और सुरक्षा

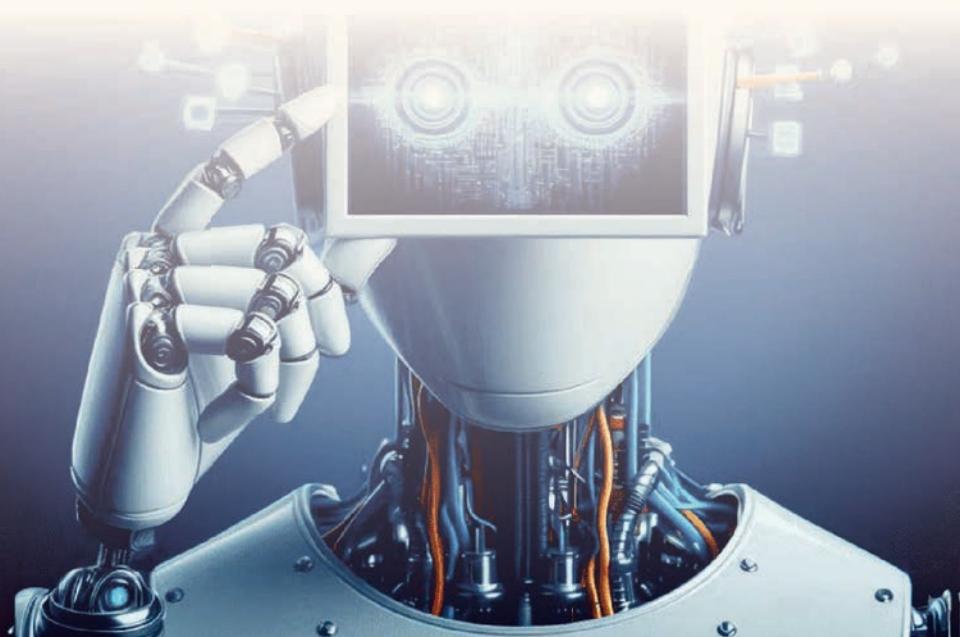
- 2030 तक एआई के लिए कड़े कानून और व्यवस्थाएँ बन जाएँगी:
- फेक कंटेंट पर नियंत्रण
- डेटा गोपनीयता सुरक्षा
- नैतिक और जिम्मेदार एआई सिस्टम
- पारदर्शिता और जवाबदेही

9. 2030 का एआई मानवता का सशक्त साथी

- जीवन को बेहतर, सुरक्षित और अधिक रचनात्मक बनाएगा।
- एआई मानव को नहीं बदलेगा एआई मानव की क्षमताओं को बढ़ाएगा।
- ना थकती, ना रुकती, हर वक्त तैयार है,
- आज की नहीं, आने वाले कल की भी ये आधार है।

मनोज कुमार साहू

नि.श्रे.लि.





बैठे हुए (बायें से दाये)	डॉ. सीमा चन्द्रकार, डॉ. वंदना अग्रवाल, डॉ. अमिता तेलंग, डॉ. राजेश अग्रवाल, डॉ. संध्या गुप्ता (प्राचार्य), डॉ. कविता सिलवाल, डॉ. रिकु पांडे, डॉ. अदिति जोशी, डॉ. रात्रि लहरी, डॉ. सिमरन वर्मा
प्रथम पंचित (बायें से दाये)	सुश्री प्रिया दुबे, डॉ. मेधा अग्रवाल, डॉ. देवीशी वर्मा, डॉ. अनुराधा गुप्ता, सुश्री मान्या शर्मा, श्रीमती प्रियंका तिवारी, डॉ. दीपशिखा शर्मा, श्रीमती ज्योति अग्रवाल, श्रीमती रेणु गिडियन, डॉ. रीनु दुबे, सुश्री आंशिका दुबे, सुश्री सरिता वर्मा, श्री छविराम साहू
द्वितीय पंचित (बायें से दाये)	श्री मनोज कुमार साहू, श्री प्रशांत पांडेय, श्रीमती गौतमी यादव, श्री कमलेश्वर निर्मलकर, श्री राहुल गोपे, श्री शैलेन्द्र कुमार यादव, श्री सतीश तिवारी, श्री वैभवसिंह ठाकुर, श्री प्रवीण बंधोर, श्री गोकरण साहू

“मेरा गुरुकुल”



आज यादों के पन्नों से वो पल
याद आया है,
मैंने भी इसकी पहली बुनियाद
में योगदान दिया है।
वो कारवां का पहला कदम जो
मैंने बढ़ाया था,
संग मेरे कुछ साथियों ने भी

हाथ बढ़ाया था।

वो नयापन था उस समय अपनी किताबों में,
पहला कदम था सबके लिए इस राह में।
चुनौतिया थी गुरु-शिष्य के लिए सम्मान इसके विकास
में।

इस गलियारे में आकर मन खिलखिलाता,
सब गुरुजनों का प्रेमभाव ऐसे हम में बरसता।
मेहनत की कोशिशों, विचारों की उड़ान,
अपने सपनों को नया रंग मिला इस गुरुकुल के आंगन।
आज इस सफर में कितने बहारों ने आगे हाथ बढ़ाया
और महसुस होता अभी हमें बहुत आगे और है जाना।
शिक्षा, विचार और संस्कार यहां की बुनियादें,
हर इसान में एक अलग खूबी ये परखे माने।
भविष्य के सपने और वर्तमान के इस लम्हों में
यही वो पल जहां जीते सिर्फ अपने लिए।

साथ रहने से रिश्तों की बुनियाद बनती है,
जब साथ न हो तो विश्वास, अपनापन रिश्तों को
संजोती है।

गुरु शिष्य एक दुसरे के पूरक एक माला तो दूजी है
कड़ी,

ये रिश्ता आजीवन रहे मेरी कामना हो पूरी।

वर्तमान की मिट्टी को ऐसे पोषित करो, भविष्य के
मुकाम को हासिल करने के लिए।

साथ बढ़ते हुए सब फूलों को खिलकर सारे जहाँ में इस
आंगन की खुशबू हर कोने में महकाने के लिए।

सहयोग, समर्पण और विश्वास की डोर यूँ ही बनाये
रखेंगे।

गुरु शिष्य की परंपरा और मित्रता की नयी परिभाषा
बनायेंगे।

गुरुकुल हमारी एक पहचान है और हम भी
इनकी पहचान बनकर दिखाये,
यही शुभकामना और सबका साथ मिले यही कहेंगे।

पर्मेश्वरी वर्मा

Batch (2001-2004)

गुरुकुल : शिक्षा का दीप



“गुरुकुल महिला महाविद्यालय, जहाँ सपने बनते हैं, भविष्य बनता है और जीवन को सार्थक बनाने का अवसर मिलता है।”

मैं श्रीमती सुप्रिया वर्मा,
गुरुकुल महिला महाविद्यालय

की पूर्व छात्रा हूँ। एक साधारण सी लड़की, जो अपने सपनों को पूरा करने के लिए हमेशा उत्सुक रहती थी। 2016 में गुरुकुल महिला महाविद्यालय में अपना कॉलेज लाईफ स्टार्ट किया जो मेरे जीवन के सबसे यादगार दिन थे। मैंने DCA (डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एजुकेशन) और B.Sc. (बैचलर ऑफ साइंस) में एडमिशन लिया और साथ ही साथ मैंने NSS (नेशनल सर्विस स्कीम) में भाग लिया।

कॉलेज के पहले दिन मैं थोड़ी नर्वस थी, लेकिन मेरे नए दोस्तों और प्रोफेसर्स ने मुझे बहुत जल्दी ही सहज महसूस कराया। डीसीए की क्लास में मैंने कम्प्यूटर की दुनिया के बारे में सीखा और बीएससी की क्लास में मैंने साइंस के विभिन्न पहलुओं को समझा।

“शिक्षा वह शास्त्र है जिससे हम अपने जीवन को बदल सकते हैं।”

GMM में मैं साइंस क्लब की सेक्रेटरी बनी और ग्रीन आर्मी भी ज्वाइन की साइंस क्लब में मैंने कई वैज्ञानिक प्रयोग किए और ग्रीन आर्मी में मैंने पर्यावरण संरक्षण के लिए काम किया।

लेकिन कॉलेज का सबसे अच्छा हिस्सा था NSS यह वह जगह थी जहाँ मैंने नेतृत्व कौशल, टीम वर्क व सामाजिक कर्तव्यों को समझा और समाज की सेवा के

महत्व को जाना। हमने कई सामाजिक कार्य किए जैसे कि रक्तदान शिविर, स्वच्छता अभियान और गरीब बच्चों के लिए शिक्षा कार्यक्रम। 2018 में NSS में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए मुझे Best Volunteer का अवार्ड भी मिला था।

“हमारे समाज के लिए हम जिम्मेदार हैं और हमें अपने समाज के लिए कुछ करना होगा।”

कॉलेज के तीन साल बहुत ही जल्दी बीत गए। मैंने अपनी पढ़ाई पूरी की और एक सफल कैरियर की शुरूआत की। आज मैं सहायक विज्ञान प्रयोगशाला टीचर के रूप में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मल्वा में कार्यरत हूँ।

मेरे कॉलेज के दिन हमेशा मेरे दिल में रहेंगे, क्योंकि यही वह जगह है जहाँ मैंने अपने सपनों को पूरा करने के लिए आवश्यक कौशल और आत्मविश्वास प्राप्त किया। मैं अपने कॉलेज और टीचर्स को हमेशा याद रखूँगी और उनके प्रति आभारी रहूँगी।

श्रीमती सुप्रिया वर्मा

B.Sc. (Bio)

Batch (2016 - 2019)



छिंवना कहूँ उतना करूँ हैं...



मैं निधी साहू गुरुकूल महाविद्यालय की भूतपूर्व छात्रा हूँ। वर्ष 2015 में मैंने गुरुकूल महाविद्यालय में BSC (Computer Science) में नियमित छात्रा के रूप में प्रवेश

ग्रहण किया। जब मैं पहली बार महाविद्यालय परिसर पर कदम रखी तो उत्साह के साथ, मन में थोड़ी घबराहट भी थी, पर जैसे-जैसे महाविद्यालय में समय बीतते गया, मेरी घबराहट व चिंता, होसलों में तब्दील हो गई। मेरे बहुत से दोस्त बने, व मेरे सीनियर्स का व्यवहार भी मेरे प्रति हमेशा एक दोस्त की भाँति रहा।

पहले दिन, पहले कालखण्ड में उपस्थित हुई तो शिक्षकों ने जिस प्रकार समझाया व अपनापन दिखाया तब यकीन हुआ कि विद्यालय जिसे हम अपना दूसरा घर कहा करते थे, ठीक उसी प्रकार महाविद्यालय भी एक नयी दुनिया.... एक नया परिवार है।

मेरी रुचि पढ़ाई के साथ-साथ खेलों में भी रही है, जिसमें मेरी खेल शिक्षिका का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्हीं के मार्गदर्शन में मैं वर्ष 2017 में। "All India Interuniversity handball" Tournament खेली।

मैं महाविद्यालय में प्रवेश से पहले गिने-चुने खेल ही खेलती थी किन्तु महाविद्यालय में प्रवेश उपरान्त तिवारी मैम ने मुझे अनेक खेलों में भाग लेने की सलाह दी और उन्हीं के मार्गदर्शन में मैं आगे बढ़ी जो मेरे भविष्य के

लिए बहुत मददगार साबित हुआ।

जब भी खेल के दौरान मैं महाविद्यालय से बाहर जाती थी तो उस समय की हर क्षति की पूर्ति करने में मेरे सभी शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। जब मैं B.S.C. Final Year में थी तब सन 2017 में सभी विद्यार्थी शिक्षकगण एवं समस्त महाविद्यालय परिवार की मदद व प्रोत्साहन से मैं छात्र संघ की अध्यक्ष बनी जो अनुभव मेरे लिए बेहद अविश्वसनीय रहा। अध्यक्ष बनने के पश्चात् मैंने महाविद्यालय परिसर में Canteen व्यवस्था का शुभारंभ करवाया और उसी वर्ष मुझे "सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी" (Best Player) की उपाधि से सम्मानित किया गया।

आज मुझे आप सभी से ये बात साझा करते हुए अत्यंत गर्व व खुशी हो रही है कि आप सबके मार्गदर्शन व आशीर्वाद से मैं PM Shri SAGES Chhuikhadan Govt English Medium School में PTI के पद पर विगत पाँच वर्षों से सेवा दे रही हूँ। आप सभी से प्राप्त स्नेह व आशीष मेरे लिए बहुमूल्य है जिसका बखान कर पाना संभव नहीं है।

अंत में प्राचार्या महोदया के लिए दो पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं: "ऊपर से बहुत कठोर, अंदर से मुदु मैं क्या, लोग करते हैं उनके गुणों का शोर मृदुभाषी, कोमलहृदय जिनका चला महाविद्यालय पर जोर।

आज भी गूंज रहा है महाविद्यालय में उनके गुणों का शोर।।"

निधी साहू

बी.एस.सी. (Computer Science)
Batch (2015-2017)

अनुभव



मैं श्रीमती लिलेश्वरी साहू, गुरुकुल महाविद्यालय, रायपुर की भूतपूर्व छात्रा।

मैंने जब 2014 में 12वीं उत्तीर्ण किया जो लगा

अब विद्यालय के

अनुशासनात्मक बंधन से निकलकर हम किसी महाविद्यालय में पढ़ना अपना अलग ही आनंद होगा, और 2014 में मैंने गुरुकुल महाविद्यालय में बी.एस-सी (कम्प्यूटर साइंस) में नियमित छात्रा के रूप में प्रवेश लिया तो मुझे लगा विद्यालय से निकलकर महाविद्यालय में इतने विद्यार्थियों के बीच अपना नाम व पहचान बनाना वाकई में एक कठिन काम लगा, क्योंकि मुझे भी एक चमकते सितारे की तरह चमकना व निखरना था ताकि मुझे मेरे नाम व काम से पहचाना जाए।

मुझे अपने विद्यालय जीवन से ही खेलों एवं सास्कृतिक कार्यक्रमों में रुचि रही है, इन रुचियों को मैं किसी मंच के माध्यम से प्रस्तुत कर पाउ इसके लिए मैंने हमारे महाविद्यालय में होने वाले खेलकूद के सभी विद्याओं में भाग लिया तथा विश्वविद्यालय स्तर तक खेलकूद में खो-खो खेलने का अवसर मिला तथा यही से मैंने खेलकूद को अपने जीवन के कार्यक्षेत्र (पेशेवर) के रूप में चुनने का ख्याल आया।

इस तरह मुझे इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए महाविद्यालय के शिक्षकों का अपार सहयोग व प्रोत्साहन

मिला इस तरह मेरे सांस्कृतिक व खेलकूद में सहभागिता ही मेरी पहचान बन गई साथ ही इसी समय मैं अपने महाविद्यालय में हुए छात्रा संघ चुनाव में छात्र संघ अध्यक्ष बननें का सौभाग्य मिला। जो सत्र 2015-16 का समय रहा।

महाविद्यालय के अंतिम वर्ष में मुझे प्लेयर ऑफ द ईयर का पुरस्कार प्राप्त हुआ जिसके लिए मैं अपने शिक्षकों व प्राचार्य मैडम की आभारी रहूँगी।

अपने विद्यार्थी जीवन के तीन साल पूरे कर मैंने 2016 में अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी कर ली जिसमें सभी शिक्षकों का मार्ग दर्शन मिला एवं स्नातक के बाद मैं 2018 में B. Ped कर, व्यायाम शिक्षक बनने संबंधी योग्यता पूर्ण कर ली एवं आज मैं एक व्यायाम शिक्षक के रूप शा. मा. वि, खोला अभनपुर, जिला रायपुर में पदस्थ हूँ।

ये सभी संभव हुआ मैं गुरुकुल महाविद्यालय के शिक्षकों, प्राचार्य के प्रोत्साहन से जो मेरी योग्यता को पहचान कर मुझे उसी ओर प्रोत्साहित किया। अतः मेरा गुरुकुल महाविद्यालय में पढ़ने व शिक्षकों का सहयोग अविस्मरणीय व जीवन के खास अनुभवों में से एक है। इसके लिए मैं महाविद्यालय के प्राचार्य व शिक्षकों का सहदय आभारी रहूँगी।

श्रीमती लिलेश्वरी साहू

बी.एस.सी. (Computer Science)

Batch (2014 - 2017)



गुरुकुल के सब गुरुजन ला पहिली शीशा नवावं मैं अब जब-जब नारी जनम धरवं, इन्हें पढ़े बर आवं मैं।

करना चाहुं गी अपनी मैं शुरुआत, आओ सुनाऊँ मैं आपको मेरे गुरुकुल की बात।

बात है ये उस दिन की जब मैं गुरुकुल में थी आई, समय लगा समझने में मुझे... बात मुझे कुछ दिनों बाद समझ में थी आई।

पहला दिन मुझे कुछ भी ना समझ में आया था, उस एक दिन में "Teacher" ने हमें जो पढ़ाया था।

लगे पूछने जब हम दोस्त एक दूसरे से!

अरे! कॉलेज के ये साल बीतेंगे हमारे कैसे? पर... गुरुकुल से ज्ञान बनाई मैंने अपनी पहचान।।

गुरुकुल में मैंने किया था B.Com 1st Year to Final Year.

सोची थी ना हो पाऊँगी मैं पास पर गुरुओं द्वारा दिए ज्ञान से 2013 में ही कर लिया मैंने Final Year को Clear... कॉलेज में रहकर मैंने खेले थे बहुत से स्पोर्ट जिसमें शिक्षकों द्वारा मुझे दिया गया हर बार Positive सपोर्ट!!

English की तो कलॉस थी, था नहीं मेरा मन पढ़ने का, खींची चली थी मैं मैदान की ओर क्योंकि मन तो था मेरे खेलने का।

कलॉस में थे दो दरवाजे जिसे अग्रेजी में कहते हैं डोर,

बाहर जाने का Permission लेने जाने लगी थी मैं खान मैडम की ओर।।

मुझको अपने पास आता देख, मैम ने पुछा मुझसे प्रश्न एक।

क्या हुआ डॉली, कुछ तो बोलो चल क्या रहा है तुम्हारे मन में, वो गहरा राज तो खोलो मैदान की ओर देख करके, मैंने कहा....

मैम मन नहीं है पढ़ने का मेरा Can I go? कहना था जिन्हें "Yes or No" वो कह गए मुझे Yes Dolly You can Go.

अब Teacher की क्या तारीफ करें हम कि वो कितने अच्छे हैं, हो कर भी ना होंगे हम कभी बड़े क्योंकि इनके ही तो बच्चे हैं।

बीता हुआ वो कल हमें

कितना याद आता है।

देखते हैं जब हम उस बीते पल को, तो

ये हमारा चेहरा और भी मुस्कुराता है।

बीते हुए यादों की बातें जब मैं अपने बच्चों को बताती हूँ।

जो कुछ भी सिखाया आपने मुझे मैं भी इनको सिखलाती हूँ।

हूँ मैं आपकी नटखट सी Student और आज मैं मेरे बच्चों की Sport Teacher "NSS" officer कहलाती हूँ।

डॉली यादव

बी. कॉम.

Batch (2011 - 2014)





ज्ञान का आलोक : गुरुकुल में मेरा अनुग्रह



मैं नेहा गायकवाड गुरुकुल महिला महाविद्यालय B.Sc. (Maths) की पूर्व छात्रा। मैंने 2021 में कॉलेज में एडमिशन लिया। यही से मेरे कॉलेज लाईफ की शुरुआत हुई।

कॉलेज के पहले दिन मैं थोड़ी उत्साहित और नर्वस भी थी। कॉलेज के पहले दिन सिर्फ मैं एक लड़की से बात की थी जो आज भी मेरी खास दोस्त है। मैं प्राफेसर्स से बात करने में असहज महसूस कर रही थी, लेकिन प्रोफेसर्स ने बहुत जल्दी सहज महसूस कराया।

कॉलेज प्रोफेसर्स :

प्रिंसिपल मैम : हमारी प्रिंसिपल डॉ. संध्या गुप्ता मैम जो प्रेरणादायक व्यक्तित्व में से एक है, जो न केवल अनुशासन और व्यवस्था का ध्यान रखती थी बल्कि हर सुबह क्लास के दौरे पर आती थी व बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयास करती है।

डॉ. वंदना अग्रवाल मैम : मैम रसायन शास्त्र की प्रोफेसर, हमें रसायन पढ़ाती थी। रसायन को इतना आसान उदाहरणों, प्रयोगों और दैनिक जीवन से जोड़कर समझाती थी। प्रेक्टीकल भी बहुत अच्छे से करवाती थी गलती होने पर बेटी बोलकर समझाती थी।

डॉ. अनुराधा मैम : हमें फिजिक्स की दुनिया का ज्ञान कराया। पहले मेरे से डेरिवेशन नहीं बनते थे जब मैम डेरिवेशन को आसान करके बताई तो मुझे फिजिक्स अच्छा लगने लगा। मेरा इस विषय पर रुचि भी बढ़ने लगी और कॉलेज में कभी-कभी मेडीटेशन भी करती थी माइंड रिलेक्स हो जाता था।

आपके मार्गदर्शन ने न केवल हमारा विषय मजबूत हुआ बल्कि छात्रों का आत्मविश्वास भी बढ़िया है। ऐसे प्रोफेसर्स किसी भी छात्र के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

डॉ. टीनु दुबे मैम : मैम हमें मैथ्स पढ़ाती थी। समझ में न आने पर दोबारा समझाती थी। मुझे कभी किसी को चिंगा की जरूरत ही नहीं पड़ी। लेकिन मैम का मैथ्स समझाने की स्पीड कभी-कभी तो मैं मैम को ही देखने लग जाती थी। दूसरे बार भी उसी स्पीड से बताती थी पर समझ आ जाता था।

डॉ. सीमा चंद्राकर मैम : हिन्दी प्रोफेसर और सांस्कृतिक प्रभारी भी हैं। मैम ने 1st year में हिन्दी ग्रामर पढ़ाया। वर्ण उच्चारण हमें बचपन की याद दिलाती थी। मैंने स्कूल में ग्रामर इतने अच्छे से नहीं पढ़ा, जितना मुझे कॉलेज में पढ़ने को मिला। पाठ्यक्रम की कहानी भी अच्छे से बताती थी, सभी ध्यान से कहानी को सुनते थे। मैम पढ़ाई के साथ हैल्थ से जुड़ी बातें भी बताती थी। मैम को हमारा डांस इतना पसंद था सभी Function में हमारा एक डांस तो बनता था।

डॉ. सिमरन मैम : हमारे कॉलेज की सबसे मिलनसार और खुले मिजाज वाली मैम। English की प्रोफेसर हमें English enjoyment के साथ पढ़ाती थी कभी बोरिंग ही नहीं लगता था। कॉलेज में कुछ भी function होता मैम हमेशा excited रहती थी और हमें भी Motivate करती थी।

वो दिन याद है जब आप मुझे final year में Gold medalist बनने के लिए अच्छे से पढ़ने को कहा था। आप ही के बजह से आज मैं Gold medalist बन पायी हूँ। यदि आप मुझे motivate नहीं करती तो पता



नहीं आज मैं Gold medalist होती भी की नहीं।
Thankyou मैम !

डॉ. आराधना मैम : मैं मैम से final year में मिली उनसे भी मेरी Bonding अच्छी रही।

अवन्तिका मैम : सभी प्रोफेसर्स अपने विषयों को जिम्मेदारी से पढ़ाते थे। सभी सब्जेक्ट का सिलेबस एकजाम के पहले तक कम्प्लीट हो जाता था। युनिट टेस्ट से हमारा प्रिपरेशन भी हो जाता था। बच्चे की भावनाओं को समझते थे। सभी प्रोफेसर्स का छात्रों के प्रति व्यवहार सहयोगपूर्ण था।

ऐसी पढ़ाई तो स्कूल में भी नहीं होती थी जितनी कॉलेज में पढ़ाई गई। सभी प्रैक्टीकल, प्रोजेक्ट, असाइनमेंट करवाए और बनवाए जाते हैं। कॉलेज में पुस्तकालय की भी व्यवस्था थी। समय-समय पर सेमीनार का आयोजन होता था जो हमारी पाठ्यक्रम, कैरियर और हेत्य से जुड़ा होता था। हमें इससे बहुत कुछ सीखने को मिला। फिजिक्स प्रो. के द्वारा एलईडी वर्कशॉप करवाया गया जिसमें हमने एलईडी लाईट बनाया और बेचा भी।

सच कहुँ तो सारे प्रोफेसर्स ने इतने अच्छे से पढ़ाया, समझाया कि मुझे एक विषय को फेवरेट बनाने का मन ही नहीं किया मेरी सभी विषयों में बराबर रुचि थी।

जो बनाए हमें सच्चा और अच्छा इंसान, दे रहीं सही गलत की पहचान, उन शिक्षकों को कोटि-कोटि प्रणाम !

कॉलेज में कुछ ना कुछ Function होता था और दिसंबर माह तो पूरा इवेंट में ही चला जाता था। सभी Student participate करने के लिए इच्छुक रहते थे। मैंने अपने कॉलेज लाइफ में सिर्फ डांस में भाग लिया था। स्टूडेट्स के साथ प्रोफेसर्स भी स्पोर्ट्स में

पार्टीसिपेट करते थे, बहुत ही अच्छा लगता था। इसी महीने Annual Function भी होता था।

दोस्त : कॉलेज ने मुझे नए दोस्त दिये। हमें तीनों वर्ष 1st बैंच पर बैठने को मिला। मेरे दोस्त हमेशा मेरा साथ देते थे किसी टॉपिक में समर्थ्य आने पर एक-दूसरे से डिस्कस कर लेते थे। कॉलेज के कैंटीन में बैठकर बाते करना, पुस्तकालय में चुपचाप पढ़ाई के बीच मुरक्कुराकर इशारे करना, परीक्षा के समय एक दूसरे की मदद करना, प्रोजेक्ट को मिलजुलकर पूरा करते थे, ये क्षण जीवन भर याद रहेंगे।

अच्छे दोस्त सितारों की तरह होते हैं, जो भले ही दिखाई नहीं देते हो पर हमेशा साथ रहते हैं !!

कॉलेज के 3 सालों में मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। मैं 2nd year में B.Sc (M) की सी आर बनी और फाइनल इयर में सचिव रही। मैंने ऐसा कभी नहीं सोचा था कि मुझे ऐस कॉलेज में पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

कॉलेज के प्रोफेसर्स, स्टॉफ तथा प्यून का छात्रों के प्रति उनका व्यवहार सरल और सहयोगपूर्ण रहा। मैंने कॉलेज के दौरान कोचिंग ज्वाईन नहीं किया। जो पढ़ी जैसा पढ़ी सब मेरे प्रोफेसर्स का एफर्ट था। मैं खुद भी मेहनत करती थी और आगे भी करती रहूँगी और अपने पैरेन्ट्स, प्रोफेसर्स और कॉलेज का नाम रौशन करूँगी।

मैं अपने सभी शिक्षकों का मेरे मार्गदर्शन और समर्थन के लिए धन्यवाद करना चाहुँगी। उन्होंने न केवल मुझे बेहतर ज्ञान दिया बल्कि एक अच्छा इंसान बनने के लिए प्रेरित भी किया।

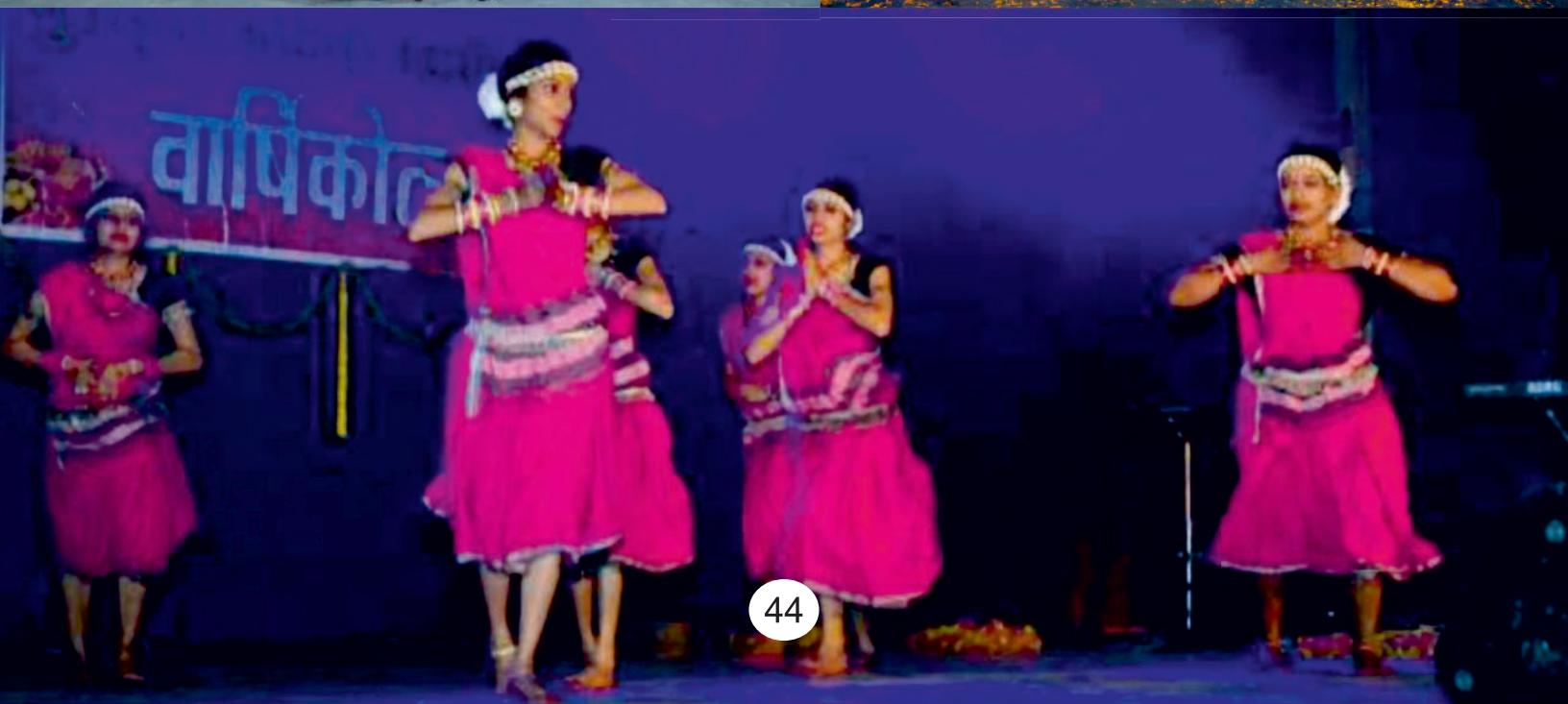
नेहा गायकवाड़

Batch (2021 - 2024)
B.Sc. (Maths) Gold Medalist
University Topper





शास्त्रकृतिक गतिविधि



“ऑपरेशन सिंदूर: सोफिया कुरेशी और व्योमिका सिंह का अद्यत्य शाहरा”



भारतीय सेना ने जब कश्मीर के पहलगाम क्षेत्र में ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया, तब महिला सैनिकों का बढ़ते नेतृत्व शावित का प्रतीक बनकर उभरा। इस ऑपरेशन में दो नाम विशेष रूप से

उभरकर सामने आए-

मेजर सोफिया कुरेशी और कैप्टन व्योमिका सिंह। दोनों ने ना केवल कठिन परिस्थितियों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, बल्कि साबित किया कि आज भारतीय सेना में महिलाएं हर मोर्चे पर मजबूती से खड़ी हैं।

मेजर सोफिया कुरेशी भारतीय सेना की उन गिनी-चुनी महिला अधिकारियों में है, जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी देश का नाम रौशन किया है। शांति मिशनों से लेकर आतंक विरोधी अभियानों तक सोफिया का नेतृत्व हमशा अनुशासन और साहस की मिसाल रहा है। ऑपरेशन सिंदूर में उन्होंने जोखिम भरे इलाकों को सटीक रणनीति से कवर किया और टीम को सुरक्षित आगे बढ़ाया।

वही कैप्टन व्योमिका सिंह अपनी तेज निर्णय क्षमता और अत्यधिक दबाव में भी शांत रहने के लिए जानी जाती है।

ऑपरेशन के दौरान उन्होंने धायल जवानों की सुरक्षित निकासी संचार व्यवस्था और ग्राउंड को-ऑर्डिनेशन जैसे महत्वपूर्ण काम संभाले। सबकी तत्परता ने अभियानकी सफलता में अहम भूमिका निभाई।

ऑपरेशन सिंदूर यह सिद्ध किया कि राष्ट्र की सुरक्षा में महिलाओं की भागीदारी केवल समर्थन तक

सीमित नहीं हैं, बल्कि वे नेतृत्व रणनीति और कार्यवाही-हर स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं।

सोफिया कुरेशी और व्योमिका सिंह जैसी बहादुर अधिकारी नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा है, जो यह विश्वास दिलाती है, कि साहस, समर्पण और देशभक्ति का रंग किसी एक रूप तक सीमित नहीं होता - यह हर भारतीय में बसता है।



दीक्षा कोल्हे
एम.कॉम. ३ सेम



“घर धार ही झ बन जाए”



जाता है।

यह एक अत्यंत दुखद और जटिल स्थिति है कि लड़की उस स्थान पर ही असहज महसूस करने लगती हैं, जिसे समाज सबसे सुरक्षित मानता है। घर के भीतर व्याप्त यह भय का वातावरण का इतना भारी बना देता है कि लड़की अपनी बात किसी को कहने का साहस तक नहीं जुटा पाती। वह हर दिन एक ऐसे मानसिक संघर्ष से गुजरती है जिसकी गहराई को वही समझ सकती हैं।

कई बार परिवार के कुछ पुरुष सदस्यों का व्यवहार ऐसा हो जाता है जो लड़की को असहज, असुरक्षित और मनोवैज्ञानिक रूप से कमजोर बना देता है। अनुचित नजरें, अवांछनीय निकटता या दबाव जैसा व्यवहार उसके भीतर गहरा डर पैदा कर देता है, वह जानती है कि उसके साथ अन्याय हो रहा है, परंतु परिवार टूटने की आशंका और अपनी बात विश्वास न किए जाने का भय उसे मौन रहने के लिए मजबूर कर देता है।

इस चुप्पी का असर धीरे-धीरे उसके आत्मविश्वास पर पड़ने लगता है। वह मन ही मन अपराधबोध महसूस करती है, स्वयं को ही दोष देती है और इस डर में जीती रहती है कि कहीं उसकी ही बात को गलत अर्थ न दे दिए जाए। घर की चारदीवारी में उत्पन्न यह भय लड़की को भीतर से तोड़ देता है और

उसकी आवाज स्वयं उसके लिए बोझ बन जाती है।

परिवार का सबसे बड़ा दायित्व है कि वह लड़की को सुरक्षित वातावरण दे और यह भरोशा दिलाए कि उसकी सुरक्षा किसी भी रिश्तों से अधिक महत्वपूर्ण है। गलत का विरोध ही परिवार की वास्तविक नैतिकता है- चाहे दोषी कितना ही अपना क्यों न हो।

जब घर सत्य के साथ खड़ा होता है, तब लड़की भय छोड़कर अपनी बात कह पाती है। उसकी आवाज का सम्मान मिलते ही उसका साहस और विश्वास किए से जाग उठता है। सुरक्षित घर मजबूत समाज की पहली शर्त है।

“लड़की की चुप्पी उसकी कमजोरी नहीं होती, बल्कि समाज की वह दीवार होती है, जो सच को सुनने से डरती है।”



दीक्षा कोल्हे
एम.कॉम. ३ सेम



मेरी बिट्ठिया



कल तक जो मेरे आँगन में
चहकती थी।
बात-बात पर मम्मी पापा
करती थी।
पता ही नहीं चला वो कब
इतनी बड़ी हो गई।
आज किसी और के आँगन

को चहकाने चली
मेरी बिट्ठियाँ अब ससुराल चली।

बात-बात पर जो रुठ जाती थी।
मम्मी से लड़कर अपनी हर बात मनवाती थी।
छोटी बहन पर अपना रौब जमाती थी
पर उस पर ही अपना प्यार लुटाती थी।
आज वो अपने नये सफर पर चली
मेरी बिट्ठियाँ अब ससुराल चली।

मुझे पता है बेटी, तुम जहाँ भी जाओगी
मेरा मान बढ़ाओगी
अपने व्यवहार से सबको अपना बनाओगी।
कभी किसी का दिल नहीं दुखाओगी।
मेरे संरक्षारों को अपने साथ लेकर चली
मेरी बिट्ठियाँ अब ससुराल चली।

बेटी तुम मेरा अभिमान हो, हमारे घर की तुम जान हो
सुख में दुख में मुझे हमेशा अपने साथ खड़ा पाओगी
कभी भी खुद को ना समझना परायी
तुम तो हमारी हो परछाई
हम सब की दुआएं साथ लेकर चली
मेरी बिट्ठियाँ अब ससुराल चली।

डॉ. कल्पना अग्रवाल

“ईमानदारी जरूरी है”



एक सेठ शहर में किसी
बड़े जमींदार से मिलने के लिए
आए। उनका मकसद जमींदार
से जमीन का एक बड़ा सौदा
करना था।

ट्रेन से उतरकर उन्होंने
रेल्वे स्टेशन से जमींदार के घर
तक के लिए टैक्सी कर ली। टैक्सी वाले ने उन्हें
जमींदार के घर पहुंचा दिया।

सेठ ने जमींदार को पैसे देने के लिए ब्रीफकेस
दूंदा तो ब्रीफकेस था ही नहीं। सेठ के चेहरे पर हवाइयां
उड़ने लगी।

तभी टैक्सी का चालक दरवाजे पर ब्रीफकेस
लेकर आ गया। सेठ की जान में जान आई। उसने टैक्सी
चालक से पूछा- इसमें कई लाख रुपये थे।

तुम्हारा मन नहीं डोला? टैक्सी चालक बोला-
नहीं, बेइमानी का मौका सबको मिलता है। मैंने इसे नहीं
लिया आज इसे रख लेता तो सभी टैक्सी वाले बदनाम
हो जाते। यह नुकसान कहीं बड़ा होता।

सेठ को उसकी यह बात छू गई। सेठ ने उसे
इनाम के रूप में कुछ पैसे दिए और उसकी प्रशंसा की।

कहानी का नैतिक शिक्षा है कि आपको हमेशा
ईमानदारी से काम करना चाहिए। और यदि आप कुछ
भी गलत करते हैं, तो यह आपके माता-पिता और
आपके सहकर्मियों सहित सभी लोगों को प्रभावित कर
सकता है।

तस्मि न कौसर
बी.कॉम. ३ सेम

चार दिनों के इस जीवन को, पर हम कितना जी सके हैं।



भरा पड़ा है सागर में जल,
पर कितना बन पाता बादल
मेघ जिसे विपुल बरसाता,
पर कितना रख पाता भूतल
वसुधा उसको करती अमृत
हम ही कितना पी सके हैं,

जिनमें ऋषियों ने मुनियों ने,
दो अक्षर का मंत्र दिया है,
राम नाम के महामंत्र को,
हम कितना ही ले सके हैं।
चार दिनों के इस जीवन को
पर हम कितना जी सके हैं।.....(3)

चार दिनों के इस जीवन को
पर हम कितना जी सके हैं।.....(1)

अगणित किरणें पड़ी धरा पर,
पर कितनी नयनों मे आई,
कुछ थोड़ी पलकों ने समेटी,
कितनी ही स्मृति रख पाई।
जगे नयनों के इन सपनों को
हम कितना ही देख सके हैं।

भूमि जल अग्नि नभ वायु,
पांच तत्वों से बनी प्रकृति
ये हमारे हैं, हम इनके हों,
जाने कब होगी यह दृष्टि।
कहीं प्रलय तो कहीं बीमारी
कहीं युद्ध की है महामारी
अंधोपयोग पर प्रकृति कोप को,
देखें कितना सह पाते हैं।

चार दिनों के इस जीवन को
पर हम कितना जी सके हैं।.....(2)

चार दिनों के इस जीवन को
पर हम कितना जी सके हैं।.....(4)

शब्दों का भंडार असीमित
जिनके कुछ अमृत शब्दों से
वेद-पुराण सदग्रंथ बने हैं,
अमृत से सदग्रंथ रचे हैं,

शशिकांत देशमुख

सदग्रंथ भी अनेक हैं लेकिन,
कितने वेद-पुराण रचे हैं,

“मेरे गांव तुएदण्ड की कहानी”



छत्तीसगढ़ के बालोद जिले में स्थित हमारा गाँव तुएदण्ड प्रकृति, संस्कृति और समृद्धि का सुंदर संगम है। चारों ओर फैले हरे-भरे खेत, मिट्टी की खुशबू और स्वच्छ हवा इस गांव को बेहद आकर्षक बनाते हैं।

गांव के लोग मेहनती सरल और आपस में मिल-जुलकर रहने वाले हैं। धान यहाँ की मुख्य फसल है बरसात के मौसम में लहलहाते धान के खेतों को देखकर मन को विशेष आनंद मिलता है। खेती-बाड़ी गांव का प्रमुख व्यवसाय है, लेकिन तुएदण्ड की पहचान केवल कृषि तक ही सीमित नहीं है। गांव के पास ही लौह खदान भी है जो कि ग्रामीणों को रोजगार प्रदान करती है और गांव की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाती है।

गांव के बीच स्थित प्राचीन मंदिर “महामाया मंदिर” श्रद्धा और आस्था का केन्द्र है, त्योहारों के समय यहाँ विशेष पूजा और आयोजन होते हैं, जिसमें पूरा गांव रंगों और उमंग से भर उठता है। पास ही बना बोइरडीह बांध गांव की शान है, यह बांध खेतों की सिंचाई में सहयाक होने के साथ-साथ ग्रामीणों के लिए धूमने और पिकनिक मनाने का एक खुबसूरत स्थल भी है। सूर्यास्त के समय बांध का दृश्य मन को मोहलेता है।

शिक्षा और विकास के क्षेत्र में भी गांव धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। प्राथमिक विद्यालय और छोटा बाजार ग्रामीणों की जरूरतें पूरी करते हैं। होली, दीपावली और हरेली जैसे छत्तीसगढ़ी त्योहार यहाँ बड़े उत्साह और पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ मनाएँ जाते हैं।

हमारा तुएदण्ड सिर्फ एक गांव नहीं बल्कि हमारी मिट्टी, हमारा पहचान और हमारा गर्व है। यहाँ के धान के खेत शुद्ध हवा और लोगों का अपनापन हर आगंतुक को अपनेपन का अहसास करता है।

हरिका नेताम
बी.कॉम. ३

“ जरूरी है क्या ? ”

बिखरी-बिखरी सी
मेरी जिन्दगी है,
फिर भी मेरा संवरना, जरूरी है
क्या ?

मौसम की तरह लोग खुद को
बदलते हैं,
मेरा भी मुझे बदलना, जरूरी है
क्या ?

छोटी सी जिन्दगी है मेरी,
उस पर भी इतना बोझ होना, जरूरी है क्या ?
मेरी हँसी मुझे प्यारी है,
पर उसका उपयोग भी नापतौलकर करना,
जरूरी है क्या ?

जैसी भी हँड़ठीक हु मैं
मेरा बाकियो सा होना, जरूरी है क्या ?
मेरा अस्तित्व भी है लेकिन,
मेरा खुद को दूसरों के लिए मिटाना, जरूरी है क्या ?
बिखर भले ही जाऊँ मैं,
पर मेरे अपनों के सामने मुस्कुराना, जरूरी है क्या ?
हँ एक औरत हु मैं,
पर मुझे पर बंदीशे लगाना, जरूरी है क्या ?

मुस्कान शेख
बी.सी.ए. ३ सेम

“अनोखे रिश्ते”



हम मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं, हममें बुद्धि के साथ विवेक भी है। हमारे लिए रिश्ते नाते बहुत मायने रखते हैं। जन्म लेते ही रिश्तों की एक डोर शुरू हो जाती है। जिसमें सबसे पहले माँ-बाप, भाई-बहन, दादा-दादी, नाना-नानी आदि हैं और इन्हीं रिश्तों से परिवार बनता है।

हम जन्म लेते ही अनेक रिश्तों में बंध जाते हैं। लेकिन माँ-बाप का ही एक ऐसा रिश्ता है जो सदैव हमारे लिए सर्वोपरि है। मेरा मानना है कि रिश्तों के लिए अगर सबसे जरूरी कोई चीज है तो वो है प्यार, रिश्ता चाहे दोस्ती का हो या कोई और एक प्यार ही है जो रिश्तों में मिठास पैदा करता है, प्यार का एहसास ही काफी है रिश्तों को जोड़ने के लिए।

जब मैं कभी अकेलापन महसूस करती हूँ तब वो पल याद करती हूँ जो मुझे मुस्कुराने पर मजबूर कर दे मुझे अपनों के होने का एहसास कराती है वो अपनों के साथ छत पर गुजारे हुए लम्हों की बातों पे जोर-जोर से हँसना, वो माँ को परेशान करना और नाराज होने पर उन्हें मनाना। मेरा मानना है कि हम रिश्तों को तभी निभा सकते हैं जब हमें रिश्तों कि समझ होगी और मैं हमेशा रिश्तों को अहमियत देती हूँ, अपनों को खुश करने का मौका नहीं छोड़ती और मैं सभी तक अपना एक सदेश पहुँचाना चाहुँगी कि अगर कभी किसी को खुश करने का मौका मिले तो उसे छोड़ना मत क्योंकि वो रिश्ते ही होते हैं जो किसी मायूस के चेहरे पर मुस्कान ला देती है।

“रिश्ते पंछियों के समान होते हैं,
जोर से पकड़ने तो मर जाते हैं,
धीरे से पकड़ो उड़ जाते हैं
लेकिन प्यार से पकड़ के रखो तो,
जिन्दगी भर साथ में रहते हैं।”

शौर्या बिश्वास
एम.कॉम. ३ सेम

“माँ-बाप के प्रति आवाराॅं”

माँ - जो सुबह की पहली किरण के साथ, मेरे चेहरे की मुस्कान ढूँढ़ लेती है। जो अपनी अधूरी नींद को छोड़कर, मेरे सपनों की राह बनती है।



उसकी ममता में ऐसा सागर है, जहाँ हर दुख सुख बन जाता है। वो कभी शिकायत नहीं करती, बस दुआओं में मेरा नाम जोड़ देती है।

पिता- जो चुपचाप तपता सूरज है, जो अपनी थकान को हँसी से ढँक लेता है। जिसके हाथों की लकीरों में, घर की जिम्मेदारिया लिखी है।

वो कम बोलते हैं, पर हर शब्द में, जीवन का अनुभव सिमटा हुआ है। जब मैं डरती हूँ गिरने से, तो वही पीछे खड़े होते हैं। बिना कुछ कहे, सिर्फ विश्वास बनकर।

माँ की ममता और पिता का त्याग, दोनों मिलकर जीवन का अर्थ बनते हैं। उनके बिना ये संसार अधूरा है, उनके साथ ही मन को ठहराव मिलता है।

निशा कुमारी
बी.कॉम. ३ सेम

“कॉलेज के दिन : शिर्फ़ डिग्री नहीं, जिंदगी का सबक”



कॉलेज की दहलीज पर कदम रखना, एक नए सफर की शुरूवात है। यह सिर्फ़ कक्षाओं और परीक्षाओं का दौर नहीं बल्कि खुद को तलाशने, अपनी सीमाओं को तोड़ने और भविष्य की नींव रखने का समय है। बहुत से छात्र इसे केवल डिग्री हासिल करने का जरिया मानते हैं, लेकिन यह समय जिंदगी के सबसे महत्वपूर्ण सबक हमें सिखाता है।

डिग्री से बढ़कर है अनुभव : कॉलेज के चार या पाँच साल सिर्फ़ किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं होते, यह वह समय है जब आप अपनी रुचि के क्षेत्र में प्रयोग कर सकते हैं, नई - हॉबीज अपना सकते हैं और ऐसे काम कर सकते हैं, जिनसे आपको खुशी मिलता है।

चाहे वह डिबेट क्लब में भाग लेना हो, हर स्पोर्ट्स टीम का हिस्सा बनना हो, या कॉलेज फेरिट्वल का आयोजन करना हो, हर अनुभव आपको एक बेहतर इंसान बनाता है।

यह समय आपको सिखाता है कि सफलता सिर्फ़ अच्छे ग्रेड से नहीं बल्कि आपके समग्र विकास से आता है। गलतियों से सीखना जरूरी है, कॉलेज वह सुरक्षित जगह है जहाँ आप गलतियाँ करने से डरते नहीं हैं। कई बार हम सोचते हैं कि लोग क्या कहेंगे? या अगर मैं फेल हो गया तो? लेकिन याद रखें, हर असफलता एक नया सबक लेकर आती है। अगर आप किसी प्रोजेक्ट में विफल हो जाती हैं, तो खुद आपको सिखाता है कि अगली बार कैसे और बेहतर करना है। यह असफलता ही है जो आपको सफलता का रास्ता दिखाता है।

नेटवर्किंग का महत्व : कॉलेज में केवल दोस्त ही नहीं बल्कि भविष्य के सहकर्मी और जीवन भर के साथी भी मिलते हैं। अपने आस-पास के लोगों से जुड़े, उनसे सीखें और अपने विचारों को साझा करें। यह नेटवर्किंग न सिर्फ़ प्रोफेशनल लाइफ में बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी बहुत मदद करेगी। जो लोग आज आपके साथ हैं, वे कल आपके सबसे बड़े समर्थक बन सकते हैं।

खुद पर विश्वास रखें : कई बार ऐसा समय आता है जब आप खुद पर संदेह करने लगते हैं, आपको ऐसा लगता है कि आप दूसरों से पीछे हैं या आप किसी काम के लिए काबिल नहीं हैं। यही वह समय है जब आपको खुद पर भरोसा करना है। याद रखें, आप अपनी यात्रा पर हैं, और हर का अपना सफर होता है। दूसरों से अपनी तुलना करने के बजाय अपनी प्रगति पर ध्यान दें। जैसा कि कहा जाता है - शारू करने के लिए आपको महान होने की जरूरता नहीं है, लेकिन महान बनने के लिए आपको शारूवात करनी होगी।

तो मेरे प्रिय साथियों आपने कॉलेज जीवन को सिर्फ़ गुजारिये नहीं, बल्कि इसे पूरी तरह से जीए। हर पल का आनंद लें, हर चुनौती से सीखें, और हर अवसर को गले लगायें। यह समय दोबारा नहीं आएगा, अपनी अपनी पढ़ाई पर ध्यान दें, लेकिन साथ ही अपने जुनून को भी जिंदा रखें। यकीन मानिए जब आप कॉलेज से बाहर निकलेंगे तो आपके पास एक डिग्री नहीं, बल्कि जीवन का सबसे बेहतरीन यादें और अनुभव होंगे, जो आपको भविष्य की हर चुनौती का सामना करनेके लिए तैयार करेंगे।

हर्षिका टंडन
बी.कॉम. ३ सेम

“AI और नैतिक चुनौतियां”



क्षमता छीन ली?

Artificial Intelligence हमें शक्ति देती हैं, पर दिशा देना हमारा कार्य है।

आज हम एक ऐसे आधुनिक युग में हैं, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमता हमारे हर कार्य में शामिल है:

चाहे बात स्मार्टफोन की हो, बैंकिंग की हो, शिक्षा की या मोबाईल में वॉइस असिस्टेंट हो, ऑनलाईन खरीदारी हो या स्वाचालित गाड़ियाँ हर जगह AI मौजूद हैं, लेकिन सवाल ये उठता है कि क्या हम इस तकनीक के नैतिक पहलुओं का सही ढंग से समझ रहे हैं?

क्या यह तकनीक हमारे नियंत्रण में है? हम इसके नियंत्रण में आ रहे हैं?

चलो ऐसी तकनीक बनाए जो बुद्धिमता हो पर इंसानियत से भरी हो।

AI विकास ने इंसान को अपार संभावनाएँ दी हैं, पर इसके साथ-साथ कई समस्यायें भी हैं।

जब किसी AI System का प्रयोग ऐसे निर्णयों के लिए किया जाता है, जो किसी व्यक्ति की Privacy Safety या जीवन को प्रभावित करते हैं, तो वहा Ethics यानी “नैतिकता” का सवाल उठना स्वाभाविक है।

हमने मशीनें बनाई थी हमारी मदद के लिए, पर अब सवाल है क्या कहीं हम खुद ही उनकी मददगार बन रहे हैं? या कृत्रिम बुद्धिमता ने सोचने की ताकत दी, पर क्या उसने महसूस करने की

AI का सबसे बड़ा Ethical Issue हैं, Bias and Discrimination AI उतना ही निष्पक्ष होता है, जितना निष्पक्ष Data उस पर Train किया गया हो।

अगर Data Baised है, जो AI के Decisions भी गलत होंगे।

उदाहरण के तौर पर किसी Recruitment System में अगर पिछले Data में Gender / Caste Bias है, जो AI भी उसी तरह का भेदभाव Behaive दोहराएगा।

इसलिए यह जरूरी है कि हम Data को निष्पक्ष और पारदर्शी रखें।

दूसरा बड़ा मुद्दा है Privacy and Surveillance आज AI के जरिये हर व्यक्ति की Personal Detail को Easily analyze किया जा सकता है।

हमारे Search, Photos, Massages OTP और सब कुछ Record किया जा रहा है।

ऐसे में यह समझना जरूरी है कि हर सुविधा के साथ-साथ खतरा भी उतना ही अधिक हो सकता है।

अगर हम सावधान न रहे तो हमरी निजता खत्म हो सकती है।

इसी तरह Job Displacement रोजगार की कमी भी एक गंभीर समस्या है।

Automation के कारण कई पारंपरिक नौकरियां खत्म हो रही हैं।

Machines अब Human की जगह काम कर रहे हैं, जिससे बेरोजगारी बढ़ ही रही है, पर कम ही हो रही है।

इसलिए जरूरी है कि हम नए Skills सीखें



Smart Learning

समय और तकनीकी परिवर्तन के साथ खुद को अपडेट रखें।

एक और बड़ा Ethical Concern है Autonomous Weapons.

AI से नियंत्रित हथियार अगर किसी गलत हाथों में चले जाए, तो वे मानवता के लिए खतरा बन सकता है।

हमारे भविष्य की सुरक्षा इसी बात पर निर्भर करेगी कि ऐसी Technology का Use करे या उपयोग कितनी जिम्मेदारी से करते हैं।

और आखिर मे हम बात करते हैं Accountability अगर कोई AI System गलत फैलसा लेता है, जैसे किसी को गलत Medical Report देना है या गलत सजा सुनाना।

तो अब आपही बताइये कि जिम्मेदार कौन होगा? Developer, User या खुद AI?

इसका स्पष्ट उत्तर आज भी शायद ही किसी को मिला होगा।

Ethics हमारे भविष्य और प्रगति के विरुद्ध नहीं, बल्कि उसे दिशा देने वाली रौशनी से है।

AI को रोकना समाधान नहीं है, बल्कि उसे नैतिक दिशा देना आवश्यक है।

हमें ऐसे AI System Developer करने चाहिए जो-

मानव कल्याण के लिए कार्य करे।

पारदर्शी हो।

और नैतिक सीमाओं का भी सम्मान हो।

मशीन सेच सकती है, पर सही और गलत का निर्णय केवल मनुष्य ही कर सकता है।

AI निश्चित रूप से मानव सभ्यता के लिए



Customer Support & Sales

वरदान है, परंतु इसका उपयोग गलत दिशा मे या गलत लोगों की संगत में होगा ता यह समाज के लिए अभिशाप भी बन सकता है। इसलिए यह हमारी जिम्मेदारी और कर्तव्य है कि हम Technology को मानवता की सीमाओं के भीतर रखें।

AI को हमें ऐसा बनाना है जो इंसान का साथी बने, उसका प्रतिस्थान नहीं।

Use Technology Wisely क्योंकि आज का नैतिक निर्णय ही कल की सुरक्षित दुनिया और हमारे भविष्य का निर्माण करेगा।

हमारी Awareness ही हमारी असली सुरक्षा है। AI का उपयोग करे, इसका दुरुपयोग नहीं.....।

टी. महिष्मा
बी.सी.ए. ३ सेम



यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवती भारत ।
अभ्युत्थानमर्धमस्य तदाऽऽत्मनं सृजाम्यहम् ॥

पृष्ठशान्ति

सबकुछ हुआ समाप्त, महाभारत के महासमर में ।
नाम शेष हो गये युवा, सब ग्रामों और नगर में ॥
सत्य-न्याय स्थापित करने, रचा युद्ध यह भारी ।
धन-जन, जीवन-मूल्य, सभ्यता नष्ट हो गयी सारी ॥
किया पाण्डवों ने तदन्तर छत्तीस वर्षों का शासन ।
ध्वंस सभ्यता-संस्कृति का फिर किया पुनः संरक्षण ॥
तब दे राज्य परीक्षित को, वे किये हिमालय कूच ।
कलियुग का प्रारंभ हुआ पर था भारत मजबूत ॥
तीन हजार वर्ष तक भारत रहा अलंध्य-अखंड ।
उसके ब्रह्म-शास्त्र तेज का, तपता सूर्य प्रचंड ॥

नहीं किसी का साहस था कि देखे दृष्टि गड़ाकर ।
भारत की सीमा तक आये, अपने कदम बढ़ाकर ॥
सारे भारत में हसती थी, एक सांस्कृतिक धारा ।
इससे आप्लावित था सारा, भारत देश हमारा ॥
चक्रवर्ती सप्त्राट किया करते थे इसकी रक्षा ।
न्याय-धर्म के लिए सदा रखकर बलिदानी इच्छा ॥
एक छत्र के नीचे सारा भारत रहा सुरक्षित ।
हुई व्यवस्था कालांतर में धीरे-धीरे खंडित ॥
छोटे-छोटे राज्य हो गये जो स्वायत्त सभी थे ।
किसी एक मजबूत केन्द्र से पर वे बंधे नहीं थे ॥

तिस पर भी भारत जग में, सबसे समृद्ध रहा था ।
वैभव से, धन से वह “सोने की चिड़िया” होता था ॥
जगद्गुरु वह रहा ज्ञान में, बल में अनुपम वीर ।
त्याग, दान, तप की अनुपम गाथा की बही समीर ॥
टुकड़ों में जब बंटी शक्ति तक साहस किया सिकंदर ।
भारत विजय हेतु आया वह, यवन शक्ति को लेकर ॥
पुरु से कठ, मालव, क्षुद्रक गणराज्यों से टकराया ।
पस्त हुआ वापस पथ पर, वह अपने प्राण गंवाया ॥
फिर सेत्यूक्स, डेमेट्रियस, यवनों ने किया चढ़ाई ।

युद्धभूमि में, चंद्रगुप्त के हाथों
मुह की खाई ॥



केवल भारत को ईश्वर ने,
अनुपम देश बनाया ।

सभी ओर से सीमाओं को
प्रकृति प्रदत्त बनाया ॥

जब भी हुआ आक्रमण इस पर,
पश्चिम से ही आया ।

भूमि मार्ग से विधूमयों ने, इसको बहुत सताया ॥
इस विशाल देश को खंडित और विपन्न बनाने ।

पश्चिम के सारे प्रयत्न, इसका अस्तित्व मिटाने ॥
यह सहस्र सदियों के ही, संस्कारों का फल है ।

हर विपरीत परिस्थिती में भी, रहा अजेय-अटल है ॥
हमने दिया ज्ञान दुनिया को, संख्या का अक्षर का ।

शून्य, दशमलव, गणित ज्यामिति, कण-कण में ईश्वर
का ॥

अंग्रेजों की बर्बरता, अन्याय, लूट, आतंक ।

धीरे-धीरे निगल रहे थे, भारत माँ के अंग ॥

गोरों से पहले भारत की, सोने जैसी काया ।

लूट निरंतर पीतल से भी बदतर उसे बनाया ॥

अपनी अधकचरी, अपूर्ण संस्कृति को थोपा हम पर ।

ईसा मत को फैलाया, छल-बल से मतान्तरण कर ॥

हम को हीन बताने उसने, हर उपाय अपनाए ।

शिक्षा और इतिहास सभी के झूठे पाठ पढ़ाए ॥

बंदर बांट किया भारत में, भेद बहुत फैलाया ।

तब वीरों ने उन्हें भगाने क्रांति का मार्ग अपनाया ॥

टुकेश्वरी देवांगन

बी.सी.ए. ३ सेम



महिला सशक्तिकरण



प्रस्तावना - स्त्री को सृजन की शक्ति माना जाता है। इस शक्ति को विकसित कर उसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय, विचार, विश्वास धर्म और उपासना की स्वतंत्रता अवसर की समानता का सु. अवसर प्रदान करना महिला सशक्तिकरण का आशय है।

महिला सशक्तिकरण का आगय अर्थ - महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार लाना यह महिला सशक्तिकरण का अर्थ है जिससे उन्हें बेरोजगार शिक्षा आर्थिक तरकी में आदि में बराबरी के मौके मिल सके, इससे वह सामाजिक स्वतंत्रता और तरकी प्राप्त कर सकें।

महिला साक्षिकरण की आवश्यकता - भारत में महिला सशक्तिकरण के बहुत से कारण हैं जैसे कि -

1. आज कई भारतीय महिलाएँ राजनैतिक तथा प्रशासनिक पदों पर पदस्थ हैं, फिर भी ज्यादातार सामान्य महिलाएँ अपने घरों में रहने के लिए बाध्य हैं और उन्हें स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं।
2. शिक्षा के मामले में भारत में महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा काफी पीछे हैं।
3. भारत में महिलाएँ सशक्तिकरण का मुख्य कारण भुगतान में भारत में असमानता भी है।
4. भारत में लगभग 50 प्रतिशत आबादी केवल

महिलाओं की है जो कि अभी भी सशक्त नहीं है और कई सामाजिक प्रतिबंधों से बंधी है।

5. भारत में लैंगिक असमानता के कारण परिवार और समाज में महिलाओं के प्रति भेदभाव किया जाता है।

महिला सशक्तिकरण मार्ग में आने वाली बाधाएँ - भारतीय समाज में कई तरह के रिवाज, मान्यताएँ और परम्पराएँ शामिल हैं। इनमें से कुल पुरानी मान्यताएँ और परम्पराएँ भारत में महिला सशक्तिकरण में बाधा सिद्ध होती है।

1. पुरानी और रुढ़ीवादी विचार धारा - इनके कारण भारत में कई क्षेत्रों

में महिलाओं के घर छोड़ने पर पाबंदी होती है। महिलाएँ भी पुरुषों को पुरुषों से कम नहीं समझती हैं।

2. कार्य क्षेत्र में महिलाओं का होने वाला शोषण - जैसे कि सेवा उद्योग सॉफ्टवेयर उद्योग शैक्षिक संस्थाएँ और अस्पताल आदि क्षेत्र इस समस्या से ज्यादा प्रभावित हैं।

3. महिला अशिक्षा - महिलाओं में अशिक्षित और बीच में पढ़ाई छोड़ने से समस्याएँ महिला सशक्तिकरण में बाधा उत्पन्न करती हैं।

4. बाल-विवाह - 13 वर्ष से पहले अब भी कई लड़कियों की शादी कर दी जाती है इससे लड़कियों का विकास रुकता है।

5. कन्या भ्रूण हत्या - भारत में लिंग के आधार पर गर्भपात महिला सशक्तिकरण के रास्ते में आने वाली एक सबसे बड़ी बाधा है।

सरकार की भूमिका - भारत सरकार द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कई सारी योजनाएँ चलाई जाती हैं। इसमें से कुछ मुख्य योजनाएँ मनरेगा

सर्व शिक्षा अभियान, जननी सुरक्षा योजना आदि है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय और भारत सरकार द्वारा भारतीय महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए निम्नलिखित योजनाएं भी चलाई जा रही हैं-

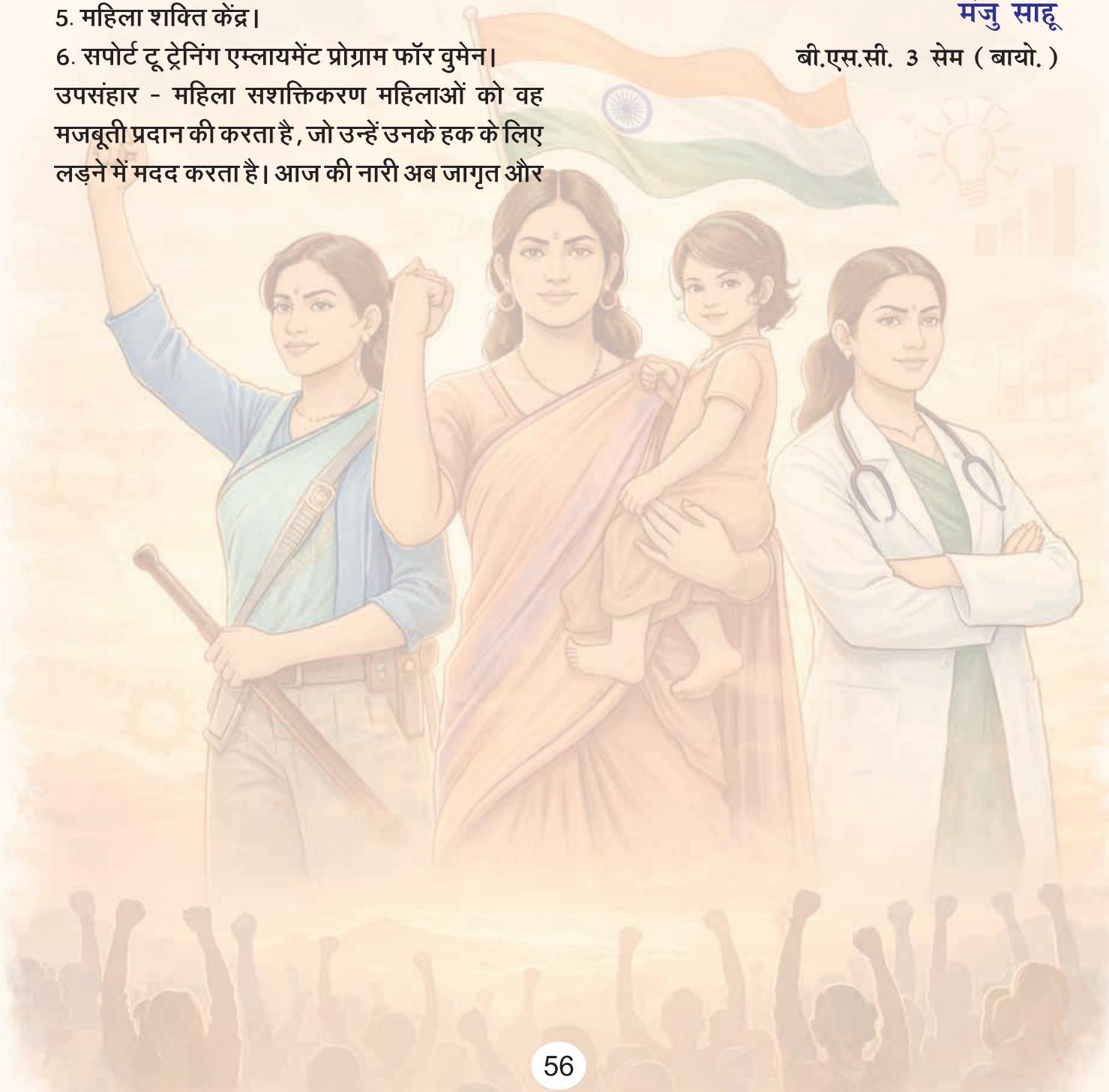
1. बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं योजना।
2. महिला हेल्प लाइन योजना।
3. उज्जवला योजना।
4. पंचायती राज योजनाओं में महिलाओं की आरक्षण।
5. महिला शक्ति केंद्र।
6. सपोर्ट टू ट्रेनिंग एम्लायमेंट प्रोग्राम फॉर वुमेन।

उपसंहार - महिला सशक्तिकरण महिलाओं को वह मजबूती प्रदान की करता है, जो उन्हें उनके हक के लिए लड़ने में मदद करता है। आज की नारी अब जागृत और

सक्रिय-हो चुकी है। वह पढ़ लिखकर स्वतंत्र हुई है। आज महिला पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर बड़े-से - बड़े क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहीं हैं। मजदूरी से लेकर अंतरिक्ष में जाने तक के हर क्षेत्र में वह अपनी योग्यता साबित कर रहीं हैं। है। हमारा कर्तव्य है कि हम महिलाओं का सम्मान करें और उन्हें आगे बढ़ने का मौका दें।

मंजु साहू

बी.एस.सी. ३ सेम (बायो.)





कानूनिक स्वास्थ्य : खुशहाल जीवन की आसाली ?



तेज रफ्तार वाली इस दुनियां में हम सब अपनी मंजिल पाने की दौड़ में लगे हैं। लेकिन इस भागदौड़ में एक चीज हम अक्सर भूल जाते हैं - अपने मन का ख्याल रखना।

जैसे शरीर को स्वस्थ रहने के लिए पौष्टिक भोजन और आराम चाहिए, वैसे ही मन को भी देखभाल और सुकून की जरूरत होती है।

मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health) का मतलब सिर्फ बीमार न होना नहीं है, बल्कि अपने विचारों, भावनाओं और व्यवहार में संतुलन बनाए रखना है। जब हमारा मन शांत होता है, तो जीवन की हर चुनौती का सामना हम मुस्कान के साथ कर सकते हैं।

आज के समय में तनाव, चिंता, अवसाद और अकेलापन जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। सोशल

मीडिया पर चमकती जिंदगियाँ अक्सर हमें अपने जीवन से असंतुष्ट कर देती हैं। ऐसे में जरूरी है कि हम अपने मन की बात सुनें - थोड़ी देर खुद के लिए रुकें, सांस लें, मुस्कुराएँ और महसूस करें कि जब कुछ परफेक्ट होना जरूरी नहीं बस सुकून होना चाहिए।

योग, ध्यान, संगीत, किताबें और प्रियजनों के साथ समय बिताना ये सब मन को सूकुन देने वाले छोटे-छोटे उपाय हैं और अगर कभी मन ज्यादा बोझिल लगे, तो किसी भरोसेमंद व्यक्ति या विशेषज्ञ से बात करने में हिचकिचाएँ नहीं मदद मांगना कमजोरी नहीं बल्कि आत्म देखभाल की निशानी है।

अंत में यह कहना उचित होगा कि -

“ स्वस्थ मन ही सच्ची सफलता की पहचान है, क्योंकि मुस्कुराता दिल ही जीवन को खुबसूरत बनाता है। ”

अनू मनाडे

कहाँ गया वर्तमान ?



जो बीत गया उसका विचार
जो घटा नहीं उसकी चिंता का
भरमार
कहाँ गया वर्तमान ?
कहीं छिपा-सा मुस्कुराता हुआ
अतीत
मानो हँसता हो तुम्हीं पर

जब था तब बीत जाने की आकांक्षा
नहीं है तो यादों की पराकाष्ठा
अतीत तो मानो यूँ ही है विद्यमान
किंतु कहाँ गया वर्तमान ?
भविष्य की खिड़कियों से कुछ देने की वह आशा
सफलता की कामना से वह जन्म लेती निराशा

किसी की आन तो किसी की शान
कहाँ गया वर्तमान ?



भूमिका साहू
बी.कॉम. ३ वर्ष



“ जीवन क्या है ? ”



जीवन एक अद्भुत और जटिल अनुभव है, जो जन्म और मृत्यु के बीच की यात्रा को समेटे हुए है। यह केवल श्वांस लेने या जैविक प्रतिक्रियाओं तक सीमित नहीं है। बल्कि भावनाओं, विचारों, संबंधों और अनुभवों का भी संगम है। जीवन को प्रकृति की सबसे बड़ी रचना माना जा सकता है। जहाँ मनुष्य ज्ञान, कर्म और मूल्य के आधार पर अपने अस्तित्व को अर्थ देता है। दार्शनिक दृष्टिकोण से जीवन आत्म-खोज, सत्य की तलाश और आत्मा के विश्वास/विकास की प्रक्रिया है, जब कि वैज्ञानिक दृष्टि से यह कोशिकाओं, उर्जा और विकास की निरंतरता है। अंततः जीवन का उद्देश्य केवल अस्तित्व नहीं बल्कि उसे सार्थक बनाना है - अपने और दूसरों के लिए।

जीवन प्रकृति का सबसे अद्भुत और रहस्यमय उपहार है। यह केवल जैविक प्रतिक्रियाओं का परिणाम नहीं, बल्कि आत्मचेतना और अनुभवों की गहरी यात्रा है। जीवन एक सतत् प्रवाह है- सुबह से शाम तक की दिनचर्या, संघर्षों से भरी राह और सपनों से सजी उम्मीदों की डोर। यह केवल जन्म से मृत्यु तक का सफर नहीं बल्कि उन अनगिनत अनुभवों और भावनाओं का नाम है जो हमें इंसान बनाते हैं।

जीवन श्वांस और धड़कनों से आगे बढ़कर अनुभवों, मूल्यों और कर्मों का संगम है। यह अवसर है सृजन का आत्म-विकास का और समाज व प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व निभाने का। जीवन का उद्देश्य केवल जीना नहीं बल्कि जीने को अर्थपूर्ण और प्रेरणादायी बनाना है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जीवन का आधार उर्जा कोशिकाएँ, जल, वायु और अनुवांशिक तत्व (डी.एन.ए.) है। विकासवाद के अनुसार जीवन सतत् परिवर्तन और अनुकूलन की प्रक्रिया है। विज्ञान जीवन को प्रजनन-अनुवांशिकता और परिवेश के साथ सामंजस्य

स्थापित करने की क्षमता के रूप में देखता है।

दार्शनिक दृष्टिकोण से जीना मात्र जीना नहीं है। बल्कि उसे समझना और सार्थक बनाना है। दार्शनिक मानते हैं कि जीवन आत्म-खोज, सत्य की तलाश और आंतरिक शांति की यात्रा है। गीता उपनिषद और अन्य ग्रंथ जीवन को कर्म, धर्म और मोक्ष की साधना मानते हैं। जीवन का असली अर्थ अपने अस्तित्व को पहचानना और दूसरों के लिए मूल्यवान बनाना है।

जीवन मात्र एक छोटा सा अक्षर है, परंतु इसे समझने में हमारी आधे से ज्यादा आयु बीत जाती है। यह एक यात्रा है, जिसमें जन्म, बचपन, यौवन, मृत्यु यह चार पड़ाव आते हैं। चारों पड़ाव का अलग सुख-दुख और सीख है।

कवियों की दृष्टि में जीवन का वास्तविक मूल्य उसकी क्षणभंगुरता और अनिश्चितता में छिपा है क्योंकि यह अनिश्चित है, इसलिए हर क्षण को सार्थक बनाना आवश्यक है।

अंततः जीवन एक यात्रा है, जिसमें रोजमर्रा की दिनचर्या, स्त्री का सृजन और साहित्य की गहराई - सब मिलकर इसे पूर्ण बनाते हैं। जीवन का सार यह नहीं है कि हम उसे झेलें और समय काटें।

महादेवी वर्मा जी ने जीवन को पीड़ा और करुणा का सौंदर्य कहा -

“पीड़ा ही जीवन की गुरु है।”

रविन्द्र नाथ टैगोर के शब्दों ने जीवन को संगीत और सृजन की धारा बताया है।

“जीवन वह नहीं जो हमने पाया बल्कि वह है जो हर पल रचते हैं।”

पूरे लेख से यह सिद्ध होता है कि “जीवन का सार यह नहीं की हम कितने दिन जिए बल्कि यह है कि उन दिनों को कितनी गहराई और अर्थपूर्ण ढंग से जिया।”

महक मेघानी

बी.कॉम. 2

“भक्ति”



भक्ति एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ “देवता के प्रति श्रद्धा या प्रेम है।” यह एक अध्यात्मिक मार्ग है जो एक उच्च शक्ति के प्रति समर्पण को बढ़ावा देता है तथा प्रेम नम्रता और करुणा को बढ़ाती है।

भक्ति क्यों करनी चाहिए, इसके लिए हम सबसे पहले श्रीमद् भगवत् गीता की ओर चलते हैं। भगवत् गीता के अध्याय 9 के श्लोक नंबर 33 एवं अध्याय 18 श्लोक नंबर 65 में गीता के ज्ञानदाता ने कहा है कि हे अर्जुन!

मुझमे मन लगाने वाला हो, मेरा भक्त बन मेरा पूजन करने वाला हो, मुझको प्रणाम करने वाला हो, ऐसा करने से मुझे ही प्राप्त होगा।

भक्ति करना इसलिए अनिवार्य है क्योंकि बिना भक्ति के हमारा मोक्ष संभव नहीं है। जैसे रोग नाश के लिए औषधि का सेवन करना अनिवार्य है, ऐसे ही अहम कल्याण के लिए भक्ति करना अनिवार्य है।

भक्ति शुरू करने के लिए नियमित और व्यवस्थित तरीके से शुरूवात करें। सबसे पहले एक शांत जगह पर बैठे और प्रार्थना के साथ आपने मन को भगवान के प्रति खोले। आपको जो भी भगवान प्रिय लगते हो उनकी उपासना और साधना करें। भगवान केवल एक है, उनके रूप अनेक हैं। इसके बाद पवित्र ग्रंथों का पाठ करें और उन पर ध्यान करें फिर जो भी आप सीखते हैं उसे अपने जीवन पर लागू करने का प्रयास करें। जप और कीर्तन भी भक्ति के महत्वपूर्ण

तरीके हैं।

भक्ति का एक मार्ग उपवास भी है। जिसमें सबसे श्रेष्ठ उपवास एकादशी है। एकादशी का उपवास पाचन तंत्र को आराम देता है। उपवास प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है, जिससे शरीर रोगों से बेहतर ढंग से लड़ पाता है। यह व्रत दिमाग को शांत और स्पष्ट करता है, जिससे मानसिक शांति और स्थिरता मिलती है।

एकादशी का व्रत भगवान विष्णु को समर्पित है। यह व्रत मन और आत्मा को शुद्ध करता है, पापों का नाश करता है तथा व्यक्ति को सुख-समृद्धि और मोक्ष प्रदान करता है। इस व्रत से भक्तिमय चेतना जागृत होती है जिससे व्यक्ति भगवान के पास जाता है।

भक्ति के लाभ हमें विभिन्न प्रकार से मिलते हैं, जैसे- भक्ति आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ने में मदद करती है जिससे आध्यात्मिक विकास होता है।

भक्ति दूसरों के प्रति प्रेम और करुणा को बढ़ावा देती है, जिससे संबंधों में सुधार होता है।

भक्ति जीवन के उद्देश्य समझने में सहायता करती है और जीवन को दिशा प्रदान करती है।

भक्ति का अभ्यास मानसिक शांति और तनाव से मुक्ति दिलाता है।

भक्ति नैतिक मूल्यों जैसे कि सत्य, न्याय और करुणा को बढ़ावा देती हैं।

आज की पीढ़ी में लोग अधिक सोचते हैं, तनाव लेते हैं, अंततः वे अवसाद में चले जाते हैं। किंतु मेरे अनुसार इतना सोचना हमारे शरीर के लिए उचित नहीं है, क्योंकि राम चरित मानस में लिखा है-

होइहि सोई जो राम रचि राखा।

को करि तर्क बढ़ावे साखा ।

अर्थात जो कुछ भी राम ने लिखा है, वही होगा, तर्क करके कौन विस्तार बढ़ावे ।

इसलिए हमें अधिक सोचने से बचना चाहिए क्योंकि भगवान ने जो रच रखा है, वो हमेशा मंगल ही होगा, क्योंकि भगवान -

मंगन भवन अमंगल हारी ।

भगवान कभी हमारा अमंगल नहीं करेंगे, इसलिए चिंता लेना बंद करे ।

उदाहरणः यदि कोई बालक किसी नुकसानदान वस्तु से खेल रहा हो तो हम वह नुकसानदायक वस्तु बालक से ले लेते हैं, क्योंकि वह बालक के लिए हानिकारक हैं, किंतु वह नुकसानदायक वस्तु बालक का प्रिय खिलौना बन गया था ।

ठीक उसी प्रकार भगवान भी हमारे जीवन से हमारी कोई प्रिय वस्तु हर लेते हैं तो निश्चित ही वह हमारे जीवन के लिए हानिकारक वस्तु हैं ।

मुक्ता साहू

बी.कॉम. 1 सेम



क्रीडा गतिविधि



योग और ड्रिलिंग



Building Dreams, Climbing Heights: My Journey from Campus to Consulting



When I look back at day one of my college life at Gurukul Mahila Mahavidyalaya, I am struck by how far I have come. A

profound sense of gratitude fills my heart, reminding me of every meaningful moment that made my journey truly special.

Building Strong Foundations

I vividly remember those engaging BCA lectures in mathematics, programming languages, and my first "Hello World" in C, database concepts, data structures and algorithms, and English classes. These courses complemented each other perfectly, transforming me into a well-rounded professional and preparing me for life's challenges. This strong foundation helped me achieve academic excellence, topping all three years consecutively during my graduation and receiving the "Best Student Award" for the years 2013-2016.

The Power of Participation and Perseverance

Those enriching extracurricular activities taught me a valuable lesson:

participation matters far more than winning, and showing up is more important than any medal. I carry this mindset with me every day, and it has guided me to remarkable opportunities and positions that my younger self never imagined possible.

The Bond of Friendship and Teamwork

A small group of determined young women came together with the same goal—to become better versions of themselves. Though we were not yet fully aware of the world beyond our campus, we stood by each other as classmates, learning from one another and mastering the art of teamwork. These friendships and collaborative experiences shaped my approach to professional relationships and continue to influence how I work today.

The Path to PwC

After completing my BCA, I pursued my Master of Computer Applications (MCA) at Pandit Ravishankar Shukla University, where I again achieved top marks. I then gained valuable experience through an internship at a startup, which prepared me for the corporate world. Subsequently, I secured a position at Tata Consultancy Services (TCS) through off-

campus interviews. My career trajectory continued to evolve, eventually leading me to my current role as a Senior Associate Consultant at PwC.

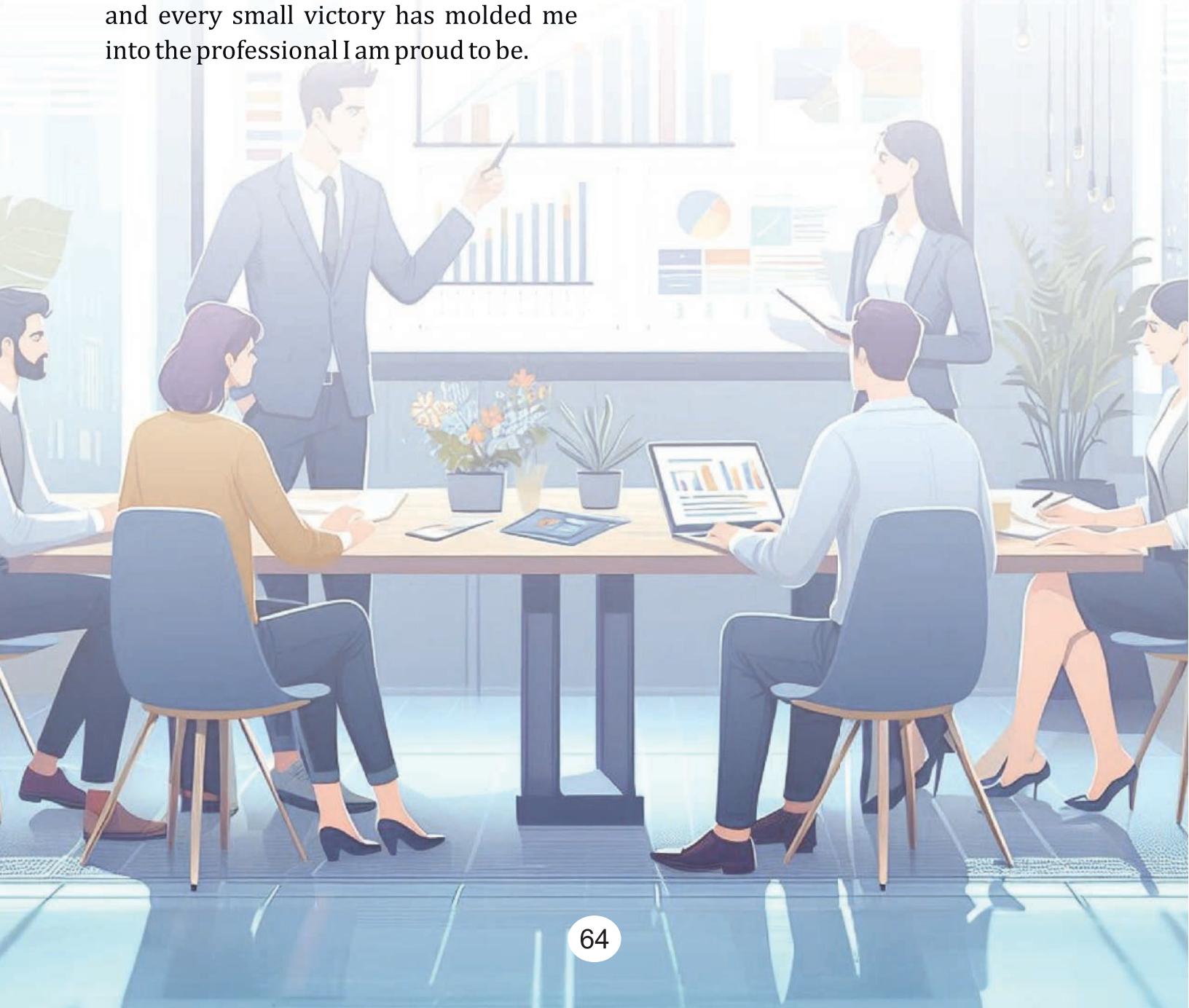
Cherishing Every Step

I will always treasure the little moments at Gurukul that shaped who I am today—from my first internship to my current position at a Big Four consulting firm. Every experience, every challenge, and every small victory has molded me into the professional I am proud to be.

I extend my heartfelt gratitude to all my teachers for their unwavering support, constant guidance, and belief in my potential. Thank you for pushing my limits when I could not see my own worth. Your faith in me has been instrumental in my success.

Priya Sihani

BCA Batch 2013–2016





Walking Two Paths: The Power of Institutional Support



Pursuing a CA alongside regular academic coursework is no ordinary feat. It requires sacrificing leisure time, managing multiple study schedules, and maintaining unwavering focus despite constant fatigue. Yet, what made this journey possible was the remarkable support system I found at Gurukul. The college administration and faculty understood that my CA pursuit wasn't a distraction—it was an extension of my commitment to excellence and professional growth.

The college showed exceptional flexibility. When I needed adjusted class schedules to accommodate my CA study groups, they accommodated. When I struggled with certain concepts and needed extra guidance, my teachers were available beyond regular office hours. But more importantly, they provided something intangible yet invaluable: they believed in my capacity to manage both paths and motivated me during moments when self-doubt crept in.

This support wasn't just logistical; it was deeply human. Faculty members who took genuine interest in my progress, peers who understood my challenges, and an administration committed to student welfare created an environment

where pursuing an ambitious dual path felt achievable rather than impossible. That kind of institutional backing is rare, and it became the cornerstone of my success.

Beyond Academics: A Transformative Experience

While my academic and professional pursuits were demanding, college offered so much more than coursework and exams. The friendships I built became my support system during tough CA attempts. The events, study groups, and everyday classroom interactions taught me invaluable life lessons—collaboration, resilience, time management, and the importance of balancing ambition with human connection.

My B.Com and M.Com years weren't just about acquiring knowledge; they were about discovering my own potential. The college environment encouraged me to think beyond grades and textbooks, to engage with real-world business scenarios, and to develop the critical thinking skills essential for professional success. By the time I qualified as a Chartered Accountant, I wasn't just technically prepared—I was intellectually and personally equipped to handle the demands of my profession.

A Grateful Heart, A Lasting Legacy

As Gurukul Mahila Mahavidyalaya celebrates 25 years of excellence, I reflect



Chartered Accountant

Foundation / Inter / Final

on how profoundly the college shaped not just my career, but my character. The discipline cultivated here, the values instilled through interactions with teachers and peers, and the confidence built through navigating challenges all continue to guide me in my professional practice.

To my college: thank you for believing in me when I was building myself. Thank you for creating an environment where

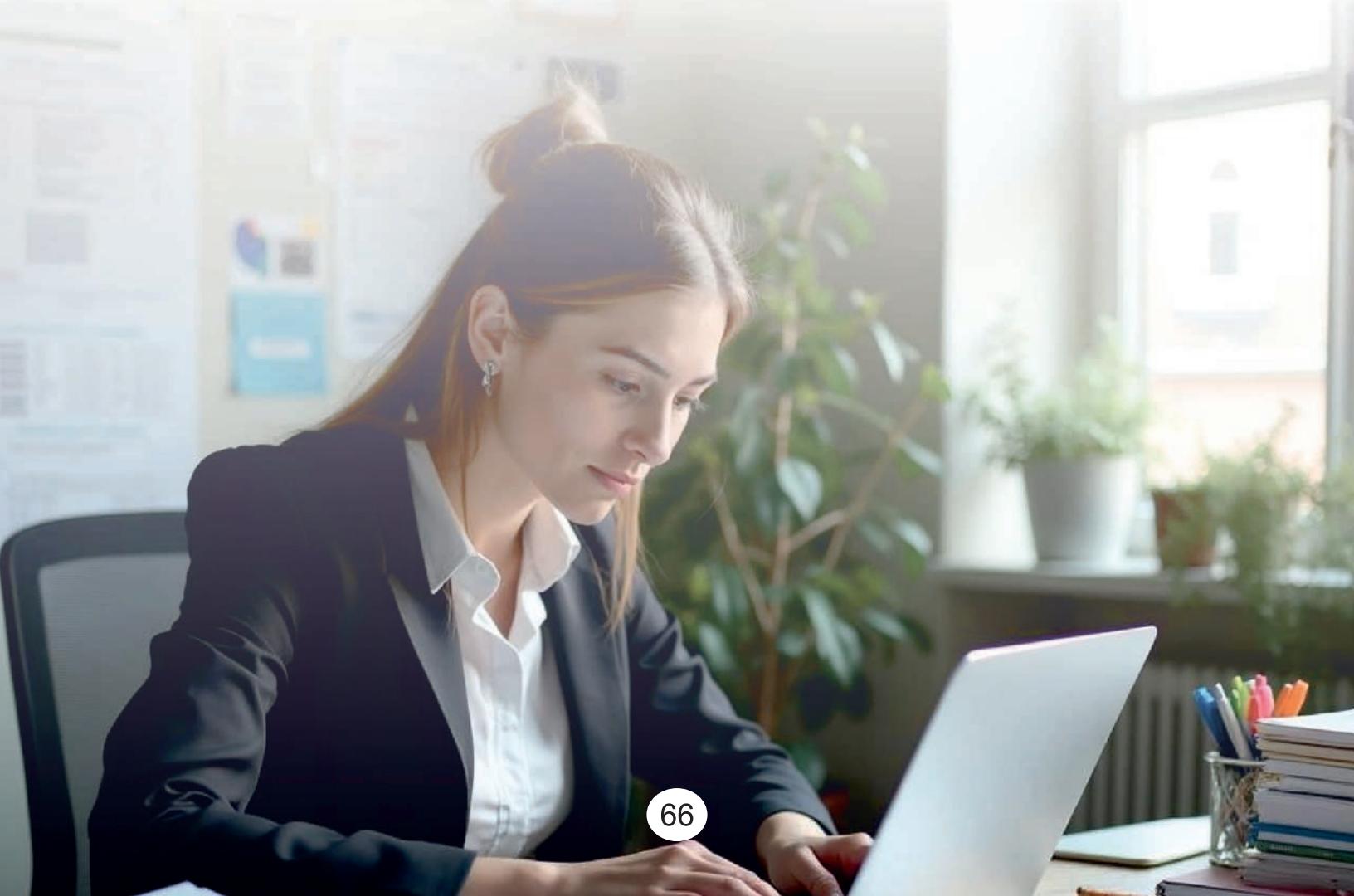
ambition is supported, not just tolerated. As you step into your next quarter century, I am certain you will continue to inspire generations of students to dream bigger, work harder, and contribute meaningfully to society.

With deep gratitude and admiration,

- **CA Pratibha Gehani**

Chartered Accountant.

B.Com. M.Com. Batch 2017-2019



My Path from Learning to Becoming



I am Priyanka Sahu, a former student (Batch 2017-20) of Gurukul Mahila Mahavidyalaya and currently serving as Sector Supervisor in the Women and Child

Development Department at Rajnandgaon, Chhattisgarh. My experience as a B.Sc. (Computer Science) student at Gurukul College from 2016-2020 was wonderful. College life was not just about studies for me; it was a remarkable journey of learning and growth. Every day I spent here taught me something new -sometimes facing challenges, sometimes working together, sometimes overcoming setbacks, and sometimes feeling proud of even small achievements.

Principal Ma'am's visits and rounds, Simrann Ma'am's counselling like that of a

life coach, Shubhangi Ma'am's affectionate scolding, Anshika Ma'am's 24-hour availability to solve doubts, and Manisha Ma'am's clear explanations are all unforgettable experiences for me.

The guidance of our teachers, the support of my friends, and the positive atmosphere of our college taught me to move forward with confidence and responsibility. Various programmes, seminars, and activities not only enhanced my knowledge but also helped me develop my personality.

In conclusion, I would like to say that it is a matter of great fortune for me to have the opportunity to write this article on the occasion of the completion of 25 years of our beloved Gurukul College.

Priyanka Sahu

Sector Supervisor (W&CD)

B.Sc – Computer Science

(Batch 2017-20)

A Gold Medal and Golden Memories: My Gurukul Transformation.



My time at Gurukul Girls' College was never just about academics. Yes, I received the Gold Medal in Physics, but that achievement was merely the visible marker of a deeper transformation that happened within those college walls. My journey was about discovering that excellence in science is inseparable from the development of character, curiosity about life, and the courage to think beyond textbooks.

When Passion Meets Purpose

Physics fascinated me from childhood, but Gurukul taught me that true learning goes beyond memorizing formulas and solving problems. My teachers encouraged us to ask "why"—not just in the context of equations, but in the context of life itself. Classes became philosophical discussions about the nature of the universe, the responsibility of scientists, and how our learning could contribute to society. This shift in perspective transformed physics from a subject I was good at into a passion that defined my purpose.

The Gold Medal came as a natural outcome of this deeper engagement, but it represented something far greater: the validation that pursuing knowledge with both rigor and meaning leads to excellence. My teachers didn't just prepare me for exams; they prepared me to think critically, question assumptions, and approach every challenge with intellectual humility.

Beyond Grades: Building a Mindset

What truly set Gurukul apart was its emphasis on holistic development. The college created space for students to be more than their grades. Through science clubs, seminars, and collaborative projects, I learned that excellence thrives in community. I discovered that my responsibility as a science student extended beyond personal achievement to contributing to collective knowledge and inspiring others.

The values instilled during these years—intellectual honesty, perseverance in the face of difficulty, compassion for the learning journey of others—became my foundation. Gurukul didn't just make me a better student; it shaped how I approach challenges in every aspect of life.

A Legacy of Thinking Deeper

Today, as Gurukul celebrates its Silver Jubilee, I recognize that the college's real legacy isn't measured in medals or marks. It's in the minds it has shaped, the questions it has encouraged students to ask, and the values it has instilled. My years here taught me that true excellence is never self-centred—it's about using your strengths to elevate those around you and contribute meaningfully to the world.

That Gold Medal sits on my shelf as a proud reminder, but the real treasure is the mindset Gurukul cultivated: curiosity without arrogance, achievement without complacency, and the lifelong commitment to learning and growing.

Ashi Agrawal

Gold Medallist in Physics.

B. Sc (Computer Science) Batch 2018-2019

From Gurukul to Government Service: A Pride That Lasts



I am Sheetal Mishra, currently serving as a Scale-1 Officer in the Central Government. I am thrilled that Gurukul Mahila Mahavidyalaya is celebrating its 25-year milestone. I want to extend my heartfelt thanks to all the teachers who still remember me and have graciously included me in this special occasion.

A Memorable Beginning

I clearly remember my first day at Gurukul on July 10, 2017. The first period was English, and it was taught by Simran Ma'am. I will never forget the meaningful conversations I had with Dr. Vandana Agrawal. She clarified all my doubts with tremendous love and patience. She used to encourage me, saying, "Sheetal, utilize your full potential."

Beyond Textbooks: Learning for Life
Gurukul Mahila Mahavidyalaya did

not merely provide us with bookish knowledge; it taught us how to navigate real-life situations with confidence and wisdom. I often wondered where actual learning happened in college, but at Gurukul, the entire syllabus was completed between July and December. As a serious student, I never felt the need for any external coaching or guidance.

A Source of Pride

Today, on the Silver Jubilee anniversary, I feel immensely proud whenever anyone asks where I graduated from, I proudly say and with a genuine smile: "I am from Gurukul Mahila Mahavidyalaya."

The education and values I gained here have been instrumental in my professional success and personal growth. Thank you, Gurukul, for being the foundation of everything I have achieved.

Sheetal Mishra
B.Sc. (Mathematics) Batch (2017-2020)
PRSU – University
Topper in Mathematics in 2020

Cherished Years At Gurukul Mahila Mahavidyalaya : An Alumna Remembers.



I feel proud to have been a student of Gurukul Mahila Mahavidyalaya. It is the institution where I laid the foundation of my career, and today I am working in such a prestigious and qualified position as Lecturer Physics (Gazetted Officer) at Keshkal, Bastar, Chhattishgarh. Gurukul Mahila Mahavidyalaya has played a significant role in helping me reach at this position in my life.

Gurukul is not just an institution; it is a place where a student's Holistic development takes place. Along with studies, it provides a developing, uplifting environment filled with lots of opportunities.

Gurukul provided a vibrant environment enriched with diverse events—NSS, ECO Club, Science Club, art exhibitions, cultural programs, fashion shows, debates, and creative workshops. Each event added a new dimension to our education and helped us develop our confidence and collaborative skills. I was also a winner in the debate competition and the President of the Science Club.

My experience at Gurukul was filled with encouragement and a strong sense of camaraderie. The faculty members were not only academically strong but also remarkably supportive. Whether it

was course-related questions or personal challenges, I always felt comfortable approaching them. Their guidance extended far beyond the curriculum and played a crucial role in my overall development.

For young women seeking a safe, empowering, and opportunity-driven environment, Gurukul Mahila Mahavidyalaya has always been one of the best institutions. It has fostered a culture where girls are encouraged for self-development and exploration.

I received the College Topper Award at Gurukul, which is a matter of great pride for me.

After completing my BSc from Gurukul, I pursued an MSc in Physics from Ravishankar Shukla University, further strengthening my academic foundation. Subsequently, while preparing for competitive exams, I secured a position as a Physics lecturer. The confidence and communication skills I developed during my college years have proven invaluable in my life. The skills honed at Gurukul continue to guide me every day.

I am deeply grateful to all my teachers for their continuous support and guidance.

Manisha Bandhe

Lecturer Physics (Gazetted Officer)

CG State Govt.

B.Sc. (Maths) Batch (2014-17)

From Classroom to Research: A Lifelong Pursuit of Bioscience



My educational journey has been a path of growth, discovery, and deep dedication to the world of life sciences. It began at Gurukul Mahila Mahavidyalaya,

Raipur, where I pursued my B.Sc. in Biology from 2017 to 2019. Those formative years shaped the foundation of my academic aspirations and introduced me to the beauty and depth of biological sciences.

Foundational Years: Gurukul Mahila Mahavidyalaya

Under the mentorship of my Head of Department, Dr. Vandana Agrawal, I developed a strong academic discipline and a genuine love for learning. Her leadership and encouragement strengthened my confidence considerably. I am equally grateful to my English teacher, Dr. Simran Varma, whose teaching helped me express myself with clarity and conviction. Her influence improved my communication skills and shaped my personality in meaningful ways.

I was blessed to learn from dedicated and inspiring educators—Dr. Megha Agrawal, Dr. Seema Sahu, Dr.

Meenu Kushwaha, and Dr. Razia Sultan. Their thoughtful guidance enriched my understanding of the subject and motivated me to pursue continuous growth. I am also deeply thankful to our Principal, Dr. Sandhya Gupta, whose unwavering support helped me stay focused on my goals and encouraged my holistic development.

Postgraduate Studies: Deepening My Expertise

After completing my graduation, I continued my academic journey with greater determination. I joined Government Dudhadhari Bajrang Girls Post Graduate Autonomous College, Raipur, where I completed my M.Sc. in Botany (2020–2021). My postgraduate years allowed me to explore the subject in depth, studying plant sciences, research methodologies, and advanced botany concepts. These studies strengthened my research interests and set the foundation for the next crucial phase of my academic pursuits.

Present Journey: Doctoral Research

At present, I am pursuing my Ph.D. in Bioscience, a journey that reflects my passion for research, scientific curiosity, and commitment to contributing meaningfully to the field. Every step—from B.Sc. to M.Sc. to Ph.D.—has



helped me grow intellectually, emotionally, and professionally.

Reflections and Gratitude

Looking back, I feel deeply grateful for the teachers, mentors, institutions, and experiences that have shaped me. As I continue my doctoral journey, I carry with me the lessons, values, and inspiration

gathered from each stage of my education. This foundation will guide me as I work toward making meaningful contributions to the field of bioscience.

Garima Moitra

B.Sc. (Biology) Batch 2017-2020





A Foundation, A Family, A Transformation: My Gurukul Story.



As Gurukul Mahila Mahavidyalaya celebrates its Silver Jubilee, marking 25 glorious years of empowering women, my heart swells with pride and nostalgia.

This milestone is not just the college's achievement; it is a celebration of thousands of stories, dreams, and transformations. Among them is my own—a journey that began with nervous excitement and culminated in a life of confidence and purpose.

The First Year: A Canvas of New Beginnings

I vividly remember my first day at Gurukul—a blend of anticipation and wonder. The vibrant campus, the echoing laughter in the corridors, and the inspiring atmosphere of learning instantly felt like home. What struck me most was the warmth of the teachers, who were not just educators but mentors from the very start.

Academically, I found joy in the logical beauty of Mathematics and the expressive world of English. The chemistry lab became my playground of curiosity, with each experiment feeling

like a small discovery. Physics, I confess, was my Achilles' heel. I often joked about struggling in the subject, but my teachers never let that define me. Their unwavering patience transformed my fear into genuine enthusiasm for learning.

This initial year was about stepping out of my shell through presentations, workshops, and extracurricular activities, building a foundation of discipline and self-assurance.

NSS: The Village That Taught Me Life

If there is one experience that etched itself into my soul, it was my time with the National Service Scheme (NSS). Our trip to a remote village was far more than a camp; it was a profound lesson in humility, service, and community.

We danced, performed street plays, and woke at dawn to clean the surroundings. I still smile at the memory of our parade practice, with curious villagers watching, our initial shyness melting into shared laughter. The bonds forged during those days were truly special. A yoga session led by the father of one of our seniors taught us the profound connection between breath and well-being. The taste of Aate Ka



Halwa that followed remains a sweet memory I cherish.

Returning to college brought bittersweet feelings, but exams soon beckoned. Late-night study sessions were filled with renewed dedication. My teachers, with their boundless knowledge, continued to answer my endless questions with encouragement, never irritation. They were my anchors in a sea of academic anxiety.

The Second Year: Soaring with Confidence

The second year marked discovery and leadership. Under the inspiring guidance of Sanjay Sao Sir, we formed the Science Council. Every Saturday became a platform to host presentations and scientific activities, honing our knowledge, confidence, and communication skills.

Our creativity reached new heights when we transformed our classroom into a "Universe" before final exams. For those few days, we were not just students; we were inhabitants of a galaxy we had built with our own hands—a testament to our collective imagination.

This was the year of personal milestones. I was honored to secure 3rd rank in the State Photography Competition (Mobile Category) and 2nd rank presenting the work of Srinivasa

Ramanujan in "Scientists and Their Inventions That Changed the World." Each success was celebrated, and every setback was met with motivation from teachers who stood by us like unwavering pillars.

The Final Year: Forging the Future

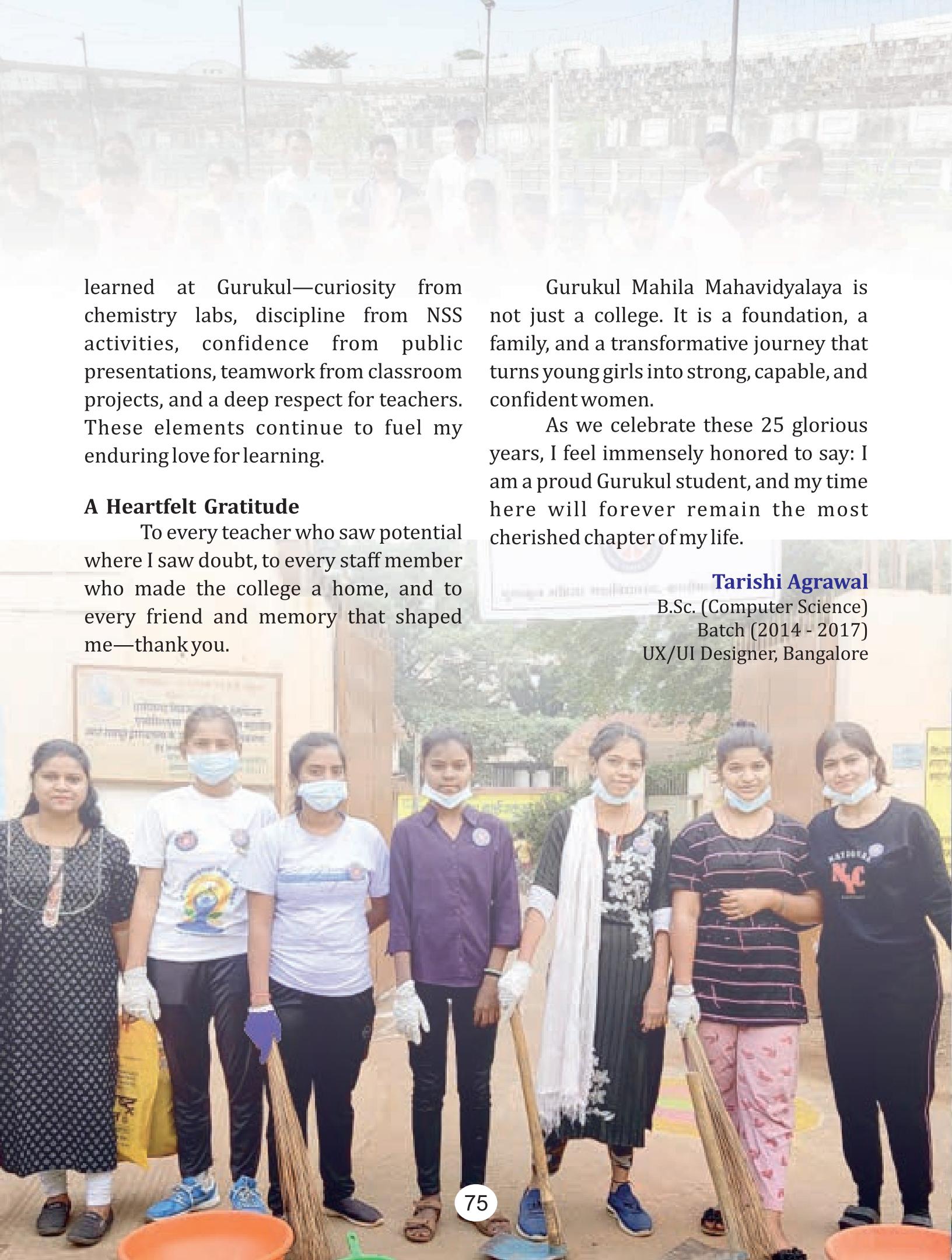
The final year brought mature responsibility. The focus shifted decisively toward the future, yet our perceptive teachers ensured we didn't drown in pressure. They reminded us to balance rigor with joy, to study out of love for learning, not fear.

Through yoga, meditation, and sports, the college reinforced a vital lesson: education is not merely about grades. It cultivates a healthy mind, a resilient body, and a peaceful soul. From dedicated subject teachers to the quiet guardians in the library, every individual contributed to our holistic growth.

Our batch held a deep, abiding respect for our teachers. And today, I can say with conviction: Teachers do not give burdens; they give direction. They are not obstacles; they are the blessings that prepare us to lead society.

From Campus to Career

Today, as a UX/UI Designer in Bangalore, I attribute my professional success to the foundational principles



learned at Gurukul—curiosity from chemistry labs, discipline from NSS activities, confidence from public presentations, teamwork from classroom projects, and a deep respect for teachers. These elements continue to fuel my enduring love for learning.

A Heartfelt Gratitude

To every teacher who saw potential where I saw doubt, to every staff member who made the college a home, and to every friend and memory that shaped me—thank you.

Gurukul Mahila Mahavidyalaya is not just a college. It is a foundation, a family, and a transformative journey that turns young girls into strong, capable, and confident women.

As we celebrate these 25 glorious years, I feel immensely honored to say: I am a proud Gurukul student, and my time here will forever remain the most cherished chapter of my life.



Tarishi Agrawal
B.Sc. (Computer Science)
Batch (2014 - 2017)
UX/UI Designer, Bangalore





**KALINGA
UNIVERSITY**



ए.ए.ए.ए/ रेडकार्श गतिविहारी



A Gurukul Discovery: How Yoga Became My Calling



When I arrived at Gurukul College in 2015, I was like many new students—excited, unsure, and adjusting to academic pressure and new expectations.

Somewhere between classes and daily routine, I found something far more meaningful than I had anticipated: yoga.

What began as a simple way to manage stress soon became a powerful tool for self-discovery. With every practice, yoga helped me quiet anxiety, build resilience, and develop a deeper understanding of my mind and body. It was no longer just exercise; it became a way of living with balance, clarity, and compassion.

Gurukul's encouraging environment allowed me to explore this interest freely. The college's focus on holistic development—beyond just marks and exams—gave me the space to grow, reflect, and realise that wellness is as important as academic success.

After graduating, my connection with yoga only deepened. Over the past seven years, I have worked as a yoga teacher and wellness guide, helping

people from different walks of life experience the benefits of this practice. Watching students become calmer, stronger, and more confident has been one of the most rewarding parts of my life.

As Gurukul College celebrates its Silver Jubilee, I feel grateful for the role it played in helping me discover my true calling. It did not just shape my education; it opened the door to a path of healing, purpose, and lifelong learning that continues far beyond the classroom.

Nidhi Parganiha

B.Sc (Maths)
Batch 2015–2018



From Theory to Practice: My Transformation at Gurukul



I still vividly remember my first day at Gurukul Mahila Mahavidyalaya a mix of nerves and anticipation. Within days, the disciplined, positive, and supportive environment put me at ease. The college experience was vastly different from school; here, academics were more detailed, practical, and advanced. What I had only studied theoretically suddenly came alive through rigorous practical work.

Learning Through Hands-On Experience

The most transformative aspect of my college years was the emphasis on practical learning. Physics and chemistry practicals, which had been merely concepts during school, became comprehensive, real-world experiences. Well-organized lab sessions deepened my understanding of subjects in ways textbooks alone could never achieve. Beyond practicals, the faculty were exceptionally supportive — always available to clarify doubts and guide us personally through complex concepts.

Notes were regularly provided, and every major topic was explained with clarity and patience.

Growing Beyond the Classroom

My college journey extended far beyond academics. I had the privilege of serving as class representative during all three years of my B.Sc., an experience that taught me responsibility and leadership. I actively participated in sports and cultural activities, as well as competitions including poster presentations. While not every competition brought victory, each participation was a lesson in resilience, creativity, and perseverance. The challenges I faced became invaluable learning moments that shaped my character.

The years at Gurukul remain an irreplaceable treasure in my life. I gained far more than academic knowledge—I learned discipline, confidence, and the true meaning of teamwork. Looking back with immense respect and affection, I recognize that Gurukul provided the perfect foundation for both my personal and professional growth.

- Sadhana Soni.

B.Sc. (Bio) Batch 2017

From Student to Teacher: My Gurukul Story



for an institution that shaped not just my academics, but my character and values.

A Temple of Discipline and Care

Gurukul was far more than a college—it was a temple of education where discipline, structure, and genuine care came together seamlessly. From day one, I was struck by the sincerity with which the college maintained its systems. Classes started on time, routines were respected, and even small details like lunch breaks were honored. This structure instilled in me consistency, punctuality, and a disciplined approach to learning that continues to define my professional life today.

What truly set Gurukul apart was its faculty. My teachers were not just knowledgeable but genuinely invested in our growth. They were approachable, patient, and went beyond textbooks to ensure we understood deeply. Whether through regular classes, practice tests, or one-on-one doubt sessions, they made learning meaningful. Their encouragement built my confidence and motivated me to strive for excellence every single day.

Memories That Shaped Me

My college years were filled with cherished moments—from celebrating Teachers' Day and festivals to participating in competition week, sports week, and seminars. These experiences taught me far more than academics alone could offer: teamwork, creativity, resilience, and the joy of learning. One milestone that stands out is receiving the Topper's Award, an honor that boosted my self-belief and remains a source of inspiration.

From Student to Teacher

Today, I teach Information Technology at Adarsh Vidyalaya, Mowa. Every day in the classroom, I realize how deeply Gurukul's lessons have shaped me. The knowledge, discipline, and values I gained there guide my teaching and my approach to mentoring students. Whatever success I've achieved, the strong foundation for this was laid by my college, Gurukul Mahila Mahavidyalaya.

As the college celebrates its 25 glorious years, I feel immense pride in being part of its legacy. Gurukul Mahila Mahavidyalaya will forever remain the cornerstone of who I am—a place where education transcended textbooks and became a blueprint for life itself. I am eternally grateful to my college and teachers for believing in me and showing me the path to success.

Rukshar Sheikh Anjum
B.Sc. (Computer Science)
Batch 2018

Beyond Academics: The Holistic Education I Received at Gurukul



I am Garima Sahu, an alumna of Gurukul Mahila Mahavidyalaya, Batch 2020–2023. As I reflect on my three years at this

remarkable institution, I am filled with profound gratitude and nostalgia. Gurukul has been far more than an educational institution; it is a community that nurtured my growth, fostered my passions, and shaped me into the person I am today.

A Balanced College Experience

My college days were a perfect blend of academic rigor and meaningful experiences. From engaging classroom discussions to late-night study sessions, from vibrant cultural festivals to competitive academic challenges, every moment contributed to my holistic development. The dedicated faculty, through their guidance and mentorship, helped me discover my strengths and navigate my academic interests. These memories will remain cherished throughout my life.

Achievements and Skill Development

I participated actively in various competitions and events organized by the college. I secured first position in the inter-college chess competition alongside

my team member, and won first prize in both the clay model and chart presentation categories. These accomplishments extended beyond trophies; they taught me invaluable lessons in teamwork, creativity, and perseverance.

The college's annual NSS camp was particularly transformative. It provided profound lessons in team building, unity, and social responsibility while fostering a deep sense of community engagement.

Holistic Education Beyond Academics

What truly distinguished Gurukul was its commitment to comprehensive education. My teachers transcended the conventional role of instructors; they served as mentors who invested in our personality development, skill enhancement, and confidence building. The warm, supportive relationship between faculty and students created an environment conducive to genuine learning and growth.

The college regularly organized enriching seminars and workshops. I particularly valued a session on women's health and menstrual wellness, which proved both educational and empowering. Such initiatives demonstrated the institution's thoughtful approach to addressing real-world concerns affecting young women.

From Student to Scholar

Upon completing my B.Sc. in Biology, I pursued my Master's degree in Zoology, inspired by the exceptional guidance and encouragement from my teachers. Their ability to simplify complex scientific concepts while instilling a genuine passion for learning was instrumental in shaping my academic trajectory. The collaborative, supportive learning environment fostered by Gurukul continues to influence my approach to education and personal growth.

Gratitude and Future Commitment

These experiences have profoundly impacted my life, and I am deeply grateful

to Gurukul Mahila Mahavidyalaya for providing such enriching opportunities. As I move forward in my career, I carry with me the values of perseverance, teamwork, and empathy—principles that will guide me throughout my life.

I aspire to give back to my college community by mentoring future students and contributing to the institution's continued growth and excellence. Gurukul Mahila Mahavidyalaya will always hold a special place in my heart as my second home.

Garima Sahu

B.Sc. (Biology) Batch 2020–2023



From Classrooms to Championships: My Journey as a Proud Alumnus



Reflecting on my years at college fills me with gratitude and pride. Beyond academics, those years shaped me as a person.

The supportive environment, dedicated mentors, and abundant opportunities helped me discover my strengths and build a foundation that continues to guide me today.

My professors were far more than teachers—they were mentors who believed in my potential even before I recognized it myself. Their unwavering guidance enabled me to complete my BSc graduation with 78%, an achievement I hold close to my heart. But their impact extended well beyond the classroom.

Sports became central to my college journey. Representing the college in squash and winning the State-Level Squash Championship twice remain among my proudest achievements. I was also honored to participate in the Inter-University National Championship twice, experiences that deepened my dedication, discipline, and passion for the sport. None of this would have been possible without the college's exceptional support system that constantly encouraged me to excel.

My confidence grew through public speaking as well. Securing first place in the Vivekananda Speech Competition one

year and second place the next strengthened my ability to articulate ideas effectively. A debate competition organized by the Vivekananda Ashram further refined my communication skills and broadened my perspectives on diverse topics.

Beyond these accomplishments, the college consistently provided platforms to explore varied talents. Whether through music competitions that allowed creative expression, or hands-on workshops like bulb and circuit-making that fostered innovation and teamwork, every opportunity enriched my learning and connections with peers.

Today, I recognize that my college gave me far more than a degree. It gifted me memories, friendships, values, and experiences that continue to shape my decisions and character. It instilled resilience through sports, confidence through public speaking, creativity through music, and curiosity through experiential learning. I am deeply proud to have been part of an institution that genuinely nurtures talent, celebrates individuality, and prepares students to face the world with courage.

To my professors, the college staff, and the entire community—thank you for believing in me and helping me become who I am today. Once a part of this college, always a part of its legacy.

Aditi Shukla
B.Sc. (Computer Science)
Batch – 2024



Lights, Lens and Lessons: A Gurukul Alumna's Story



My name is Anamika Verma, and I am a proud alumna of Gurukul College, a place where teachers are genuinely kind, soft - spoken, and endlessly supportive. I completed my B.Sc. here and passed my final exams in 2022, carrying with me not just a degree but countless memories and life lessons that continue to shape who I am.

During my college years, I began my journey into the world of modelling. Balancing studies and shoots was not always easy, but with hard work and courage, I slowly started building my name. Today, I am recognised as a model in Chhattisgarh and have had the opportunity to work with several jewellery and designer brands such as Vaza Multi Designer Store, Shri Ram Jewellers, Saheli, Sankhla Jewellery, Mahalaxmi Jewellers, and many others. I

have also featured in shoots for hoardings, newspapers, and movie advertisements, each project adding to my experience and confidence.

What made this journey truly special was the unwavering support of my teachers. They stood by me not only in my academics but also encouraged my modelling and dancing, reminding me that it was possible to pursue my passion without giving up on my education. It still means a lot to me that my principal ma'am remembers me by name; that simple gesture makes me feel valued and connected to the college even today.

As Gurukul College celebrates 25 wonderful years, I feel honoured to be a small part of its legacy. I wholeheartedly congratulate the entire Gurukul family on this remarkable milestone. I love them all deeply and will always cherish the beautiful memories, guidance, and love I received during my time at Gurukul.

Anamika Verma
B.Sc. (Bio) Batch - 2022-23



From Dreams to Teaching: My Gurukul Foundation



Every educational journey is marked by dreams, determination, and the pursuit of meaningful goals.

Mine has been filled with milestones that shaped not just my academics, but the person I am today. From post-graduation to preparing for a career in government teaching, each step has brought me closer to my calling—becoming an educator who truly makes a difference.

Finding My Path at Gurukul

My journey began at Gurukul Mahila Mahavidyalaya, a place that transcended the typical college experience. It became far more than a campus; it became the foundation of my growth. The supportive environment, inspiring faculty, and vibrant academic atmosphere helped me discover my strengths and clarify my aspirations. It was here that I first realized my passion for education and my desire to impact lives through teaching.

Walking Toward My Goal

After completing my post-graduation, I pursued the Bachelor of Education program at the Government College of Teachers Education, determined to teach in government schools. To strengthen my credentials, I appeared for CTET and CGET examinations, both of which I successfully cleared. These qualifications reaffirmed my belief that I was walking the right path. Today, I am preparing for the Post Graduate Teacher (Commerce) examination, inching closer to my dream of becoming a government educator.

Gurukul Mahila Mahavidyalaya holds a treasured place in my heart as the foundation where I discovered my potential, clarified my purpose, and shaped my dreams for the future. I am deeply grateful for every lesson, every moment, and every experience that helped me envision a career dedicated to shaping the next generation.

Aadyam Upreti
B.Com. M.Com – Batch 2019

From Commerce Student to Forest Officer: Gurukul's Impact.



congratulations to the college on completing 25 wonderful years of academic excellence and institutional growth.

My Journey at Gurukul

I gained admission to Gurukul Mahila Mahavidyalaya in 2015 to pursue my Bachelor's degree in Commerce. The experience was transformative, and I decided to continue my academic journey by completing my Master's degree in Commerce at the same institution. Over these years, I became deeply connected to the college community and its values.

A Welcoming and Disciplined Environment

I fondly recall the warm welcome I received during the fresher's party, which set the tone for my entire college experience. What I appreciated most about Gurukul was its strong emphasis on discipline combined with genuine support. The Principal and all the faculty members were exceptionally supportive and invested in our academic success.

I am Udita Gundegaonkar Joshi, a proud alumna of Gurukul Mahila Mahavidyalaya. First and foremost, I extend my heartfelt

They provided excellent instruction and mentorship, which enabled me to complete both my bachelor's and master's degrees seamlessly, without any academic obstacles.

From Student to Professional

The solid educational foundation and professional skills I gained at Gurukul directly contributed to my career success. Based on my qualifications, I secured a position with the Chhattisgarh Forest Department as an Assistant Grade-03 in the state government—a milestone that represents both personal achievement and the quality of education Gurukul provides.

A Heartfelt Tribute

I extend my deepest gratitude to all the teachers and faculty members of Gurukul Mahila Mahavidyalaya for their unwavering dedication and guidance. Your commitment to excellence has shaped not only my academic journey but also my professional success.

On this momentous occasion, I wish the college a joyous Silver Jubilee celebration and continued growth for many more years to come.

Udita Gundegaonkar Joshi
B.Com. & M.Com. (Batch 2015–2020)
Assistant Grade-03,
Chhattisgarh Forest Department

From Classroom to Career: A Silver Jubilee Tribute to My Alma Mater



I am proud to share my journey as an alumna of Gurukul Mahila Mahavidyalaya, an institution that has fundamentally shaped my personal and professional growth.

Since gaining admission in 2019 to pursue my Bachelor's degree in Commerce, followed by my Master's in the same discipline, this college has been an integral part of my life—and I remain grateful for everything it has provided.

What made my time here truly special was the warmth and genuine care extended by the faculty. From the welcoming fresher's party that created lasting bonds with my peers to the rigorous academics that built my professional foundation, every experience mattered. Our beautifully

maintained campus, with its lush green spaces and expansive library, created an environment where learning flourished. It was here that I developed the knowledge and confidence that would later serve me well in my career at IDBI Bank, where I now work as a Field Sales Officer.

As Gurukul Mahila Mahavidyalaya celebrates its Silver Jubilee, I extend my heartfelt gratitude to all the dedicated teachers who invested in our growth. College life truly is a golden chapter—one that continues to influence the person and professional I have become.

Congratulations to the institution on this remarkable milestone.

Madhurima Baghel

Field Sales Officer, IDBI Bank

B.Com., M.Com. Batch – 2022- 2024

25th

**Silver
Jubilee Celebration**

Building Dreams, Finding Home: My Gurukul Story



As Gurukul Mahila Mahavidyalaya celebrates its Silver Jubilee milestone, I am filled with pride and nostalgia as I reflect on my journey as an alumnus of this incredible institution. Even after all these years, Gurukul remains much more than a college to me; it is a place that shaped my identity, my ambitions, and my confidence, and it continues to feel like home whenever I return.

I completed my Bachelor of Computer Applications (BCA) at Gurukul from 2017 to 2020, and those three years remain some of the most memorable and transformative moments of my life. The environment at Gurukul was always inspiring, filled with encouragement, opportunities, and a sense of belonging. Our teachers played a significant role in nurturing not just my academic pursuits but also my overall personality development. Their constant support pushed me to explore beyond textbooks and discover my capabilities. I must also acknowledge the unwavering support of my parents, whose belief in me played a vital role in shaping my journey and giving me the confidence to pursue my goals.

Leadership and Growth Beyond the Classroom

One of the highlights of my journey was serving as the President of the Computer Department, a responsibility that taught me leadership, teamwork, and communication skills that continue to serve me well in my professional life today. Gurukul also encouraged me to participate in a wide range of extracurricular activities. I learned handball for the first time, participated in tournaments, and even formed a dance group, which added joy and creativity to my college experience.

Friendships and Support That Changed Everything

Most importantly, Gurukul gifted me some of the best friends and mentors—people who stood by me through every challenge and celebrated every achievement. The supportive environment built my confidence and helped me believe in my potential. With the strong academic foundation and guidance I received here, I later secured admission to NIT Raipur, even without any formal coaching.

From Gurukul to Success

Today, I am proud to be working as a Software Engineer at Optum, and I owe a large part of my professional journey to the values and foundation I gained at Gurukul. The college has played a crucial

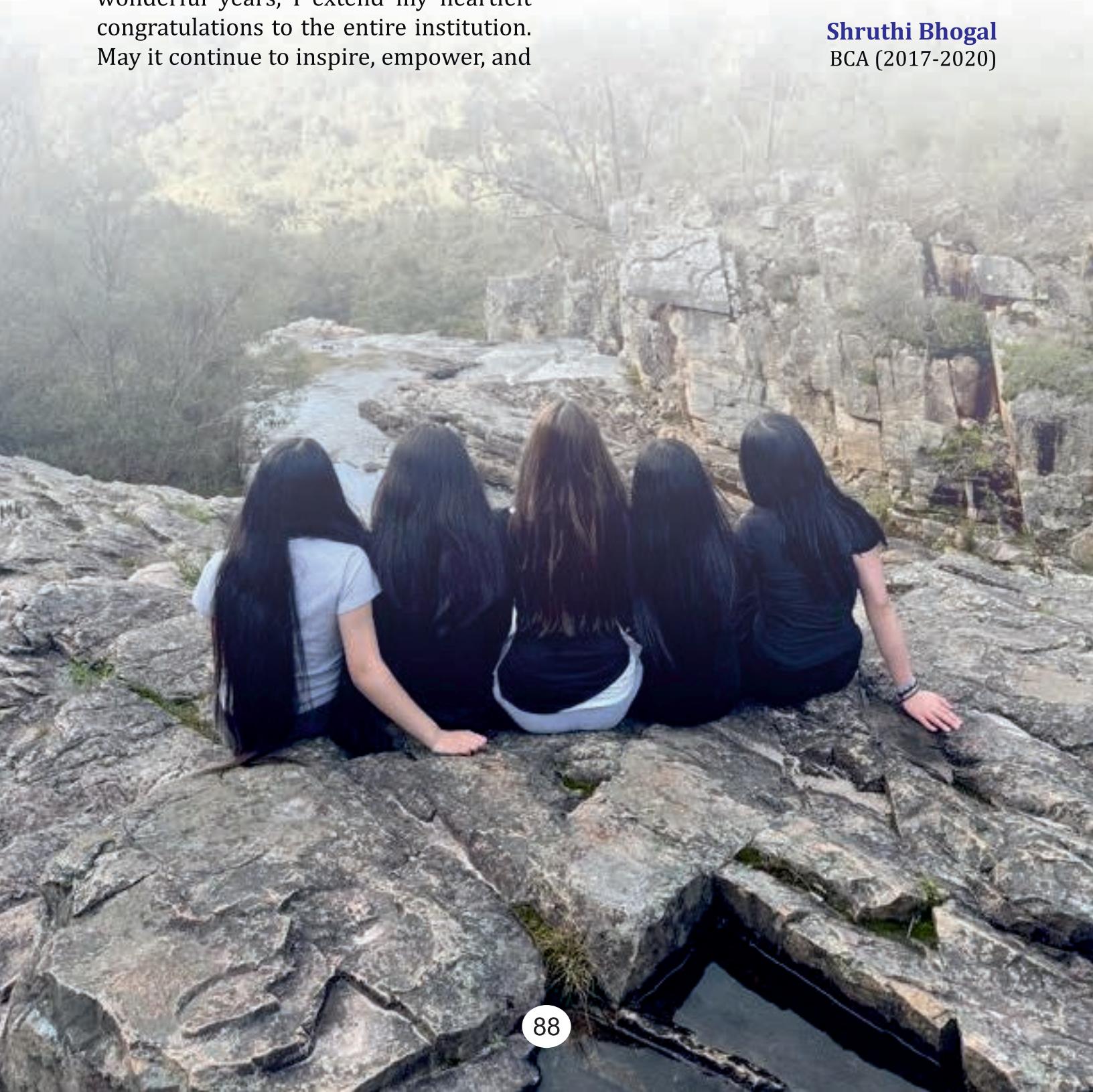
role in shaping who I am today, both professionally and personally.

A Silver Jubilee Wish

As Gurukul completes 25 wonderful years, I extend my heartfelt congratulations to the entire institution. May it continue to inspire, empower, and

guide many more young women toward success and self-confidence, just as it did for me. Here's to Gurukul—a place where dreams are built and hearts find home.

Shruthi Bhogal
BCA (2017-2020)





From College Stage to Research Scholar: My Gurukul Story



As Gurukul Mahila Mahavidyalaya celebrates 25 years of excellence, I feel an overwhelming sense of pride and gratitude. My time as a BCA student in the 2019 batch was transformative, and the college gave me far more than just academics—it gave me confidence, character, and clarity of purpose that guides me today.

A Foundation Built on Support and Opportunity

My experience at Gurukul was shaped by genuine care, understanding, and a true sense of belonging. The faculty were not only subject experts but also remarkably approachable mentors. Whether I needed academic guidance or personal support, they were always available with thoughtful advice. This care extended far beyond the classroom, playing a crucial role in my holistic growth.

The college didn't confine us to textbooks. Sports became a significant part of my journey — representing the university in Kho-Kho for two consecutive years taught me discipline, teamwork, and resilience.

Simultaneously, Gurukul's vibrant atmosphere was alive with creative opportunities: art exhibitions, cultural programs, fashion shows, debates, and workshops. I actively participated in these

events, winning awards in rangoli and fashion show competitions, and eventually receiving the Student of the Year Award in my final year.

Beyond college, these experiences propelled me forward. I achieved the Miss Mahasamund Award and secured Runner-Up in a modelling competition in Raipur. More importantly, these accomplishments strengthened my confidence, creativity, and leadership abilities—skills that would prove invaluable in my academic journey ahead.

From BCA to Ph.D.: Continuing the Journey

After completing my BCA at Gurukul, I pursued my MCA at Ravishankar Shukla University, leveraging the strong academic foundation the college had provided. Today, I am pursuing a Ph.D. in Computer Applications at NIT Raipur, deepening my knowledge and research capabilities. This progression from undergraduate to doctoral studies is a testament to the excellent groundwork Gurukul gave me.

I remain deeply grateful to my faculty members and Gurukul Mahila Mahavidyalaya for believing in me, encouraging exploration, and creating an environment where every student could truly flourish. The values, confidence, and skills I gained there continue to define my academic and professional journey.

Kemika Chandrakar

BCA Batch 2019
Ph.D. Scholar, NIT Raipur

From Gurukul's Halls to the World: My Journey of Growth and Gratitude



As Gurukul Mahila Mahavidyalaya completes 25 years of its inspiring journey, I find myself feeling deeply nostalgic and immensely proud.

Being an alumna from the BCA batch of 2017, it is a privilege to reflect on the institution that shaped my foundation and has contributed significantly to the person and professional I am today.

A Place That Nurtured Confidence and Character

My experience at Gurukul was marked by warmth, encouragement, and a strong sense of belonging. The faculty members were not only academically strong but also remarkably supportive. I always felt comfortable approaching them—whether it was for course-related queries or personal challenges. Their guidance extended far beyond the syllabus and played a crucial role in my overall development.

For young women seeking a safe, empowering, and opportunity-driven environment, Gurukul Mahila Mahavidyalaya has always stood out as one of the finest institutions. It fostered a culture where girls were encouraged to explore, express, and excel.

A Campus Alive with Creativity and Learning

Gurukul offered a vibrant atmosphere enriched with diverse events—art exhibitions, cultural celebrations, fashion shows, debates, and creative workshops. Each event added a new dimension to our learning and helped us build confidence and collaboration skills.

Through these platforms, I had the privilege of winning several awards in painting, rangoli, debate, and fashion show competitions, culminating in receiving the Student of the Year Award in my final year. These recognitions were not merely trophies; they were stepping stones that strengthened my communication skills, artistry, and leadership qualities.

Academic Growth and Professional Path

After completing my BCA from Gurukul, I pursued an MCA from Ravishankar Shukla University, carrying forward the strong academic foundation I had received. Soon after, I joined TCS as a Software Engineer, and today, I am proud to continue my journey there as a Java Developer.

The confidence, teamwork, and communication abilities that my college years instilled in me have been invaluable in my professional life.

Whether leading activities, collaborating with teams, or handling real-world challenges, the skills developed at Gurukul continue to guide me every day.

Gratitude That Lasts Beyond Time

I remain deeply thankful to my faculty members for their unwavering support and encouragement. To my fellow students and the entire Gurukul family, thank you for creating an environment where dreams were nurtured and potential was unlocked. As I celebrate this Silver Jubilee milestone with my alma mater, I carry forward the

values of excellence, compassion, and empowerment that Gurukul instilled in me.

To every student currently walking these halls, I say this: cherish every moment, embrace every opportunity, and remember that Gurukul is not just a college—it is a launchpad for your dreams and a sanctuary for your growth.

Dimple Soni

BCA (Batch 2017)





In Fond Remembrance



Reflecting on Gurukul Mahila Mahavidyalaya as it celebrates 25 years of excellence, I am reminded of how profoundly this institution influenced my personal and professional growth. Beyond the BCA curriculum I pursued, Gurukul offered something invaluable: an environment that helped me discover my potential and build the confidence I carry into every aspect of my life today.

Gurukul provided something rare: a nurturing ecosystem where young women were genuinely encouraged to take risks, pursue their passions, and grow. The faculty stood out not just for their academic expertise but for their genuine care and accessibility. They looked beyond textbooks to understand each student's potential and challenges, offering guidance that extended into personal and professional development.

The campus buzzed with opportunities to explore diverse interests—from art exhibitions and cultural events to debates and creative

workshops. I was fortunate to participate actively, earning awards in painting, rangoli, debate, and fashion competitions, ultimately receiving the Student of the Year honor. These achievements meant far more than accolades; they were confidence-building moments that developed my communication, leadership, and creative abilities.

Post-graduation, I established my own coaching institute and now work as an abacus trainer and education counsellor. The teamwork, communication skills, and self-belief cultivated at Gurukul have been my greatest professional assets. Whatever challenges I face today, I draw strength from the foundation this college provided.

To my faculty members and to Gurukul—thank you for believing in us and creating a space where girls could truly flourish.

With deep gratitude,
Divya Harjpaal Nathani
BCA Batch 2017
Abacus Trainer & Education Counsellor

Reclaim Your Mind: The Cost of Mindless Consumption



You scroll for hours, binge shows, laugh at memes—and then wonder why your mind feels dull, your focus gone, your energy depleted. We

live in a world addicted to cheap entertainment, but the cost is steep: your clarity, your intellect, your time. Every reel, every TikTok drama, every empty click erodes your ability to think deeply.

This isn't about guilt. It's about your potential. Your brain was never designed for massive consumption. It was built to explore, to question, to learn.

Start Now - Use tools like ChatGPT—ask questions, follow your curiosity. But don't stop at the quick answer; let that be the beginning. Dig deeper. Read long-form content, dive into books, research

topics until they actually click. Then write. Write messy notes, short reflections, full essays—anything that forces your brain to think.

Learn a new language. Learn something technical. Learn something creative. Not for performance, but for growth—because growth feels infinitely better than numbness.

Give your brain silence too. No screens, just space to reflect. If you don't carve out time to think during the day, your mind will chase you at night. That's one reason you can't sleep.

You don't need to become perfect, but you do need to stop letting your mind atrophy in the name of "relaxing." Educate yourself. Challenge yourself. Make your brain your strongest asset.

Diksha Kolhe

M.Com III Semester





Authenticity Over Expectations: The Art of Being Yourself



"Be yourself"- perhaps two of the most frequently used phrases in self - improvement discourse. Everyone says them, but few explain how to actually do it. Being yourself means pursuing what you truly want without fearing judgment. It means living a life free from the need to impress or provoke envy. Because here's the truth: no one thinks about you as much as you do. It's about recognizing your potential and making the most of it.

Being yourself involves feeling comfortable in your own skin, keeping toxic people at bay, and spending time with those you genuinely love. It means doing the things that matter to you—not what algorithms suggest or what trends dictate.

Breaking Free and Finding Your Truth

Ignore the beauty standards plastered across the internet. Disregard what's currently trending. Decorate your home in a way that pleases you, not your Instagram followers. Wear what makes you feel good. Choose pursuits that light you up, not ones that look good on paper. Ask yourself the hard questions: What do you truly want to do in life? Why do you want to do it? Are you seeking validation from others, or does this genuinely matter to you? What would you pursue if no one else existed to judge you? Answer these honestly, and you'll find who you truly are. Be yourself because you are far more beautiful than any expectation or prototype society tries to fit you into.

Shourya Biswas
M.Com III Semester

Life: A Reflection



The concept of life itself is remarkable and often unpredictable. It is a delicate balance of joy, challenges, growth, and connection. Life is the essence of existence, distinguishing conscious beings from inorganic matter.

At its core, life is about experiencing the warmth of the sun, hearing the laughter of loved ones, and appreciating the simple, beautiful moments that often go unnoticed. These instances of happiness and contentment provide the foundation for a fulfilling existence.

Life's Challenges and Growth

However, life is not without its struggles. Challenges are an integral part of the journey, testing our strength and resilience. Whether it's personal loss, professional setbacks, or health crises, these obstacles teach us valuable lessons

about patience, endurance, and courage.

Embracing these difficulties and learning from failure is essential for personal growth and emotional maturity.

The Role of Relationships

Relationships with family, friends, and community play a crucial role in navigating life's path. They offer support, guidance, and comfort during tough times, enriching our experiences and teaching us love, trust, and compassion. Nurturing these connections makes life more meaningful.

Ultimately, life is about continuous learning and evolution. Every experience—good or bad—shapes our identity and outlook. By living with purpose, kindness, and gratitude, we can make the most of this precious gift, turning our unique story into an extraordinary one.

-Falak Naaz

M.Com I Semester

Digital Burnout : Why Gen Z Feels Mentally Exhausted.



In Today's Hyper connected world, Gen Z lives between screens- phones, laptops, tablets, and social media feeds, while technology has made life convenient, it has also created a silent crisis: DIGITAL

BURNOUT. This burnout is not just Physical tiredness; it is deep mental exhaustion that appears even when a person has not done any "real" work. Many young people today say, "I don't do much, but still I feel drained." This feeling is becoming universal.

At the core of this issue lies constant digital stimulation unlike previous generation, Gen Z is exposed to a never ending flow of information - videos, news, messages, notifications and updates. This constant multitasking overloads the mind. Even scrolling, which seems relaxing forces the brain to process dozens of micro-stimuli every second: colours, captions, emotions, music and expressions.

Another major contributor is dopamine driven apps like Instagram, snapchat etc. are designed to give small bursts of pleasure with every swipe notification. slowly, the brain becomes addicted to instant pleasure & finds it difficult focussing on small tasks like studying, reading or even having a conversation.

Digital burnout also develops from comparison culture. Social media constantly

shows people with Perfect Lives, Perfect careers, relationships, looks & success at young age. Gen Z often end up comparing themselves unconsciously. This creates silent pressure, self doubt & anxiety. The mind fights battles of insecurity, expectations of fear of missing out (FOMO). Sleep is another area heavily affected. Screen emits blue light that confuses brain & reduces melatonin, the sleep hormone.

The most surprising thing about digital burnout is that it doesn't look like burnout. There is no physical activity, no hard-work and no clear sign. Yet the mind becomes overwhelmed, overstimulated. However digital burnout is reversible. Simple steps can bring massive changes. Taking short breaks from screens, turning off unnecessary notifications, keeping the phone away while studying or resting, spending time outdoors can help the brain rest. Journaling, meditation & offline hobbies also create mental space & help to focus.

Gen Z is one of the most talented, creative & expressive generations. To protect this potential, it is important to maintain a healthy relationship with technology. Digital tools should support life not drain it.

Understanding digital burnout is the first step toward reclaiming energy, peace & productivity. The mind can only rest when the screen does.

Kumkum Patle
B.Com III year

Rising Above Society's Limits to Success



Barriers to Women's Progress

Even in today's modern world, many women still fail to reach their full potential. One of the biggest barriers is society's limited mentality—a narrow way of thinking that restricts women's opportunities and underestimates their abilities. This mindset holds back not just women, but the progress of the entire community.

Many women face constant judgment for their choices, whether about clothing, career, or lifestyle. This negative attitude makes women hesitate to take bold steps or follow their dreams for fear of social criticism.

Even when women achieve great success, society sometimes fails to recognize their contributions. This lack of acknowledgment discourages women from pushing forward and extinguishes their motivation to excel.

Breaking Through Traditional Barriers

Society often fears change and clings to old traditions. In many places, people still believe a woman's only role is

inside the home. This mentality prevents women from exploring their potential and contributing equally in professional fields.

From a young age, many girls are told what they can or cannot do—which careers are suitable for them. These stereotypes discourage women from entering fields like science, politics, or leadership, even though they have the talent and capability.

The Power of Motivated Women

A motivated woman is the strength pillar of society. In every corner of the world, women stand as symbols of strength, resistance, and progress. From rising female leaders to those leading nations, they balance countless roles with grace and determination.

One of the most admirable qualities of women is their ability to balance tradition with modern aspirations. They preserve culture while embracing progress. This balance makes them powerful influences in both family life and the wider world. Motivation helps women transform challenges into opportunities, proving that they can honor their roots while reaching new heights.

The Ripple Effect of Empowerment

A motivated woman has a ripple effect that benefits everyone. A confident woman inspires her children, supports her partner, strengthens her workplace, and uplifts her community. Her courage fuels innovation, compassion, and growth in society.

Every young girl needs to know that her dreams are valid and achievable. Motivating women means motivating generations. A society that encourages women to dream big, work hard, and lead fearlessly builds the foundation for lasting development and harmony.

Society's Role in Empowerment

A motivated woman can achieve anything, but society's support makes the journey smoother. Families, institutions, and communities can help by:

- Encouraging education for girls
- Giving equal opportunities at work
- Respecting women's choices and ambitions
- Recognizing their contributions both at home and in the workplace

Saniya Memon

B.Com III Year



Educational Technology and Artificial Intelligence



Educational Technology (EdTech) integrated with artificial intelligence (AI) offers personalized learning experiences, automates administrative tasks, and provides intelligent tutoring systems.

However, it also presents risks such as over-reliance, potential biases, threats to data privacy, a widening digital divide, and the need for teacher training.

Effective implementation requires developing regulatory frameworks and focusing on human-centered approaches to leverage AI's benefits while mitigating its drawbacks.

Benefits of AI in Ed Tech

Personalized Learning: AI analyzes student data to create individualized learning paths, providing tailored content and exercises that adapt to each student's pace and ability.

Administrative Efficiency: AI tools automate repetitive tasks like grading, freeing teachers to focus on student development and more engaging instruction.

Intelligent Tutoring Systems: AI-powered tutors provide feedback to students, significantly improving engagement and performance.

Enhanced Accessibility: AI can provide accommodations for students with disabilities and English language learners,

increasing accessibility to educational resources.

Improved Outcomes: By analyzing academic data, AI can help institutions identify patterns, improve curriculum design, and enhance learning outcomes.

Risks & Challenges of AI in EdTech
Overreliance and Reduced Skills: Excessive dependence on AI for tasks like problem-solving can hinder the development of critical thinking and essential skills.

Bias and Misinformation: AI systems can harbor biases or provide inaccurate information, compromising the quality of education.

Ethical and Privacy Concerns: The rapid development of AI in education raises significant concerns about data privacy and the need for clear regulatory frameworks.

Digital Divide: The benefits of AI may not be equally accessible, potentially widening the gap between students and institutions with and without access to advanced technology.

Moving Forward

To maximize the benefits of AI in education, it is crucial to develop comprehensive policies and regulatory frameworks. This involves a balanced approach that integrates AI in a human-centered manner, ensuring technology supports rather than replaces traditional teaching methods, and fostering robust professional development for educators.

Iqra Fatima

B.Com III

Social Media and Its Effects on Mental Health



Social media has become an integral part of our daily lives. People of all ages use social media platforms to connect with friends and family.

While social media has many benefits, it has also been linked to negative effects on mental health.

One of the most significant negative effects is the impact on self-esteem. People often compare themselves to others on social media, which can lead to feelings of inadequacy and low self-worth. Social media can also contribute to anxiety and depression.

Moreover, social media can be addictive and may contribute to sleep disturbances. People can find themselves scrolling through social media for hours, leading to lack of sleep and increased stress.

Young people who are addicted to social media often live far from reality. They neglect other activities and prefer chatting with friends online instead of meeting them or talking to their parents. They post statuses or photos to share with friends and gradually live only in a

visual world—one that communicates through icons, comments, and likes.

Health Impacts

Using social media intensively can have serious health consequences because young people addicted to social media often go to bed late. Staying up late is harmful to health, especially the brain. If they don't sleep enough, their health suffers, leading to weight loss and constant fatigue. It can cause depression when they see others who seem better than them, creating feelings of inferiority, pressure, and distress. These mental problems are dangerous for young people.

Mitigating the Negative Impact

By taking steps to limit social media use and focusing on mental wellness, we can mitigate the negative effects on our mental health.

Although social media has many benefits, addiction is harmful. It can negatively affect studying and health. To avoid addiction, young people should spend more time with family, play sports, study, and participate in activities.

-Ishrat Parveen

B.Com III

College Life : A Reflection



In grounded halls and Memories made for us to keep,
sunlit lanes,
we learned to smile
through hidden pains.
Between the notes
and restless nights
we found ourselves in tiny lights.

Friends who stayed and some who left,
Taught us love and loss and depth,
Dreams were drawn on hostel walls,
Echoed loud in classroom halls.

Mistakes were many, lessons deep,

Now as the final bell draws near,
We hold each moment close and dear.

College - more than just a place,
It shaped our hearts, our voice, our
pace,
A chapter ends but not the bond –
Its warmth will travel far beyond.

Poonam Dhenge
B.Com III Year



Strength Without Boundaries: The Rise of Women in Sports



Women in sports are not just players—they are part of a powerful change in society. Every time a woman enters a playground, runs on a track, or lifts a weight, she challenges old ideas that once said women shouldn't play sports.

Women athletes learn early that many people doubt them, but they also learn something stronger: courage grows when challenges try to stop her. She practices when others are sleeping. She continues even when tired. She stands up again when life pushes her down.

For her, winning a medal is not just a reward—it is proof that hard work can change a person's future.

The Strength Within

When the world watches a woman athlete, people see someone who brings a

special kind of strength. Her strength is not only physical; it comes from patience, sacrifice, and strong willpower. She does not compete to defeat men; she competes to prove her own ability and show that she deserves respect.

Overcoming Obstacles

Behind every successful woman athlete are real-life challenges: fewer facilities, limited support, and social pressures. Yet they don't give up. Their struggles become their lessons.

Women in sports send an important message to society: equality is a right, not a favour. They show that dreaming doesn't need permission. Women in sports are more than athletes—they are role models for the world. Every step they take tells us: friendship is for everyone. Dreams are for everyone.

Sneha Singh

B.Com III Year



Star of My Story



There was a time when I compared my life with everyone around me. Some people seemed to have everything—better grades, more confidence, more friends—and I wondered if I was doing enough.

But slowly, I realized: life is not a competition. Everyone has their own stage, and I have mine too.

One day it struck me: if my life is a movie, then I should be the main character in it. I don't have to be perfect or always right. I just have to keep moving forward. Every small win, every mistake, every attempt matters. Even on difficult days, I

remind myself that I am still growing, still learning.

Now I celebrate my small wins—completing an assignment on time or smiling through a tough day. I appreciate every little thing. I've stopped worrying about what people think. I've learned that being real and true to yourself is better than being someone you're not.

Maybe I still don't have everything figured out, but I'm proud of how far I've come. I'm not waiting for someone to save my story anymore. This time, I'm writing it myself. I'm not just living a life—I'm living my story.

Safiya Nahid Khan

B.Com III Year

WAKE UP

Wake-Up Call for Women



Women safety is a serious concern in India. While people worship goddesses like Sita, Savitri, Durga, and Lakshmi, real women often feel unsafe. Every day brings news of countless cases of violence, rape, and assault on women.

These causes have increased as women step out of their homes to work and explore the world, making their mark in society.

Root Causes and Solutions

There are different forms of domination used against women—sexual harassment, rape, domestic violence, and more. Rape remains the most sinister crime, without limits or boundaries. It spares no one, affecting even the youngest and oldest members of our society.

To ensure women's safety, several measures are essential:

- The government must implement laws strictly and ensure exemplary punishment for criminals
- Fast-track courts must be established to provide quick justice to victims
- Men must be educated to respect women from childhood
- Equal rights must be followed in practice, not just on paper
- Women must be taught self-defense techniques
- Laws must be made stricter for crimes against women

The Path Forward

All great nations have achieved their status through respect for women. Nations that do not respect women have never become great, nor will they be in the future. By respecting women and creating a society where every woman feels safe and valued, we build a stronger nation for everyone.

Tasnim Kausar

B.Com III

Arjuna and the Power of One-Pointed Focus



In the epic *Mahabharata*, Arjuna stands as a paragon of focus and determination. As the third Pandava brother, he embodies the qualities of a true warrior—an example of unwavering dedication in the pursuit of his goals. He is renowned for his mastery of archery, particularly his ability to aim with both hands. Among the many stories in the *Mahabharata*, one incident especially highlights Arjuna's extraordinary ability to concentrate, a trait that made him the finest student of Guru Dronacharya.

The Test of Concentration

During one of the training sessions in Hastinapur, Guru Dronacharya devised a unique test to assess the level of focus among his students. He placed a wooden bird high on the branch of a tree and asked each of his disciples, one by one, to aim at the bird's eye with their bow and arrow. Before allowing them to shoot, he asked each student, "Tell me, what do you see?"

The eldest, Yudhishtira, responded, "I see the bird, the tree, its branches, and the sky."

Dronacharya moved to the next

student. Bhima replied, "I see the bird and the branches on which it is sitting." Student after student gave similar answers, naming many things in their field of vision. Each was then asked to step aside.

Finally, it was Arjuna's turn. When Dronacharya asked him what he saw, Arjuna replied with unshakable certainty, "I see only the eye of the bird." Guru Dronacharya smiled with satisfaction and said, "Shoot." Arjuna released the arrow, and it flew straight, striking the bird precisely in the eye. He was not only physically aiming at the target but was mentally one with it—a state of *ekagrata*, or one-pointed concentration.

A Lesson for Our Lives

Arjuna's story serves as a beacon of inspiration for anyone seeking to cultivate focus and determination in life. His unwavering resolve and intense discipline demonstrate the power of true concentration. As we reflect on Arjuna's journey, we are reminded of the importance of staying focused on our goals and persevering through challenges.

Ritika Yadav
B.Com III Year

The Day I Met God: A Story of Unexpected Grace.



My name is Basant Yadav. Today, I live with my parents and have a stable life, but this journey began with a moment that changed everything. Before I was adopted, before I found my family, I met God. Or at least, that is what I believed then—and perhaps, what I still believe now.

A Child Without a Home

This story takes me back to 2005, when I was just seven years old. I did not know who my parents were or why they had left me at the steps of a temple. The only certainty in my life was that somewhere, there existed a God—a kind, merciful God—and one day, I would meet Him. That was my only hope.

I spent my days begging and my nights alone, eating whatever little I could find. Other children would sometimes steal my money and food, leaving me even more vulnerable. But then came a day that would reshape my understanding of kindness and divinity.

The Girl Who Became My God

It was summer, and a girl who appeared to be around twenty years old approached me. That single day remains the most beautiful of my entire life. She had come to the temple with her family

for a picnic. When their vehicle stopped at the temple entrance, I rushed forward to beg, as I always did. Everyone ignored me—just as everyone always did—except for her.

She asked me with genuine concern, "Are you hungry?" I replied, "Yes, didi!" She gave me five rupees and then asked, "Where do you live?" When I told her I had no home and lived at the temple, she did not look at me with pity or disgust, as others so often did. Instead, she showed genuine interest in my life. She asked me countless questions about myself and even requested, "Can you show me around this temple?"

We spent two hours together—talking, walking through the temple, witnessing the evening prayers. When her mother called her for lunch, I remained in the same spot, uncertain if our encounter would continue. But then she returned, bringing five rotis with her. I realized these were the rotis meant for her own meal. She was hungry, yet she gave her food to me.

I was bewildered. I asked the temple priest, "Pandit ji, why would someone do this for me when she herself is hungry?" He replied thoughtfully, "This might be God's love."

In that moment, a profound realization struck me: "If this is God's love, then is she God, or has God sent her to me?"

A Moment of Courage and Faith

While I pondered this question, a cruel man—angry and unkind—began to curse and beat me simply because I was poor and defenseless. Without hesitation, she rushed to my aid, pulling me away from him and taking me to safety. She taught me how to be brave, how to survive in difficult circumstances. In that moment, I was certain: she was not merely a kind stranger; she was God incarnate.

I was overjoyed. I plucked flowers from the temple grounds and asked the priest for two incense sticks so I could offer them to her, just as devotees do for God. I rushed to present these humble gifts to her, but by then, her family's van was already gone. She had disappeared as mysteriously as she had appeared.

Yet I was not sad. I was filled with joy because I had finally seen God.

From Abandonment to Belonging

After that fateful day, her elder sister came and adopted me. That sister is now my beloved aunt. I remain deeply devoted to her, and whenever I visit, I still

bring flowers and incense sticks—the same offerings I once made at the temple. We often reminisce about those days, and she shares her perspective on that beautiful moment when her sister showed me what compassion truly means.

Today, as I reflect on my journey from a homeless child to someone with a family and a home, I understand that perhaps God does not always appear in temples or in the form we expect. Sometimes, God appears as a twenty-year-old girl with a kind heart, willing to sacrifice her own meal for a stranger. Sometimes, grace arrives in the most unexpected forms.

That girl taught me that divinity is not confined to prayer rooms or sacred spaces—it lives in the hearts of those who choose kindness over indifference, who offer help without expectation of reward, and who see the humanity in everyone, regardless of their circumstances.

Shahin Sheikh

B.Com. III Year



When the Chapter Closes, Memories Glow: A Final Year Reflection.



Final year is coming to an end, and it feels as though I gained admission just yesterday. This moment is both bittersweet — my heart rejoices in

celebrating a journey completed, yet realizes how swiftly time has passed. It feels as if the fear, excitement, and hope we carried on our first day are still echoing around us. Time doesn't walk; it runs. Yet the memories it leaves behind stay closer to the heart than we ever realize.

These three years feel like a complete album filled with tiny, unforgettable moments. In the first year, everything felt confusing—where to go, whom to talk to, what to do. During my first presentation, my hands trembled and my voice wavered, but slowly confidence began to grow. We bunked classes occasionally and felt guilty afterward, but the laughter in the canteen made that guilt worthwhile. Some teachers became our guiding lights, and some friends gradually became family. Fests, events, competitions—sometimes we won, sometimes we lost, but every time we learned something invaluable.

The Transformative Power of College

College has given me far more confidence than any grade sheet ever

could. I learned that every journey is peopled with individuals—some walk with us for a short time, some stay longer, and some remain as beautiful memories. Even my mistakes became my teachers. Every setback whispered one truth: real growth always stands outside the comfort zone.

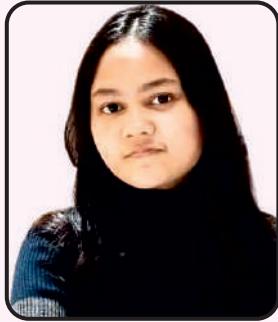
I want to express my deepest gratitude to my teachers whose patience, guidance, and support helped me become a better version of myself. My friends, who were present in every moment of stress and every burst of laughter, are the most beautiful part of this journey. Those special few who stood by me on my toughest days will always hold a cherished place in my heart. Our campus was far more than just a place—it became a home where dreams are bigger and the courage in our hearts is stronger than ever.

College may have ended, but learning continues. Whatever chapters come next will begin with the strength we gathered during this transformative journey. As we step into the world, we carry not just degrees and certificates, but the lessons learned, the friendships forged, and the confidence earned.

Perhaps the final year is ending, but memories—they are just beginning to glow.

Khushboo Sahu
B.Com., III Year

Turn Your Skills Into Income: Why College is the Best Time to Start.



In today's fast-moving world, many young people are no longer waiting until after graduation to build their financial futures. Whether you're exploring business

ideas or seeking ways to earn alongside your studies, starting a side income while in college is both practical and empowering. It teaches you valuable skills that no classroom can offer and provides real-world experience that shapes your professional journey.

Why Side Income Matters for Students

A side income offers multiple advantages beyond just extra money. It provides financial independence, reducing reliance on parents or loans while managing everyday expenses. More importantly, it builds confidence and teaches you to balance responsibilities, manage time, and develop entrepreneurial thinking. Students who engage in side ventures gain practical knowledge in business operations, customer relations, and problem-solving—skills that employers highly value.

Practical Ways to Earn

There are countless ways to generate income while studying. Starting a small business—whether selling handmade products like crochet items, running a food stall, offering digital services such as

graphic design or content writing, or reselling trending products online—allows you to turn your skills and interests into money. The key is consistency and smart planning. With minimal investment and dedication, these ventures can grow into reliable income sources that support your education.

The Reality Check

In India, many graduates face challenges entering the job market immediately after completing their degree. The employment landscape is competitive, with most employers seeking experienced candidates. Rather than waiting 2-3 years after graduation to gain experience, starting early as a student gives you a significant advantage. When you walk into an interview, you won't just have a degree—you'll have real entrepreneurial experience and a proven track record of managing a venture.

The Bottom Line

Don't wait for the "perfect time" to start. Use your college years to experiment, learn, and build practical experience in fields that interest you. Whether your side venture becomes your full-time career or simply funds your education, the skills and confidence you gain are invaluable investments in your future. Start small, stay consistent, and remember: experience earned while pursuing education is far more valuable than years of waiting after graduation.

Ratan Tata: An Inspiration for the Youth



Ratan Naval Tata (28 December 1937 – 9 October 2024) was an Indian industrialist and philanthropist. He served as the chairman of the Tata Group and Tata Sons from 1991 to 2012 and held the position of interim chairman from October 2016 to February 2017.

Honors and Legacy

In 2000, he received the Padma Bhushan, the third-highest civilian honor in India, followed by the Padma Vibhushan, the country's second-highest civilian honor, in 2008.

His humility, curiosity, empathy, and unwavering integrity serve as inspiration for aspiring leaders and individuals alike. He was a great visionary and generous contributor who dedicated his life to helping others.

Words of Wisdom from Ratan Tata

"If you want to walk fast, walk alone. But if you want to walk far, walk together."

The Paradox of Life

How strange it is that:

- We wish to earn high brands, but feel most comfortable in pajamas
- We wish to sit in a Taj and mingle with

elite people, but enjoy roadside tea with friends

- We wish to own big cars and go on long drives, yet talk our hearts out only while walking
- We have 64GB iPods filled with songs, but sometimes a song on the radio brings a smile that can't be compared

Top 10 Lessons from Ratan Tata

1. Be a visionary
2. Be humble
3. Never give up on values
4. Take risks
5. Motivate others
6. Have faith in yourself
7. Be open to criticism
8. Use creativity
9. Get out of your comfort zone
10. Don't put all your eggs in one basket

Powerful Quote by Ratan Tata:

"None can destroy iron,

but its own rust can!"

Likewise,

no one can destroy a person,

but its own mindset can!"

-Priya Singh

B.Com. III Semester



Muktangan: A Symbol of Chhattisgarh's Culture and Heritage



Muktangan, located in Naya Raipur, Chhattisgarh, is a beautiful open-air museum celebrating the state's rich cultural heritage, traditions, and tribal lifestyle. It was inaugurated by former President of India, Dr. A.P.J. Abdul Kalam, in 2006.

The word "Muktangan" means "Open Space," and true to its name, it offers visitors a glimpse into the colourful and diverse world of Chhattisgarh art, craft, and folk culture.

Museum Features and Cultural Significance

Spread over a vast area, Muktangan features life-size models, sculptures, and exhibits showcasing the daily lives, houses, tools, and traditions of the state's various tribes. Each section reflects the unique lifestyle and artistic expressions of the people, including their dance forms, musical instruments, and attire.

The beautiful greenery and peaceful environment make it a perfect destination for tourists, students, and

researchers interested in learning about Chhattisgarh's cultural roots.

Traditional houses made of bamboo, mud, and clay depict the sustainable living practices of tribal communities. Artistic murals, stone carvings, and statues enrich the surroundings and bring the stories of rural life to life.

A Cultural and Educational Center

Muktangan is not just a tourist attraction—it is an educational and cultural center. It preserves traditional knowledge and passes it on to future generations. The place hosts cultural programs, workshops, and exhibitions that keep the spirit of local art alive.

Muktangan stands as a proud symbol of Chhattisgarh's identity. It reminds visitors of the state's deep connection with its land, people, and traditions, making it a must-visit destination for anyone who wishes to experience the real essence of Chhattisgarh.

-Priyanka Sahu
B.Com. III Semester

Bring Back



Bring back my
chirping sparrows,
my jumping squirrels,
whose sight each
morning
revives my sleepy
soul—
then dump all
screeching clocks.

Bring back my healthy, handsome trees,
whose crooked leaves and branches I
marvel at—
then fade away the concrete walls.

Bring back my peace and patience,
hurt by the race of lights and noise;
then paint smooth the forehead lines.

Bring back my sweet after-rain breeze,
which enlightened my cells deep
within—
then mock away the piercing, shallow
urban air.

Bring back my powerful sun
to vaporize the huge, dirty drains;
then save me from filth and disease.

Bring back my stars, spick and span,
as clear as I had counted them then
on my soft, little fingers.

Bring back my bright moonlight,
reflected from that perfect face,

now lost in the yellow haze.

Bring back my five senses,
silently and unreckoned, stolen away
into this artificial, monotonous modern
life.

I want my world to reawaken,
unconditionally,
at the feet of natural beauty.

Bhumika Sahu
B.Com. III Semester





Travel Transforms Lives



Traveling is one of the most enjoyable and enriching experiences of life. It is not only a way to relax and refresh the mind, but also a chance to explore new cultures, traditions, and lifestyles. Traveling broadens our knowledge and makes us more confident and independent.

One of the biggest benefits of traveling is learning. We encounter different people, languages, and food habits that help us understand diversity. It improves our communication skills and teaches us patience and adaptability. Traveling also reduces stress, refreshes the mind, and keeps the body active. Exploring mountains, beaches, or historical places gives us peace and happiness.

Moreover, traveling creates lifelong memories. The moments spent with family and friends during a trip become precious treasures. It also inspires creativity as we witness nature's beauty and human creations closely.

Personal Growth and Social Connection

Traveling is not just about moving from one place to another; it is a journey

that teaches us life lessons. When we step out of our comfort zone and visit unknown destinations, we begin to understand the true meaning of life. The world is bigger than our immediate surroundings, and every place has its own story to tell.

An important benefit of traveling is the improvement of social skills. While traveling, we often interact with strangers, ask for directions, or share experiences with people from different backgrounds. This enhances our confidence, makes us more open-minded, and helps us respect differences. Such interactions often turn into beautiful friendships that last a lifetime.

Traveling is also education beyond books—a living classroom where history, geography, and culture come alive. Visiting monuments tells us about our past, mountains and rivers explain nature's wonders, and local traditions reveal human creativity. Students especially benefit from such experiences, gaining practical knowledge that textbooks alone cannot provide.

Health, Resilience, and Personal Development

Traveling has significant career



and professional benefits. Exposure to global cultures sharpens problem-solving abilities and critical thinking. People who travel frequently develop leadership qualities, adaptability, and teamwork skills—all highly valued in professional life.

In terms of personal growth, traveling teaches us responsibility. Managing time, money, and resources while on a trip makes us more disciplined. It also builds resilience; when plans don't go smoothly, learning to adjust to unexpected changes is an essential life skill that traveling provides the best platform for.

From a health perspective, traveling is like natural therapy. Exploring mountains or forests brings us closer to fresh air and greenery, which benefit both mental and physical health. Even a short trip can reduce stress levels, improve mood, and increase happiness. Science has proven that people who travel frequently are often healthier and live

longer lives.

Another beautiful aspect of traveling is the creation of memories and stories. Photographs, souvenirs, and experiences become treasures of joy. Years later, when we recall those moments, they bring smiles and satisfaction. These memories strengthen bonds with family and friends, making relationships more meaningful.

Lastly, traveling makes us more grateful and humble. When we see how people live in different parts of the world, we learn to appreciate what we have and feel thankful for our blessings. It widens our perspective and makes us better human beings.

In conclusion, traveling is not just a vacation—it is a transformative experience that teaches us, challenges us, and helps us grow into wiser, kinder, and more fulfilled individuals.

Soniya Hashmi
B.Com. III Semester

The Silent Struggle of Our Generation



"Back in our days, we didn't have smartphones, yet we studied harder, respected elders more, and we didn't complain so much."

We have all heard these lines —sometimes from love, sometimes from comparison. And every time, we smile silently, because how do we explain that our world isn't the same as theirs anymore?

A Different World

Our parents grew up in a time where stability was success. A good job, a small house, a peaceful life—that was enough. But we live in a world that never stops running. A single pause feels like failure.

We compete not just in classrooms, but everywhere—in lifestyle, even in how happy we look online.

They had time to dream. We have deadlines.

The Modern Burden

Their world was slower, smaller, quieter. Ours is loud—filled with notifications, judgments, expectations, and invisible pressure to "be something big" before even understanding who we are.

We are not weak—just worried

differently. We carry both opportunity and overload. We have infinite choices, but no clear direction. We can reach anyone in seconds, but sometimes can't even reach ourselves.

A Different Kind of Struggle

Our parents worked hard for survival. We are working hard for meaning. When we question traditions, it's not rebellion—it's seeking balance. We are simply trying to breathe in a world that never stops demanding.

The struggle of our generation is not laziness—it's existential. It's trying to stay human in a system that treats us like a machine.

A Request for Understanding

So, to everyone, please understand: we are not ungraceful, just over-pressured. You built the road; we are working on it. But the traffic has changed. All we ask is a little patience, a little trust, and a little belief that we are doing our best, even if our best is different from yours.

Because at the end of the day, we are not from two different worlds—just two different times trying to understand each other in one shared home.

Palak Dwivedi

B.Com. I Semester

India's Remarkable Space Achievement



In 2025, India witnessed a historic moment when Group Captain Sudhanshu Shukla, an officer of the Indian Air Force, travelled to the International Space Station (ISS) as part of the Axiom-4 mission. After Rakesh Sharma in 1984, he became the next Indian to step into space, marking a proud milestone for the nation.

A Powerful Example of Excellence

Sudhanshu Shukla's journey exemplifies discipline, courage, and dedication. Trained as a fighter pilot and later selected for advanced astronaut training, he proved that with hard work and focus, even the sky is not the limit.

During his mission, he conducted several scientific experiments and represented India with confidence and excellence.

An Inspiring Message for the Future

What makes him truly inspiring is not just his achievement, but the message he brings to every young Indian: dream bold, work hard, and believe in your abilities.

His success represents India's future in human space missions and has ignited hope for students who dream of space science, aviation, and research.

Sudhanshu Shukla stands today as a symbol of India's talent and rising power in space exploration.

Palak Dwivedi

B.Com. I Semester



Digital Silence: Reclaiming Your Mind in a Noisy World



In today's world, we are surrounded by constant digital noise—notifications, messages, reels, updates, and endless scrolling. Our minds are rarely truly quiet.

We move from one screen to another without realizing how much mental energy we are losing. In this fast, hyper-connected life, digital silence has become a forgotten skill, yet it is one of the most powerful tools to protect our focus, emotions, and well-being.

Digital silence does not mean rejecting technology. It simply means giving our minds short breaks from screens so they can breathe, rest, and reset. Just like our bodies need sleep, our brains need moments of silence to stay healthy. When we step away from our devices, even for a few minutes, we notice our thoughts more clearly, feel calmer, and regain control over our emotions. This stillness is where creativity grows and clarity develops.

The Impact on Focus and Well-Being

For students, digital silence is especially important. Continuous scrolling reduces attention span, increases stress, and makes it difficult to concentrate on studies. A short 10-minute break without screens can improve memory and enhance productivity. By stepping away from digital noise, we automatically reconnect

with ourselves.

Teachers can also introduce small digital silence routines in classrooms—like one minute of deep breathing before class, five minutes of silent reading, or a short reflection break after completing a lesson. Even these tiny pauses refresh the mind and create a positive learning environment. Students become more attentive, more thoughtful, and more present.

Building Healthier Habits Together

At home, families can practice digital silence together by keeping phones away during meals, creating tech-free corners, or spending evenings talking instead of scrolling. These simple habits strengthen relationships and reduce emotional fatigue caused by constant online engagement.

Digital silence also teaches an important life skill: self-control. When we choose silence over distraction, we choose growth over chaos. We learn to prioritize what truly matters instead of reacting to every notification.

In a world that is getting louder every day, digital silence helps us hear our own minds. It gives us space to think, create, understand, and live with more intention. By embracing this forgotten skill, we can build calmer classrooms, healthier minds, and a more balanced life.

Bhavika Dewangan
B.Com. I Semester

Perfect is Not So Perfect



"Don't compare your behind-the-scenes with someone else's highlight story."

The Filtered World of Social Media

In the world of social media, everyone seems so much happier, excited, and living a perfect life. While showing happiness is not wrong, it has a great impact on others, especially the younger generation.

By scrolling through social media or the filtered world, we become upset and unfaithful to our real and authentic lives.

The Trend of a "Happening Life"

Due to upcoming trends on social media, a "happening life" has become aspirational. In the filtered world, everyone has a lively life—traveling to new places, exploring new experiences, winning prizes, getting promoted, hitting the gym, and more.

Due to increasing peer pressure and trends, everyone wants that life. Having a happening life is not bad, but we should understand that everything comes at a cost. Nobody shows the actual reality or the behind-the-scenes of the life they display on social media. These lifestyles are not practically or financially possible for everyone.

The Unrealistic Reality

Social media always sets an illusion where everything seems perfect. It sets an unrealistic standard of life. Due to all these, people compare their own lives with someone's highlighted version.

The effect is that young people feel their life should always be happy, full of achievements, and they should always look powerful. Nowadays, everybody wants their life and photos to be instantly perfect, ignoring the joy of experiencing the present.

In this real world, a day without a great story feels stressful. Our lives revolve around making it "social media valid"—chasing likes and followers.

Living in Reality

In today's fast-moving world, social media is an important part of life. It's not harmful if we use it wisely. It is a great tool to connect people worldwide, but overuse disconnects us from the real world.

Hence, we should connect with reality and understand that life can't always be perfect and happening. If we have a good day, we can have a bad day too.

We should stop comparing our authentic life to someone's filtered and highlighted version. Remember: the real life doesn't always match the perfect image online.

Disha Singh

B.C.A. III

The Power of Self-Learning in the Internet Era



Introduction Today's world is changing faster than ever, and technology is the biggest reason. In this digital age, one skill that stands out as the most powerful is self-learning.

learning. The internet has transformed the way students can acquire knowledge, making learning flexible, affordable, and available anytime, anywhere.

The Shift from Traditional to Digital Learning

Earlier, learning depended mainly on classrooms, teachers, and textbooks. Now, with online resources, video lectures, tutorials, and e-books, students can learn at their own pace.

This shift has created a new culture where education is no longer limited to four walls.

Why Self-Learning Matters Today

Self-learning builds confidence, independence, and problem-solving skills. Whether it's coding, graphic design, languages, or cybersecurity, anyone can start learning with just a smartphone and an internet connection.

It encourages curiosity and helps students keep up with rapidly evolving technology.

Benefits of Self-Learning

Promotes inclusivity.

- Flexibility — learn anytime and anywhere
- Cost — effective — access to free resources and courses
- Skill enhancement—learn what is trending in the job market
- Personal growth—improve discipline and decision-making

Popular Learning Platforms

YouTube, Coursera, NPTEL, Udemy, and various educational apps provide high-quality content for every type of learner. These platforms help students upgrade their skills without depending on physical classrooms.

Overcoming Challenges

Self-learning requires discipline. Distractions from social media, lack of routine, and information overload can confuse learners. Setting small goals, maintaining a study plan, and choosing reliable sources can make learning smooth and effective.

Self-learning is not just a skill—it's a necessity in the modern world. For students, especially in the technology field, the ability to learn independently opens doors to endless opportunities. In the internet era, knowledge is just a click away, and those who take the initiative to learn on their own become the leaders of tomorrow.

Tukeshwari Dewangan

B.C.A. III Semester



Internet of Things (IoT): What You Need to Know



The Internet of Things is a system made up of physical devices connected by the internet and capable of accumulating and sharing data across a network. While the platforms used to develop IoT devices can differ, they all share common core components in their architecture.

Challenges and Common Examples

Data security is a major concern because connected devices can be hacked. Privacy issues are equally important to address.

Anytime

Common IoT examples include:

- Smart watches and fitness bands
- Smart bulbs and smart AC
- Home CCTV connected to mobile
- Smart irrigation systems
- Smart traffic signals
- GPS-connected vehicles

Growth and Market Expansion

In 2015, small and mid-size companies did not prioritize IoT technology. Today, many rely on these devices for day-to-day operations.

Seven million devices were connecting to the internet in 2018, with that number expected to reach 10 to 14 billion by 2020. Researchers estimate

that the average person will have at least four connected devices by 2021. The IoT market is expected to exceed 1.5 trillion by 2025.

Applications of IoT

Healthcare: Remote patient monitoring, smart wearables, emergency alerts

Agriculture: Soil monitoring, seasonal checks, automated irrigation, crop health checks

Smart Homes: Automated voice control devices, home security

Transportation: Traffic control, vehicle tracking, smart parking

Industry: Predictive maintenance, production monitoring, safety alerts

The History of the Internet

The origins of the internet go back to ARPANET in the late 1960s. By 1970, there were five permanent nodes on ARPANET at several of the largest U.S. universities. Researchers realized they needed to build a protocol that could recover from transmission errors. In 1974, Vint Cerf introduced TCP/IP, but it took a decade before it was widely adopted. Since then, the network has continued to grow exponentially.

Diksha Soni

B.C.A. III Semester

AI and Computers: The Future in Our Hands



"Everyone talks about it, but only a few truly understand it."

The Language of Progress

In today's world, computers and artificial intelligence (AI) are not just machines or tools—they are the new language of progress. Whether a person is a school student, college learner, teacher, parent, businessman, farmer, or office worker, technology now touches every aspect of life. We don't just use technology anymore; we grow through it.

Computers make our work smarter and faster. But AI takes one step further by helping us think, decide, create, and learn in new ways. This is why learning computers and AI is not only for B.C.A. students—it is equally important for B.Sc., B.Com. B.B.A., B.A., nursing, diploma, and school students from class 1 to 12.

Practical Applications

- A simple computer skill can change someone's confidence, creativity, and

career

- With AI, students can learn anything: math, coding, drawing, presentations, essays, and communication skills
- AI becomes a smart tutor that explains every doubt with patience
- For commerce students, AI helps with accounting and marketing
- For science students, AI helps with research and experiments
- For arts students, AI opens creativity through design, writing, and content creation

Real-World Impact

Every job in the future will require some level of digital understanding. AI is now a life skill like reading and writing.

Doctors use AI to detect diseases early. Farmers use AI to understand weather and crops. Shopkeepers use AI-based billing systems. Banks use AI for fraud detection. Creators use AI to design music, art, or videos. Even drivers use AI-powered maps for navigation.

T. Mahishma

B.C.A. III Semester

Canvas of Emotions



College is often described as a chapter of lessons, memories, and growth. But what truly colors this journey is the presence of music and art. They are not just hobbies or activities; they are a form of expression and a way of living.

Music is like sunlight for the soul. It has the power to lift our spirits even on the dullest days. A single song can remind us of people we met, moments we lived, and versions of ourselves we left behind. From humming a tune while walking to class to jamming with friends, music becomes the background soundtrack of our college story.

Art is equally magical. It is the brushstroke of imagination. It may appear on a canvas, in photography, through dance, or in writing. Art allows us to freeze moments, capture feelings, and translate our inner world into something others can see. It gives us courage to be original, to think

differently, and to believe that creativity is a superpower.

The Transformative Power of Expression

When music and art come together, they transform college spaces into worlds full of emotion. Cultural festivals, stage performances, and art exhibitions are the moments that stay with us long after college ends.

In a world that constantly pushes us to "be productive," music and art remind us to feel, to pause, and to breathe. They teach us that success is not only about marks or medals but also about expressing ourselves, enjoying life, and embracing creativity.

So, celebrate the artist in you. Whether you sing, paint, write, dance, photograph, or simply appreciate beauty, know that someday when you look back, you will realize that music and art were the colors that made your college memories unforgettable.

Namrata Manikpuri
B.C.A. III Semester

Gratitude: The Art of Seeing the Good



If you want to change your life, start by counting your blessings, not your problems. In a world that constantly tells us we need more, gratitude reminds us

that we already have plenty. Many people chase happiness, only to discover that it is hidden in gratitude itself. Life does not always give us what we want, but it often gives us exactly what we need. Let a story guide us to a deeper understanding of what gratitude truly is.

Why Gratitude Matters

There was once a king and his servant named Khalid. They were very close friends. Khalid was known for always being thankful to God, no matter what happened—good or bad. He would always say, "Alhamdulillah," which means "Praise be to God." The king liked this about him.

One day, the king and Khalid went hunting in the forest. The king shot a deer, but while trying to take the arrow out, he accidentally cut off the tip of his little finger. Khalid immediately said, "Alhamdulillah!" This time, the king

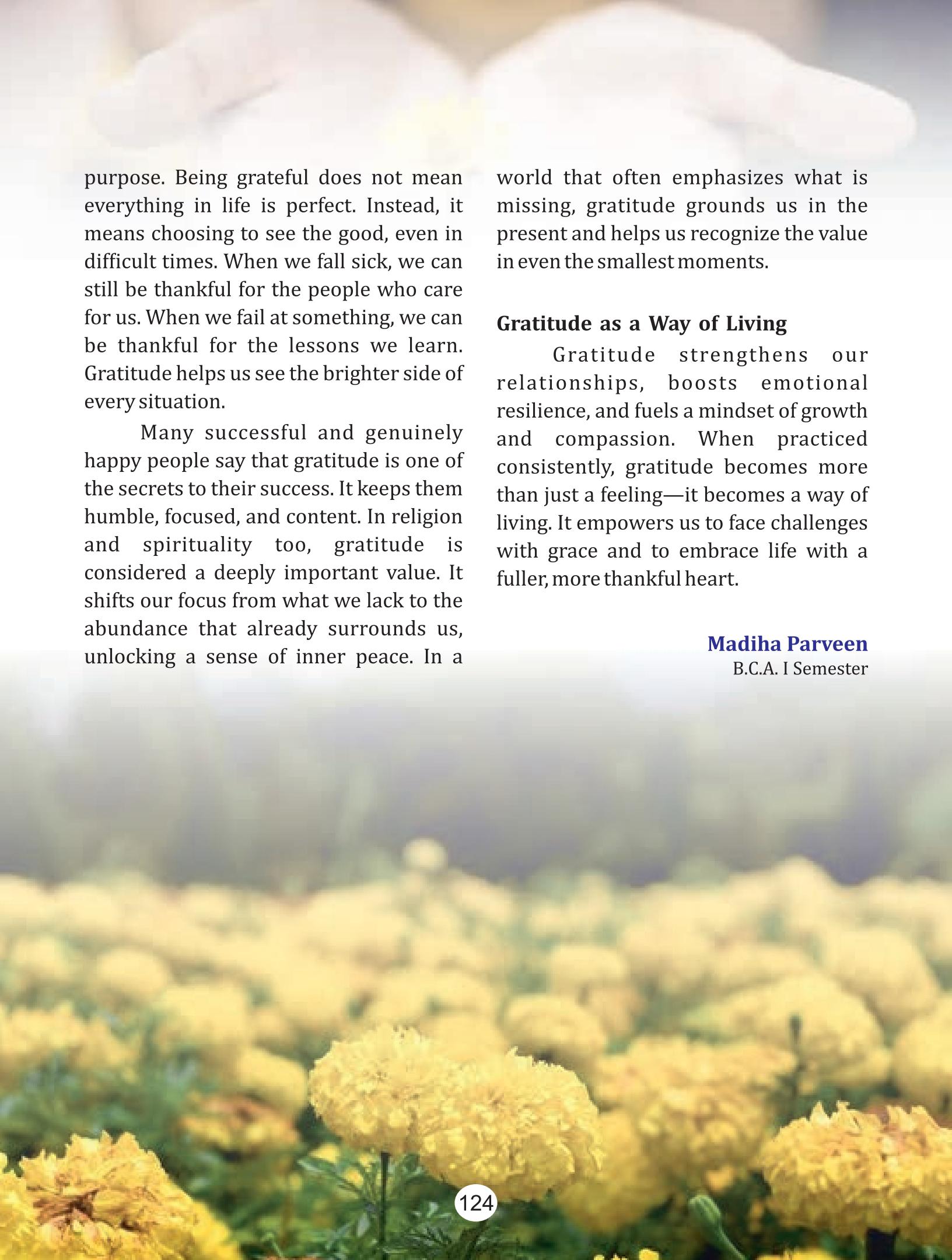
became very angry. He could not understand why Khalid was thankful when something bad had happened. In his anger, he ordered Khalid to be put in prison. Even then, Khalid said, "Alhamdulillah!"

A few days later, the king went hunting alone. In the forest, he was caught by a tribe of wild people who were planning to sacrifice and eat him. When they saw that his finger was cut, they believed he was not perfect and could not be offered to their gods, so they let him go. The king was shocked but overjoyed to be alive.

He returned to the city and immediately ordered Khalid to be released from prison. He told Khalid everything that had happened. Khalid smiled and kept saying, "Alhamdulillah! Alhamdulillah!" The king asked, "Why are you saying that now?" Khalid replied, "Because if you had not put me in jail, I would have gone hunting with you—and they would have eaten me instead!"

Finding Good in Difficult Times

This story reminds us that sometimes bad things happen for a good reason. We may not understand it right away, but everything happens for a



purpose. Being grateful does not mean everything in life is perfect. Instead, it means choosing to see the good, even in difficult times. When we fall sick, we can still be thankful for the people who care for us. When we fail at something, we can be thankful for the lessons we learn. Gratitude helps us see the brighter side of every situation.

Many successful and genuinely happy people say that gratitude is one of the secrets to their success. It keeps them humble, focused, and content. In religion and spirituality too, gratitude is considered a deeply important value. It shifts our focus from what we lack to the abundance that already surrounds us, unlocking a sense of inner peace. In a

world that often emphasizes what is missing, gratitude grounds us in the present and helps us recognize the value in even the smallest moments.

Gratitude as a Way of Living

Gratitude strengthens our relationships, boosts emotional resilience, and fuels a mindset of growth and compassion. When practiced consistently, gratitude becomes more than just a feeling—it becomes a way of living. It empowers us to face challenges with grace and to embrace life with a fuller, more thankful heart.

Madiha Parveen
B.C.A. I Semester

Tips for a Happy Life and Effective Exam Success



Words of Wisdom

- Don't compare yourself with anyone in this world. If you compare, you insult yourself.
- No one manufactures a lock without a key. Similarly, the universe won't give a problem without a solution.
- Every successful person has a painful story. Every painful story has a successful ending. Accept the pain and get ready for success.
- No one can go back and change a bad beginning, but anyone can start now and create a successful ending.

The Philosophy of Problems

- If a problem can be solved, there is no need to worry about it. If a problem cannot be solved, what is the use of worrying?
- If you miss an opportunity, don't fill your eyes with tears. It will hide another better opportunity in front of you.
- "Changing the face" can change nothing, but "facing the change" can change everything.

- Mistakes are painful when they happen, but years later, a collection of mistakes is called experience, which leads to success.

Effective Ways for Exam Success

Set Your Goal: Read the course overview to understand what the course will cover and how it will be structured.

Manage Your Time: Time management skills help you control your study workload. Achieve more and stress less.

Develop a Study Plan: Plan a study schedule that allows you to gain control of your academic workload.

Attend Class Regularly: Attend classes regularly. The interaction will help you remember more, even if you sit passively in class.

Study with Concentration: Study with full concentration. One hour of concentrated study is worth several hours of distracted study.

Practice for Perfection: Practice is the key to achieving perfection in any field and requires constant effort.

Nisha Yadav

B.Sc. III Semester (Bio)

Women Empowerment: The Voice of Change



In every corner of the world, women have been the backbone of society, nurturing families, driving communities,

and contributing to progress in countless ways. Yet for too long, their voices were silenced and their potential left untapped.

Today, the movement for women empowerment stands as a beacon of equality and transformation.

Understanding Empowerment

Empowerment is not just about giving women freedom; it is about acknowledging their strength, intelligence, and rights. It means ensuring equal opportunities in education, employment, politics, and decision-making.

When women are empowered, they become agents of change, shaping a society that is just, compassionate, and progressive.

Inspiring Examples and Role Models

From Malala Yousafzai fighting for

girls' education to Kalpana Chawla breaking barriers in space exploration, women continue to prove that empowerment is not a privilege, but a necessity. Countless others inspire change silently every day.

The Role of Educational Institutions

Colleges and universities play a crucial role in this transformation by encouraging young women to lead, speak up, and dream. Educational institutions nurture a generation that challenges stereotypes and builds equality from the ground up.

Conclusion

The empowerment of women lies not just in words, but in actions. When women help another rise, when society values her choices, and when her achievements are celebrated equally, that is true empowerment. A society that empowers its women is a society that empowers humanity itself.

Princy Thakur

B.Sc. III Semester (Bio)

Acceptance: The Day Everything Changed



Asha had always believed that life should go exactly as she planned. She made lists, set timelines, and tried to control every detail. But life, as always, had its own ideas.

One morning, everything went wrong at once—an important project failed, a close friend stopped responding, and the plans she had built for months collapsed in a single week. She felt as if the ground beneath her had disappeared. Asha kept asking the same question, over and over: "Why is this happening to me?"

Days passed in worry, over-thinking, and resistance. Nothing improved, and the more she fought reality, the heavier it felt.

One evening, sitting alone on the terrace, she noticed an old tree nearby. Half of its branches had broken in a storm months ago. Yet the tree stood calmly, growing new leaves, still reaching for the sky. It hadn't fought the storm; it had simply accepted what happened and continued living.

For the first time, Asha understood something quietly powerful: Life doesn't

always wait for our permission to change. But we can choose how we respond.

She took a deep breath and whispered to herself, "This is happening. Now what can I do next?" That small shift changed everything.

Instead of forcing damaged plans to work, she let them go. Instead of blaming herself, she understood her feelings. Instead of trying to control people, she accepted their choices. Bit by bit, her mind became lighter. She could think again; she could breathe again.

Asha didn't give up; she simply stopped fighting battles that brought only exhaustion. She began focusing on what she could actually change: her actions, her attitude, her next step.

Over time, acceptance became her quiet strength. Problems didn't disappear, but her relationship with them changed.

She learned that peace isn't found by controlling life—it's found by accepting it, then moving forward with clarity.

And just like the tree after the storm, she grew again.

Prashika Lakkewar
B.Sc III Semester (Bio)

The Pause Generation



In today's world, we live in fast-forward—assignments, internships, side hustles, social media. Everything demands our attention now. We scroll, post, plan, and panic all at once. It feels like if we stop for even a second, we'll fall behind. But have you ever wondered what happens if we just... pause?

Our generation is ambitious, no doubt. We chase goals with passion, multitask like pros, and dream big. But somewhere in this race, we forgot the art of slowing down—of enjoying a sunset without feeling guilty, having a conversation without checking our phones or simply being present.

Pauses Make Us Human

The truth is, pauses don't make us lazy; they make us human. That quiet walk around campus, that cup of chai with friends, that 5-minute break before a test—these are not wasted moments. They are refueling stops. Life isn't meant to be lived in a rush; it's meant to be felt, one heartbeat at a time.

So to every student juggling a million things: take a breath, step back. Celebrate small wins. Talk to people beyond screens. Dance for no reason. Laugh too loud. Because someday, when we look back, it won't be the deadlines we'll remember—it will be the moments we paused and truly lived.

Rudrakshree Markam
B.Sc. III Semester (Bio)

Chasing Dreams: Overcoming Doubt



Every person has a dream — something they wish to do, become, or create. But in today's world, it's not always easy to follow our dreams.

People often question our choices, compare us with others, or make us feel our goals are "too big." Sometimes, we even start doubting ourselves. Yet, it's important to remember that no dream is too small or impossible if we truly believe in it.

Dreams Give Life Meaning

Dreams give life meaning. They push us to grow, learn, and become better versions of ourselves. The path may not be smooth—there will be failures, rejections, and moments when we feel

lost. But every success story has a chapter of struggle behind it. Great achievers didn't have an easy road; they simply refused to give up when times get hard.

Ignore the Doubters, Follow Your Heart

As students, we often face pressure from studies, society, and our own fears. But college is also the best time to discover who we are and what we truly want. Whether your dream is to be an artist, scientist, or teacher, don't let others define your limits. Listen to advice, but follow your heart.

The world is full of doubters, but it's also full of dreamers who dare to prove them wrong. When you feel uncertain, remind yourself why you started. Believe in your abilities, take small steps every day, and trust the process. Success doesn't come overnight—it grows slowly through effort, patience, and faith.

In the end, it's better to try and fail than never try at all. Keep chasing your dreams, even when the world doubts you. One day, your journey will inspire someone else to start theirs.

Khushi Dewangan
B.Sc. III Semester

The Art of Knowing Yourself



In a world filled with constant noise, crowded schedules, expectations, and endless digital distractions, the idea of being alone often feels strange, even uncomfortable. But solitude is not a sign of loneliness. It is a quiet space where clarity grows, confidence strengthens, and the mind discovers its true voice.

Being alone helps us build independence—not in the physical sense, but in the mental and emotional sense. When our happiness does not rely on others' presence or approval, we gain a rare kind of strength. We begin to trust our decisions, value our opinions, and nurture confidence that grows from within. A strong mind is not one that avoids others, but one that remains steady even in silence.

The Gateway to Creativity and Emotional Strength

Solitude enhances creativity. Many of the brightest ideas arise when the mind is free from interruption. Whether through writing, drawing, thinking, or simply observing nature, quiet allows imagination to expand. When we are alone, we engage with our inner world more deeply. The mind becomes alive in

new ways.

The ability to sit with our thoughts, process emotions without escape, and stay calm in stillness builds a stronger self. Instead of depending on distraction, we learn to face our worries, understand them, and rise above them. The more comfortable we become with our own company, the less fear we carry about being left out or misunderstood.

Balance, Not Isolation

Yet solitude does not mean isolation. It is about balancing the outer world with our inner world. It is about returning to ourselves so we can return to others with clearer thoughts, calmer emotions, and a stronger sense of self.

Ultimately, the art of being alone is a journey inward. It teaches us that strength is not always loud or visible; sometimes it is found in quiet moments, steady breaths, and peaceful reflection. When we learn to embrace solitude, we gain a mind that is grounded, focussed, and beautifully resilient. With that strength, we move through life with confidence and clarity.

The art of being alone is the art of knowing yourself. The more we know ourselves, the stronger we become.

Mamta Dewangan
B.Sc. III Semester (Computer Science)

Deep Thinking in an Instant-Answer World



We live in a time where answers appear even before we finish asking the question. A single search can solve a doubt, complete an assignment, or explain a concept. Technology has made learning faster,

but in this speed, we are slowly losing a valuable human ability—deep thinking. In today's instant-answer culture, the habit of slowing down and thinking deeply is quietly fading away.

Deep thinking means understanding things beyond the surface. It is the ability to reflect, question, contextualize ideas, and form our own understanding. It builds clarity and helps us explore thoughts from different angles. But now, instead of using our minds patiently, we prefer quick solutions. Whenever we face confusion, we rush to our phones rather than exploring the idea ourselves. This habit may save time, but it weakens our ability to analyze and imagine.

Reclaiming Space for Deeper Learning

In a vision of calm classrooms, "unplugged hours" become a powerful routine. Students sit together without digital noise, focusing only on human interaction. Teachers introduce mindful activities like deep-breathing exercises, silent reading corners, or five-minute reflection time, helping students reset their thoughts. This small break improves focus, reduces frustration, and boosts emotional

balance. Classrooms slowly become welcoming spaces where every student feels mentally fresh and ready to learn.

Schools can also start digital detox challenges, where students track how much time they spend away from screens each day. Friendly competitions and weekly reflection sessions motivate them to build self-control and healthier habits. During these activities, students share their experiences—how they slept better, felt calmer, or spent more time with family. Such simple steps slowly turn into lifelong habits of balanced and mindful technology use.

Building a Supportive Circle

Parents play a role by creating tech-free zones at home, like dining tables or study corners, where conversations replace notifications. Teachers, parents, and students together form a supportive circle that encourages meaningful learning beyond screens. When this collective effort grows, discipline improves, creativity rises, and students develop stronger attention skills.

In the end, the idea of digital silence is not about rejecting technology but about controlling it wisely. It reminds us that the human mind learns best when it gets space to breathe, think, and connect. Schools adopting this practice build not just better classrooms but healthier and happier learners who grow into mindful, confident, and responsible individuals.

Sejal Dewangan
B.Sc. III Semester (Computer Science)

Slow Growth Wins in a Fast World



powerful importance. It reminds us that deep, meaningful, and long-lasting success requires time, patience, and consistent effort.

In the race for speed, we often begin to value quick outcomes more than true quality. Everyone wants to learn fast, earn fast, and rise fast. But in this rush, we sometimes ignore the strong foundation that supports any real and sustainable achievement. Slow growth means taking small steps every day in the right direction. These steps may not look impressive immediately, yet they silently build a solid base for the future.

The Strength in Steady Progress

One of the greatest strengths of slow growth is stability. When we learn slowly and steadily, our understanding becomes deeper. When we develop habits gradually, they last longer. When we progress step by step, we gain experience that helps us handle future challenges with confidence. This steady growth shapes our character, strengthens our

In today's rapidly moving world, where people expect instant success, quick results, and fast achievements, the idea of slow growth holds unique and

mind, and prepares us for bigger responsibilities.

Fast success, on the other hand, often lacks depth. It may bring quick fame or results, but it sometimes misses the maturity and resilience needed to maintain that success. That is why many people rise quickly but struggle to stay consistent. In contrast, those who grow slowly often become stronger, wiser, and more stable over time.

The Hidden Gift of Patience

Slow growth teaches patience, discipline, and consistency—qualities that are essential for long-term achievement. It helps us appreciate the journey rather than rushing only for the destination. Through this journey, we learn valuable lessons, build meaningful skills, and discover our true potential.

In the end, slow growth is not a sign of weakness; it is a powerful strategy. In a world obsessed with speed, slow and steady progress becomes a form of strength. It allows us to grow with purpose, depth, and stability.

So if your progress feels slow, do not worry. Slow growth is still growth, and that growth lasts the longest and matters the most.

Mansi Shau
B.Sc. III Semester
(Computer Science)

Kindness: The Superpower Within Us



In a world that often moves too fast, kindness walks quietly—yet it has the power to shake and change lives. Kindness is not loud, not demanding, not something that needs to be shown off. It is a gentle spark that can brighten even the darkest moment, and sometimes that tiny spark is enough to light up someone's entire world.

One small act—a smile, a helping hand, a soft "Are you okay?"—may seem ordinary to us, but for someone else, it might be the reason they find courage to handle one more day. We never truly know what silent battles people around us are fighting. But when we choose kindness, we become a soothing voice in a noisy world, a glimmer of hope for someone who feels lost, a reminder that good still exists.

The Ripple Effect of Kindness

Kindness spreads. Like a single drop creating ripples in water, one act of goodness touches many lives—far beyond what we can see. A kind gesture inspires another, and then another, until

that one small choice begins to shape entire communities. This is how big change begins: not with grand speeches, but with soft hearts.

The most beautiful thing about kindness is that it strengthens both hearts—the one who receives it and the one who gives it. It teaches us empathy, fills us with peace, and connects us to humanity in the purest way. It reminds us that real strength does not come from power or perfection, but from compassion.

Becoming the Change

If we want a better world, we don't need capes or superhuman abilities. We just need kinder thoughts, gentler words, and warmer actions. Because kindness is not just a superpower—it is a bridge that brings people closer, a medicine that heals unseen wounds, and a light that guides us when life becomes dark.

Let us choose kindness every day. Let us become the reason someone believes in goodness again. Let us remember: even the smallest act can change someone's big world.

Supriya Kashyap
B.Sc. III Semester (Computer Science)

Understanding Your Real Worth



In our education system, marks often become the centre of every student's life. Report cards, percentages, and rankings start to define how "capable" or "successful" a student feels. But the truth is simple and powerful: marks may measure performance, but self-worth measures the person. In the long journey of life, who you are matters far more than what you score in one exam.

What Self-Worth Really Means

Self-worth means understanding your own value—your talents, your kindness, your efforts, your creativity, your honesty, and your potential. It is the confidence that even if you fail today, you can rise again tomorrow. When students believe in their own worth, they become stronger, happier, and more fearless. They take challenges as opportunities, not threats.

Marks are limited. They tell you how well you performed on a particular day, in a particular subject, under particular conditions. A mistake, stress, illness, or even fear can reduce marks, but that does not reduce your inner ability. Many brilliant minds in history performed poorly in school, yet changed

the world because they believed in themselves. It was their self-worth—not their report card—that guided them to success.

Building a Stronger Identity

When students tie their identity to marks, they develop anxiety, pressure, and fear of failure. But when they tie their identity to their value and strengths, they develop confidence, resilience, and emotional balance. Self-worth encourages students to take risks, learn new skills, and grow without the fear of judgment.

Teachers and parents play an important role here. When they appreciate a child's effort, creativity, discipline, or improvement, the child learns that success is more than numbers. A supportive environment helps students feel respected and understood, which builds self-worth naturally.

In the end, marks are just a chapter, but self-worth is the whole story. When you believe you are valuable, capable, and enough, you grow into the best version of yourself—something far greater than any score can ever capture.

Nilima Dewangan

B.Sc. III Semester
(Computer Science)

Dance Therapy



Dance is often referred to as the most complete of all the arts. This is because dance can utilize intelligence, spirituality, discovery, and spontaneity while the body pursues art.

It is an amazing feeling to experience movement and spontaneity being created within one's body. It is awe-inspiring and fulfilling. Dance is an art form performed through the movement of the body—head, neck, eyes—to move the soul of the audience.

It is one of the art forms that involves both the physical and mental being of a human equally.

Dance in Indian Culture

In the Indian context, dance is considered divine. According to Bharata's Natya Shastra, dance is treated as the fifth Veda, a gift from Lord Brahma. Most dance performances are in praise of God.

A dancer, through deep involvement, attains a pinnacle point of divinity, which makes us feel the presence of that internal being.

Dance as Physical Exercise

On the other hand, dance is a physical exercise that makes a dancer fit, just as regular exercise does. Classical dance in India has been designed to make dancers energetic and healthy.

Practicing dance every day is more beneficial than regular physical exercise. The 108 karanas sculpted on the walls of Chidambaram are a perfect example of the greatness of Indian classical dance.

The Joy of Dance

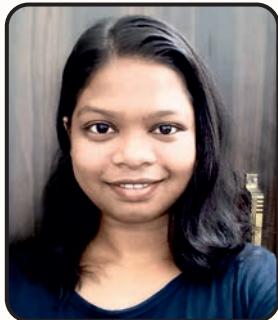
We dance for laughter. We dance for tears. We dance for madness. We dance for fears. We dance for hopes. We dance for screams.

We are the dancers, and we are great. The rhythm of dance helps us relax, express ourselves, communicate, and connect with others. We dance to burn calories, for fun, as a performance, to create, to expand, and to build energy. It is fitness in its truest form.

Dance your way to health—you will smile more often than you would in an aerobics class.

Chanchal Dewangan
B.Sc. I Semester (Bio)

Social Awareness: Breaking the Cycle of Addiction



Addiction is one of the most serious social problems in today's world. It affects not only the health of individuals but also their families, society, and nation. Despite the progress we have made in development and technology, the shadow of addiction is spreading fast. The most surprising and painful truth is this: "Education has not reached every corner of our society, but addiction has." Even educated people who clearly understand the harmful effects of drugs and alcohol are still falling into this trap. This irony shows that awareness, discipline, and moral strength are as important as formal education.

The Growing Crisis in Our Communities

In Chhattisgarh, the increasing number of people addicted to alcohol, tobacco, and drugs has become a serious concern. Many youth fall into addiction due to curiosity, stress, or peer pressure and later become dependent. The lack of education and awareness in rural areas makes the situation worse. Addiction cases cause health damage, financial loss,

and family conflict, disturbing the peace of society. While education hasn't reached every home, addiction has. Even educated people, aware of its dangers, are still consuming intoxicants.

Reports show that addiction is rising rapidly, especially among youth in Chhattisgarh. Easy access to drugs and weak social control worsen the issue. Although the government has started de-addiction campaigns and awareness drives, their effect remains limited. Many hesitate to seek help out of fear or shame, letting the problem grow silently.

A Collective Call to Action

De-addiction is a critical need of today's society. It is time for everyone —families, schools, and the government —to stand together against addiction. Only collective effort and awareness can save our youth and build a healthy, drug-free nation. Each person has a role to play, from understanding the dangers of addiction to supporting those struggling with it. Together, we can create a society where support, education, and compassion help people break free from the chains of addiction.

Upasana Dhruw
B.Sc. I Semester (Computer Science)

Degrees and a Successful Life



In today's rapidly evolving world, the question of whether traditional degrees are enough for a successful life is increasingly debated. While formal education provides a solid foundation of knowledge and skills, success often depends on a combination of factors beyond academic qualifications. Degrees are expensive, and many of us feel pressured to graduate in order to secure a successful career and a respectable income.

There are many paths to success, and one common route is going to college or university and earning a degree. While this is true in many cases, there are also many talented professionals who do not have degrees yet have still succeeded in their careers.

The Value of a University Degree

University is often regarded as a gateway to a successful career. It not only provides students with a higher level of education but also offers a strong foundation for the future. A degree from a reputable institution can equip individuals with academic understanding and technical skills relevant to their field. It serves as a benchmark of achievement and can open doors to early career opportunities, especially in fields like engineering, medicine, or law.

Moreover, degrees often instil discipline, time management, and the

ability to handle complex information —skills that are essential in professional settings. Beyond academic achievements, pursuing a degree encourages personal growth and development. Students acquire valuable life skills such as communication, problem-solving, and teamwork —qualities that are useful in both professional and personal life. The structured learning environment promotes self-discipline and a commitment to continuous improvement, shaping individuals into well-rounded professionals capable of adapting to diverse challenges.

Long-Term Career Stability and Growth

Earning a degree can also contribute to long-term career stability and financial security. Many studies show that individuals with higher levels of education tend to have lower unemployment rates, higher earning potential, and greater job satisfaction over their careers. Degrees provide a foundation for continuous professional development and adaptability to changing job market demands, thereby enhancing career resilience.

In conclusion, while a degree is not the only way to achieve a successful life, it remains a powerful tool that can significantly improve one's opportunities, skills, and stability. What matters most is how a person uses their education —formal or informal—to grow, adapt, and contribute meaningfully to society.

Swayam Prabha Sahu
B.Sc. I Semester (Bio)

Breaking the Silence: Why Depression Among Youth Cannot Be Ignored.



Depression is one of the most prevalent mental health issues affecting young people today. It extends far beyond momentary sadness; it is a serious emotional disorder that profoundly affects how a person thinks, feels, and behaves. Among adolescents and young adults, particularly those in their teenage years or early twenties, depression has become increasingly common due to various social, academic, and personal pressures.

Understanding the Root Causes

One of the primary catalysts for depression is the relentless pressure to succeed. In today's highly competitive environment, young people face constant stress from examinations, career decisions, and expectations from parents and educators. When they fail to meet these standards, they often internalize feelings of worthlessness and hopelessness.

Social media serves as a double-edged sword in the lives of young people. The constant comparison with peers, exposure to cyberbullying, and the pressure to maintain a perfect online

persona can severely damage self-esteem and cultivate feelings of loneliness and inadequacy. Family circumstances also play a significant role in triggering depression. Poor communication, parental conflict, and emotional neglect can leave young people feeling isolated and unloved. Additionally, traumatic experiences—such as childhood abuse or the loss of a loved one—can have lasting effects on mental health. The struggle for social acceptance is another critical factor, as rejection from friends or social groups can deeply affect a young person's sense of belonging and self-worth.

Recognizing the Signs and Seeking Support

Depression manifests through various symptoms, including persistent sadness, loss of interest in previously enjoyable activities, fatigue, changes in appetite or sleep patterns, and difficulty concentrating.

Many young people also experience feelings of emptiness, hopelessness, and in severe cases, suicidal ideation. Unfortunately, the lingering stigma surrounding mental health prevents many from seeking help. Fear of judgment and misunderstanding often keeps them silent, inadvertently worsening their

condition.

Early intervention is crucial. Parents, teachers, and friends must recognize warning signs and provide consistent emotional support. Open conversations about mental health can create safe spaces for young people to express themselves without fear of judgment. Mental health professionals—including counsellors, psychologists, and psychiatrists—offer evidence-based treatments. Therapy, medication, and lifestyle modifications such as regular exercise, balanced nutrition, and adequate sleep can significantly improve mental well-being.

Schools and colleges have a vital role to play in supporting student mental health. Implementing mental health awareness programs, providing accessible counselling services, and reducing academic stress can foster more supportive learning environments. It is imperative that institutions prioritize

student mental health alongside academic achievement.

A Call to Action

Society must recognize that mental health is equally important as physical health. Depression in young people is not a sign of weakness; it is a medical condition deserving compassion, understanding, and timely intervention.

The transition from adolescence to adulthood presents genuine challenges, and not all young people are emotionally equipped to navigate them alone. By reducing stigma, encouraging open dialogue, and ensuring access to professional support, we can create a society where no young person suffers in silence. A healthy mind is the foundation of a fulfilling life. Every young person deserves to feel valued, understood, and hopeful about their future.

Shreya Wadkar
B.Sc. (Biology), 1st Semester

From Dreams to Reality: The Power of Goal-Setting



Grow no matter what.
One step at a time.
Little by little,
your steps will add up.

Goal-setting is crucial because it provides us with clear direction and a sense of purpose. When we have goals, we know what we're working towards, and this clarity helps us channel our energy and efforts effectively. Goals give us something to strive for, something to look forward to, and something that keeps us motivated — especially during challenging times.

Identify, Plan, and Take Action

The first step in goal-setting is identifying what you truly want to achieve. This involves reflecting on your passions, interests, and dreams. It's important to set goals that matter to *you*, not ones others expect you to achieve. For example, if you love playing hockey, your goal could be to improve your skills and make the school team.

Once you've identified your goals, the next step is to create a plan. This involves breaking down your big goals into smaller, manageable tasks. By doing this, you create a step-by-step roadmap that makes your goals seem less daunting

and more achievable. For instance, if your goal is to excel in math, your plan could include studying for an hour each day, seeking help from a tutor, and practicing extra problems.

Taking action is the third and most critical step in goal-setting. A goal without action is just a dream. To achieve your goals, you need to put in the effort and work consistently towards them. This requires discipline, perseverance, and a positive attitude. Remember, progress might be slow at times, but every small step you take brings you closer to your goal.

Adapt, Learn, and Celebrate

It's also important to be flexible and adaptable. Sometimes, despite our best efforts, things don't go as planned. In such situations, it's important to reassess your goals and adjust your plans accordingly. Flexibility allows you to stay on track and continue moving forward, even when faced with obstacles.

Setting goals helps you develop important life skills such as time management, organization, and problem-solving. As you work towards your goals, you learn to prioritize tasks, manage your time effectively, and find solutions to challenges that come your way. These skills are invaluable and will benefit you

in all aspects of your life.

Don't forget to celebrate your achievements, no matter how small they may seem. Celebrating your successes boosts your confidence and motivates you to keep pushing forward. It also reminds you of the progress you've made and the hard work you've invested.

Goal-setting is a powerful tool that

helps you navigate through life with purpose and direction. It keeps you motivated, helps you grow, and brings you closer to your dreams. So start setting your goals today and work towards a brighter, more fulfilling future.

Tejasvi Chandrakar

B.Sc. I Semester (Bio)





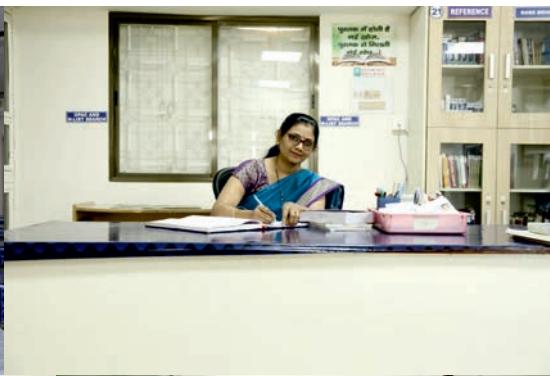
रोमीनार एवं अन्य कार्यक्रम





रायपुर | गुरु आंक रायपुर के तहत सबसे बड़ी अवसरों के द्वारा वाली रेडी पीपल, बरगद, व नीम का 108 पीपल रोपा किया गया। साथ ही छात्र द्वारा वाली 300 पीपलों का रोपण भी हुआ। पीपलों का बांधकाम में गून आर्मी चौपोरा भाटा के अध्यक्ष डॉक्टर पूष्णेन चंद्राकर ने सम्मोहित करते हुए ऐसी की महत्व





स्व. श्रीमती डॉ. अनीता सेन

पूर्व अध्यक्ष



देश के सुविख्यात तुमरी गायिका शिक्षाविद्, साहित्य की पोषक स्व. डॉ. श्रीमती अनीता सेन में बाल्यावस्था से ही संगीत के प्रति समर्पित भावना दिग्दर्शित होने लगी थी। श्रीमती सेन में अनेक ऐसे गुण विद्यमान थे जिनके कारण वे अत्यंत लोकप्रिय रही हैं।

सत्यमशिवम्-सुन्दरम् के अतिरिक्त संगीत साधना एवं पति आराधना की प्रवृत्ति से ही सुर लय ताल का एक ऐसा संगम निर्मित हुआ जहाँ संगीत की स्वर लहरियाँ उनके जीवन में प्रगति और सफलता की अनूठी मिसाल बन गईं।

एक पात्र के रूप में पुनीता, विदुषी और विभिन्न उत्कृष्ट उपमाओं से अलंकृत स्व. डॉ. श्रीमती अनीता सेन भले ही सशरीर हमारे साथ नहीं हैं, किन्तु आजीवन उसकी स्मृति हमारेमानस पटल पर अमिट रहेगी।



भातखण्डे ललितकला शिक्षा समिति द्वारा संचालित

गुरुकुल महिला महाविद्यालय

कालीबाड़ी रोड, रायपुर (छ.ग.) फोन : 0771-4053443

Email: info@gurukulraipur.com

Website : www.gmm.ac.in